प्रकाशन

श्री निर्मलकुमार नाहटा

नाहटा इलेक्ट्रॉनिक्स

26, महारानी रोड, बसल चेम्बर, दूसरी मजिल, इन्दौर (म प्र)

फोन 0731-2533074

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ

वि.सं. 2059, सन् 2002

सौजन्य

झॅवरलाल छाजेड

पुत्र एव पुत्रवधू

राजेन्द्र कुमार-शशि, विजय कुमार-सुमन, अशोक कुमार-रंजू,
मनोज कुमार-रेखा, संजय कुमार

पौत्र एव पौत्री

सौरभ, कौशल, मेघा, सुषमा, गुजन, मोनिका, जिवीसा
द्वारा सप्रेम भेंट

प्राप्ति स्थान

झॅवरलाल छाजेड

C\o महावीर स्टोर्स, ज्योति सिनेमा रोड

पोस्ट लामडिग, जिला नौगॉव (असम) 782447

फोन 03674-263762 (ऑ.), 263763 (नि)

चुन्नीलाल झॅवरलाल छाजेड

पो नई लेन, गॉधी चौक, गगाशहर

जि बीकानेर (राजस्थान)

मुद्रक

डिसेन्ट ग्राफिक्स, इन्दौर

मोबाइल 98260-14047

सुदृढ़ मनोबली- अनशनरत
साध्वी श्री लिछमांजी के प्रति

मंगल कामना

एवं

अनशन अनुमोदना परक
उद्गीत-गीत नामक

'प्रथम प्रकरण'



प्रकाशकीय

तेरापथ का इतिहास बलिदान की स्याही से लिखा इतिहास है। आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु से लेकर सभी आचार्यो ने इसके गौरव को शिखरों तक पहुँचाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है। अनेक बलिदानी साधु-साध्वियों ने अपनी साधना की आहुति से इसकी तेजस्विता को अक्षुण्ण रखा है। साध्वी लिछमा जी (गगाशहर) उसी शृखला की एक अविस्मरणीय कडी है। गगाशहर के डागा परिवार की कुलदीपिका कुमारी लक्ष्मी का बचपन कोलकाता के शहरी परिवेश में अत्यत लाड-प्यार के साथ बीता। किशोरावस्था की दहलीज पर पॉव रखते ही स्व चुन्नीलालजी छाजेड के होनहार पुत्र फतह के हाथ मे अपनी लाडली का हाथ थमा माता-पिता निश्चित हो गए।

ससुराल के धार्मिक परिवेश एव दो देवरो की दीक्षा से लक्ष्मी के मन मे भी धर्मानुराग वढने लगे। मुनिश्री के वैराग्य परिपूर्ण प्रवचन से लक्ष्मी के प्रसुप्त वैराग्य सस्कार भी जागृत हो गए। अपने जीवन साथी के साथ गहन विमर्श कर उन्हें भी सयम पथ का सच्चा साथ निभाने को वचनबद्ध कर लिया। इकलौते पुत्र झॅवर की ममता को छोड पति-पत्नी गुरुदेव श्री तुलसी के चरणो मे सयम पथ के पथिक बन गए।

तेरापथ धर्मसघ के सघन क्षेत्र राजस्थान के थली प्रदेश में गगाशहर की धरती का अपना विशिष्ट स्थान है। उस क्षेत्र के अनेक परिवारों ने अपने सुपुत्रों, सुपुत्रियो एव कुलवधुओं को महर्प सघ सेवा के लिए समर्पित किया है। गगाशहर का छाजेड परिवार इस माने में मौभाग्यशाली है कि जिसने अपने आधा दर्जन से अधिक सदस्यो को भिक्षु शासन के नाम मौपा है।

गुरुदेव श्री तुलमी ने सघ की तेजस्विता को बढ़ाने के लिए साधु बनने से पूर्व मुमुक्षु श्रेणी के रूप में मघ को एक विशेष उपक्रम पा शि सस्था के रूप में दिया। मुनि फतहचदजी एव माध्वी लिछमाजी ने इसके लिए नींव के पत्थर के रूप मे स्वय को समर्पित किया। उनके इस वलिदान के सदर्भ में शासन समुद्र भा 22 मे लिखा गया-

फतह नाम मुनि मे प्रथम विजय पताका केतु।
लक्ष्मी सतियो मे प्रथम ज्ञान सपदा हेतु॥

माध्वी लिछमाजी की जीवन गाथा का प्रकाशन करने मे मुझे अत्यत प्रसन्नता का अनुभव हो ग्हा है। कृति की प्रस्तुति मे आदरास्पद श्री झॅवरलालजी छाजेड ने जो निष्ठापूर्ण श्रम किया हे उमके लिए जितनी कृतज्ञता ज्ञापित की जाए, वह कम है। पुन सभी के प्रति हार्दिक आभार।

■ निर्मल नाहटा

तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा...


आचार्य श्री भिक्षु

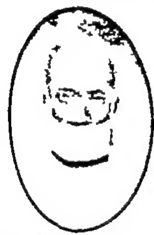

आचार्य श्री भारीमलजी

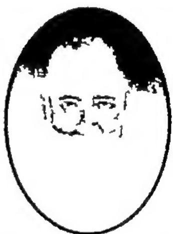

आचार्य श्री रायचन्दजी

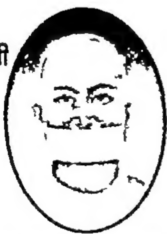

आचार्य श्री जीतमलजी


आचार्य श्री मघवाराजजी




आचार्य श्री माणकलालजी


आचार्य श्री डालचन्दजी


आचार्य श्री कालूरामजी


आचार्य श्री तुलसी


आचार्य श्री महाप्रज्ञजी


युवाचार्य श्री महाश्रमणजी


साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी

छाजेड़ परिवार के प्रभावी पुष्प...



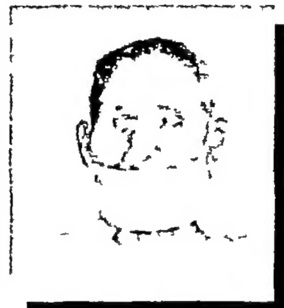
मुनि मगनमलजी "प्रमोद"
जन्म 1984 दीक्षा 1999



मुनि धर्मचदजी "पीयूष"
जन्म 1988 दीक्षा 2000



मुनि फतहचदजी "पकज"
जन्म 1980 दीक्षा 2006



मुनि मुनिव्रतजी
जन्म 1997 दीक्षा 2020



साध्वी चन्द्रावतीजी
जन्म 2006 दीक्षा 2023



साध्वी शाताकुमारीजी
जन्म 2009 दीक्षा 2025



छाजेड़ परिवार के वट वृक्ष...

स्व. श्री चुन्नीलालजी छाजेड़

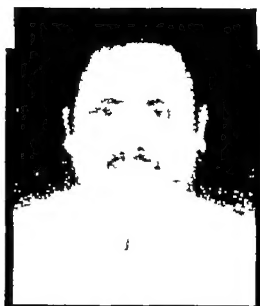


झँवरलालजी सूरजदेवी छाजेड़ परिवार की वंशावली...

... सुपुत्र ...


राजेन्द्रकुमार


विजयकुमार


अशोककुमार


मनोजकुमार


सजयकुमार

... सुपौत्र ...


सौरभकुमार


कुशलकुमार

अनुक्रम : प्रथम प्रकरण

साध्वी लिछमांजी के प्रति उद्‌गार

*आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री

विज्ञप्ति (साप्ताहिक)

वर्ष : 7, अंक · 17, बीदासर 11-17 अगस्त 2001 के अनुसार युवाचार्य ने फरमाया

दिनाक 3 अगस्त प्रात सूर्योदय के साथ ही साध्वी लिछमा जी (गगाशहर) काल धर्म को प्राप्त हो गई। उनकी तपस्या सहित अनशन का आज 19वॉ दिन था। बारह दिनों का चौविहार अनशन प्रवर्धमान परिणाम के साथ सपन्न हुआ। उनकी अतिम यात्रा लगभग सवा नौ बजे प्रारभ हुई। भाई-बहनो ने बडी सख्या मे भाग लिया।

दिनाक 4 अगस्त को साध्वी श्री लिछमा जी की स्मृति करते हुए श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने कहा- सयम की उपलब्धि जीवन की सबसे बडी उपलब्धि है। सयम के साथ समाधिपूर्ण मृत्यु का प्राप्त होना तो और भी दुर्लभ है। जयपुर के विरोधी वातावरण मे दीक्षित होने वालों में एक साध्वी लिछमा जी भी थी। लिछमा जी के स्वर्गारोहण के साथ ही अब सघ में सहदीक्षित दम्पति भी नहीं रहे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा- भिक्षुशासन मे जो भी दीक्षित होता है, एक आश्वासन के साथ होता है। दीक्षित होने वाला आजीवन निश्चित रहता है। साध्वी लिछमा जी ने पूरे वैराग्य के साथ दीक्षा ली। अच्छा सयमी जीवन जीया। उन्होंने ध्यान आदि का प्रयोग भी किया। प्रारभ से ही साध्वी इद्रूजी के पास रहीं। शरीर की स्थिति ऐसी बनी

कि स्वय सेवा लेने लगी। अच्छी सेवा हो रही थी, अकस्मात् अनशन की भावना जागी। बडी पवित्रता और दृढ़ता के साथ अनशन को पूरा किया। उनके परिवार के सात सदस्य सघ में दीक्षित हैं। मुनि मगनमलजी, धर्मचदजी, फतहचदजी, मुनिव्रतजी आदि अच्छे मनोबल से कार्य करने वाले साधु हैं। दो साध्वियाँ हैं- साध्वी शाताकुमारीजी और साध्वी चद्रावतीजी। साध्वी शाताकुमारीजी को इस वर्ष हमने अग्रणी बनाया है।

आचार्यप्रवर ने साध्वी लिछमाजी के सदर्भ में पद्य फरमाया कि

लिछमाजी लक्ष्मी बनी, अनशन किया उदार,
सप्तक भैक्षव सघ मे, बना एक परिवार।
बना एक परिवार, जीवन बहुत निखारा,
इद्रुजी के साथ रही सदा इकधारा।
अनशन की महिमा बढी, स्वप्न हुआ साकार,
लिछमा जी लक्ष्मी बनी, अनशन किया उदार।

साध्वी लिछमां जी का परिचय

*झँवरलाल छाजेड

जन्म · वि स 1982 श्रावण कृष्णा अष्टमी ता 13 7 1925

दीक्षा : (पति सहित) स 2006 कार्तिक कृष्णा अष्टमी जयपुर मे आचार्यश्री तुलसी के कर कमलो से

पिता : श्री भेरूदानजी डागा

श्वसुर . श्री चुन्नीलालजी छाजेड

माता : छगनीदेवी डागा

सास : धापूदेवी छाजेड

पति : फतहचदजी छाजेड (मुनि फतहचदजी)

विवाहित : दीक्षा के समय उम्र 24 वर्ष (अनेक प्रातों में विहार)

स 2048 में समाधि केद्र बीदासर मे

स 2049 चाडवास (1 वर्ष)

स 2050 से समाधि केद्र बीदासर में स्थिर वास

समाधि मरण स 2058 श्रावण शुक्ला चतुर्दशी, शुक्रवार प्रात t बजे ता 3 8 2001 थान-सुथान (साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी- प्रवास स्थल)

(6 दिन की तपस्या तिविहार, 12 दिन सथारा चौविहार, उन्नीसवें दिन सूर्य उदय होते ही स्वर्गवास हुआ।)

पवित्रता के बढ़ते चरण

प्रेरक प्रसग प्रेरक महाप्रयाण

पुनीतात्मा साध्वी लिछमांजी की प्रेरक आत्मकथा

*मुनि धर्मचद 'पीयूष'

मानव जीवन आर्यक्षेत्र, उत्तम कुल और पॉच इन्द्रियों के साथ चितन-मनन में सक्षम मस्तिष्क की प्राप्ति पूर्व जन्मों के शुभ कर्मों के योग से होती है। अग्रोक्त अनुकूलताओं के बावजूद वीतराग प्रभु की वाणी का श्रवण, उस पर प्रगाढ़ श्रद्धा और तदनुरूप आचरण करने की ललक किसी-किसी परम पवित्रात्मा के मन में ही परम सौभाग्य से पैदा होती है। ऐसी ही परम निर्मलात्मा- साध्वी श्री लिछमा जी गगाशहर के पवित्रता के बढ़ते चरण की है- यह सच्ची कहानी, जिनके मन में जिनवाणी का पीयूषपान करते-करते भरी-पूरी जवानी और सर्वानुकूलताओं से परिपूर्ण जिन्दगानी में वैराग्य भावना उत्पन्न हुई। साधुत्व स्वीकारने के सकल्प का सुरतरु फलवान बना, उसके अविनाशी परितृप्ति प्रदायक मीठे-मधुर फलों का आस्वाद न केवल लिछमा ने स्वय चखा, अपितु अपने प्रिय पति फतहचदजी को परितृप्ति में साथ कर लिया। सच में वही तो स्वजन- सगा है, जो मिली हुई अलौकिक निधि में अपने जीवन साथी को भागीदार बना ले।

जन्म, विवाह और सतानोत्पत्ति . साध्वी श्री लिछमाजी का जन्म विक्रम सवत् 1982 श्रावण कृष्णा अष्टमी को गगाशहर (बीकानेर) में हुआ। पिता थे- भेरूदानजी डागा और माता का नाम था-छगनीदेवी। माता-पिता दोनों सरलात्मा धर्मात्मा थे। एक भाई, तीन बहिनों का लाड-प्यार में पालन-पोषण हुआ। माता-पिता व्यवसाय के कारण अधिकतर कोलकाता में रहते थे। अत बचपन कोलकाता के शहरी वातावरण में आमोद-प्रमोद पूर्वक बीता जहॉ धार्मिक परिवेश या सत-सतियों का समागम न के बराबर रहा। समय-समय पर जन्म भूमि गगाशहर आने पर ही सत- दर्शन का लाभ

मिलता। यौवन की ओर बढ़ते सर्वांग सुदर, सलोने सुरूप किशोर फतहचद (श्री चुन्नीलालजी छाजेड के पुत्र) श्री भेरूदानजी डागा की माँ के चित्त चढ़ गया। अपने वार्धक्य के कारण माताजी के आग्रह वश और प्राचीन प्रथानुसार लिछमा का विवाह साढ़े ग्यारह वर्ष की उम्र में विक्रम सवत् 1993 फाल्गुन कृष्णा अष्टमी को तेरह वर्षीय फतहचदजी छाजेड के साथ हो गया। लिछमा जी के निर्मलात्मा, भद्र प्रकृति के धनी सीधे-साधे सास-श्वसुर तथा सस्कारी परिवार में धर्म सस्कार फलने-फूलने लगे। लिछमाजी की शादी के बाद उनके दो देवर मगन-धर्म वि स 1999 एव 2000 में आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से दीक्षित हो गए। इससे भी लिछमा जी की धर्म भावना को बल मिला। इधर वि स 1999 मिगसर पूनम के दिन लिछमा जी ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम रखा गया झँवरलाल छाजेड। लडका तीन वर्ष का हुआ, तब तक चित्त सासारिक सुखों में निमग्न था। एक ससारी प्राणी को जो चाहिए वे सर्व सुख उपलब्ध थे, इसलिए लिछमा जी को सामान्य धर्मानुराग था पर वैराग्य नहीं था।

प्रवचन श्रवण : वैराग्योत्पत्ति :- लिछमा जी का पुत्र जब तीन वर्ष का हो गया तो वे अपनी सास के साथ धर्मस्थान में सतो का प्रवचन सुनने के लिए जाने लगीं, मोहकर्म की अल्पता के कारण जिनवाणी रुचिकर लगने लगी। प्रवचन-श्रवण मे आनद आने लगा। प्रवचनों के मध्य प्रसगवश व्याख्याता मुनि ने ब्रह्मचर्य की महिमा, अब्रह्म के घोर पाप का विवेचन करते हुए विजय सेठ व विजया सेठानी का पवित्र चरित्र सुनाया और कहा- भोग विलास को जीवन का लक्ष्य मानने वाले भारी भूल करते हैं। विषय सुख, विष तुल्य परिणाम दारुण होते हैं। कुछ ही वर्षों में हथेली में रखी बर्फ की डली सम नष्ट हो जाते हैं। वे छोड़ें, उससे पहले समझदार आदमी को उन्हें त्याग देना चाहिए। सुनते-सुनते अल्पकर्मालिछमा जी को अब्रह्मचर्य के प्रति घृणा हो गई। अब्रह्म से होने वाले दोषों को सुनकर आत्मा काँप उठी। लिछमा जी ने अपनी आत्म शक्ति का निरीक्षण किया कि सहसा सोई शक्ति जाग उठी। उन्होंने मन ही मन निश्चय कर लिया, लडका बडा होने पर सयम स्वीकार लूँगी। भगवान महावीर की वाणी साकार हो गई- 'सोच्चा जाणइ कल्लाण, सोच्चा जाणइ पावग' श्रेय-अश्रेय का ज्ञान सुनने से होता है। फिर 'सवणे, णाणे, विण्णाणे, पच्चक्खाणेय, सजमे। अण्हणए, तवेचेव, बोदाणे, अक्रिया सिद्धि' - का क्रम शुरू होता है। अर्थात् श्रवण से ज्ञान, ज्ञान से विश्लेषणात्मक ज्ञान-विज्ञान, प्रत्याख्यान, सयम, अनास्रव, तप से कर्म निर्झरण, अक्रिया और सिद्धि प्राप्त होती है। प्रथम सोपान है- श्रवण। लिछमा जी के जीवन में पवित्रता के शिखर आरोहण के सकल्प का बीजवपन हो गया, चरण गतिमान हो गए।

सयम-सुख का अनुभव .- लिछमा जी के पति फतहचदजी उस समय करणपुर में कार्यरत थे। पत्र द्वारा लिछमा जी ने अपनी विरक्त भावना को व्यक्त करने का प्रयत्न किया तो पति का उत्तर कठोरतम शब्दों में मिला। पति जब करणपुर से गगाशहर आए, तब लिछमा जी ने पुन अपनी भावना प्रस्तुत की तो पति उत्तेजित हो कहने लगे- मेरे सामने ये निरर्थक बातें फिर कभी मत करना, समझदार हो जरा सोचो तो दो बडे भाई अलग हैं। दो छोटे भाई दीक्षित हो गए हैं, माता-पिता वृद्ध हैं। छोटे बच्चे को छोडकर दीक्षित होना क्या बुद्धिमत्ता है? लिछमा जी ने कहा- चलो, मैं आपकी बात मानकर अभी दीक्षा की बात छोड देती हूँ, पर अब्रह्मचर्य का त्याग तो करना ही होगा, मेरा मन एकदम विरक्त हो गया है। धर्मपत्नी की भावना का सम्मान करते हुए दोनों ने विजय-विजया की तरह एक वर्ष सयम में बिताया। लिछमा जी ने अपने हाथ से लिखे पन्ने में अपनी आत्मकथा लिखते हुए लिखा है- 'उस सयम काल के सुख के आनद का वर्णन नहीं किया जा सकता। सच में ही सयम का सुख अतुलनीय होता है। सयमी साधु देव-सुख को भी लाघ जाता है। सयम-सुख के सामने देवों के दिव्य- सुख बौने बहुत बौने प्रतीत होने लगते हैं। आगम व अनुभव पूत वाणी को गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने व्यवहार बोध में अभि व्यक्ति दी है, वह इस प्रकार है-

सयम सुरतरु छाव मे, बहता सुख का स्रोत।
रहे असयम- धूप में, दु ख से ओत-प्रोत॥
सयम में रत सयमी, देता सुर-सुख मात।
इतर अरतिवश भोगता, नारकीय आघात॥

मेरा सद्य रचित पद्य है- 'देव द्युति फीकी पड जावे, देव सुख हेठे रह जावे। सयम सुखरे आगे सब सुख फीका पड जावे॥'

पूर्व तैयारी - एक वर्ष का सयमी काल सपन्न होने पर पति द्वारा पुन सासारिक सुखों की ओर आकृष्ट करने का प्रयत्न किया गया। परतु विरक्तात्मा लिछमा वह प्रस्ताव कैसे स्वीकार कर सकती थी? जिसे शुद्ध दूध सम परम रस का आस्वाद मिल गया हो, उसे भला ससार के क्षणिक भोग सुखरूप आटे के पानी में दूध का स्वाद कैसे आ सकता है? आखिर पति फतहचदजी कुछ दिन रहकर पुन करणपुर चले गऐ। इधर लिछमा जी की वैराग्य भावना वर्धमान होती रही, सत-सतियों के ठिकाने बार-बार जाना तथा कठस्थ ज्ञान करना शुरू करने पर पारिवारिक जन बिगडकर कहने लगे- 'क्या दीक्षा लेना है? जो बार-बार धर्मस्थान में जाती हो?' लिछमा जी ने सहज सरलता से कह दिया कि

यदि आपकी कृपा हो जाए तो भाव दीक्षा लेने का ही है। इतना सुनते ही घर के सारे स्वजन नाराज हो बरस पडे और करणपुर से फतहचदजी को शीघ्र वापस आने की सूचना दे दी। परतु फतहचदजी कैसे आते, उन्हें तो पूरा माजरा ज्ञात था।

निराहार तप :- इधर लिछमा जी ने अपने मन को खूब तोलकर वज्र सकल्प कर लिया कि जब तक दीक्षा की आज्ञा नहीं मिलेगी, तब तक मुझे तीन आहार का त्याग है। परतु किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया। निराहार के दिन बीतने लगे। आखिर करणपुर फतहचदजी को पत्र द्वारा सूचित किया गया तो प्रतिक्रिया स्वरूप फतहचदजी ने भी पचोला किया फिर पारणा कर गगाशहर पहुँचे। उस दिन लिछमा जी के निराहार तप का सोलहवाँ दिन था। फतहचदजी ने पारणा करने का आग्रह किया और दीक्षा की अनुमति दे देने का विश्वास दिलाया। लिछमा जी ने कहा- लिखित आज्ञा पत्र दो तो ही पारणा करूँगी, अन्यथा नहीं। पति ने कहा- कह दिया है ना! लिछमा जी- मैं नहीं मानती। जब लिखित पत्र दे दिया। तब सोलह दिन की तपस्या का पारणा किया।

एक वाक्य ने पासा पलटा :- मोह का काम बडा विकट है। धार्मिक परिवार, सस्कारी पति, पर मोह अपनी टॉग अडाए बिना कब रहता है? मोह ने अपना जाल बिछाया। फलत पारणे के दूसरे दिन पति फतहचदजी ने चुपके से लिखित पत्र को फाड दिया और साफ कह दिया- मैं दीक्षा की अनुमति हरगिज नहीं दूँगा। लिछमा जी ने सविनय कहा- आप दूसरी शादी करवालें। मुझे मेहरबानी कर दीक्षा की अनुमति प्रदान कर दें। मेरा मन संसार में रम-जम नहीं रहा है। बहुत अनुनय-विनय किया पर पति टस से मस नहीं हुए। न अनुमति देने को राजी हुए और न दूसरी शादी करने को तैयार हुए। इस कशमकश में लिछमा जी ने इतना मात्र कहा कि 23-24 वर्ष की उम्र सब कुछ अनुकूलता के बावजूद यदि आप दूसरी शादी करने को राजी नहीं हैं। इतना ही सच्चा स्नेह-प्रेम है तो आप भी सयम लेने के लिए तैयार हो जाएँ। इस एक वाक्य पर फतहचदजी पूर्व सस्कार व कर्मों की अल्पता के कारण विरक्त हो गए। मोह का बल क्षीण हुआ, वैराग्याकुर फूट निकला, परतु वृद्ध माता-पिता तथा चार-पॉच वर्षीय चपल बालक का ख्याल, प्रश्नचिह्न खडा करने पर चितन में डूब गए। दोलायमान स्थिति में लिछमा जी के सहयोगात्मक सबल ने वैराग्य भावना को पुष्ट किया। वे करणपुर चले गए। वहाँ जाने के बाद मन एकदम बदल गया। पूर्ण विरक्त हो गए। आगमों में पत्नी को 'धम्म सहाया' कहा गया है, उस विशेषण को लिछमा जी ने सत्य कर दिखाया।

'संग जैसा रंग' .- कहावत चरितार्थ हुई। वैराग्य रग से रजित लिछमा जी के सग

ने पति फतहचदजी को विरक्त कर दिया। वैराग्याकुर पुष्पित-पल्लवित हो सके, एतदर्थ आचार्यश्री तुलसी के दर्शन कर करणपुर मे सतों का चातुर्मास प्रदान करवाने का सविनय साग्रह निवेदन किया। गुरुदेव ने कहा- करणपुर में चातुर्मास? क्यों? फतहचदजी ने निवेदन किया- करणपुर वासियों को धर्मलाभ मिलेगा। मैं गगाशहर जा नहीं सकता, मुझे तत्त्व ज्ञान करना है। वैराग्य को पुष्ट करना है। मेरे दीक्षा लेने के भाव हैं। आप कृपालु हैं। कृपा करें। इस निवेदन पर गुरुदेव ने अतीव कृपा कर सवत् 2004 का मुनि श्री रावतमलजी (426) सुजानगढ़ का चातुर्मास प्रदान किया। सतत साधु-सगत से वैराग्य भावना बलवती होती गई। अब गगाशहर आकर बोले- मेरी ओर से तुम्हें अनुमति है। मैं स्वय दीक्षा का विचार कर रहा हूँ। यह सुन लिछमा जी का मन हर्ष से भर गया, मानो मनोवाछित फलदाता कल्पवृक्ष घर-आगण में फल गया हो। दोनों ने माता-पिता के सामने भावना रखी।

सस्कार का प्रभाव .- सास-श्वसुर बडे सस्कारी, भद्र प्रकृति के त्याग-तपोधनी सुश्रावक थे। तभी तो पहले दो पुत्रों मुनि मगन (566) और मुनिधर्म (585) का उत्तमतम दान धर्म सघ को दे चुके थे, उन्हें कोई दीक्षा ले तो मना करने का त्याग भी था किंतु परिस्थितियाँ उद्वेलित कर रही थीं। अत धीर-गभीर स्वर में बोले- हम वृद्ध हैं, न जाने कब चल बसें। फिर बच्चे को कौन सभालेगा? साधु जीवन की कठोरता, घर की सामान्य आर्थिक स्थिति, पुत्र-मोह का निदर्शन कराने पर भी वैराग्य भावना प्रवर्धमान रही। तब पोते को सिखाने लगे कि आज्ञा माँगे तो मत देना, प्रत्युत्तर में पोता झँवरलाल कहता- मैं तो दूँगा। रुकावट क्यों डालूँ। रुकावट डालने वाला दु ख पाता है। चार-पाँच वर्षीय बच्चे के इस सहज कथन से सिद्ध होता है कि माता-पिता के विशेषत माता के सस्कार शिशु में सक्रात होते हैं। कुछ पूर्व जन्म के सस्कार भी काम करते हैं।

विनय की पिछवा पवन - मोह के सघन बादलों को छिन्न-भिन्न कर डालती है। वैरागी दपति ने विनम्रता से कहा- पिताश्री! मातुश्री! आप अनुमति देंगे तो आपकी बडी कृपा होगी। आपके सहयोग से ही हमें सयम रत्न मिल सकता है। यदि आपने मोहवश या वार्धक्य की विवशता (जो एकदम स्पष्ट है) वश इकार कर दिया तो हमारी वैराग्यरत आत्मा को किंचित भी सतोष नहीं होगा, उल्टी आत्मा तडफेगी। इस कथन पर माता-पिता की अल्पकर्मा आत्मा ने बुढापे की तमाम मजबूरियों को झेलते हुए दीक्षा की अनुमति देने की कृपा कर दी। धन्य हैं वे आत्माएँ, जो भर जवानी में तमाम सासारिक सुखों को ठुकराकर सयमी बनने को उतावले हो उठते हैं। भगवान महावीर की वाणी

त्यागी वे ही होते हैं, जो वस्त्र, गध, अलकार, शयनासन, स्त्री आदि उपभोग्य पदार्थों की स्वाधीन उपलब्धि होते हुए त्याग देते हैं। धन्य हैं वे गृहस्थ वेशधारी सत आत्माएँ, जो बुढापे की विवशताओ को झेलते हुए नन्हे-मुन्ने के पालन-पोषण का कठिन दायित्व लेकर- अपना क्या होगा, कौन सेवा करेगा? का बिल्कुल ख्याल न कर अपने नौजवान बेटे-बहू को दीक्षा की अनुमति दे देते हैं। माँ-बाप की छप्पन और छयासठ वर्ष की उम्र व्यापार करने का त्याग, घर की सामान्य आर्थिक परिस्थिति, उस स्थिति में इतना बडा त्याग करना गहरे धर्मानुराग और स्वार्थ विसर्जन का ऐतिहासिक विरलतम उदाहरण है। ऐसा विसर्जन ही सस्कृति सर्जक एव सरक्षक बनता है। राम-भरत के राज्य विसर्जन ने असख्य लोगों को सन्मार्ग दिखाया है।

गुरु होते हैं :- चतुर चितेरे, जो शिष्यो के भावो के केनवास में सुदर रग भरते हैं। गुरु होते हैं-शिल्पकार, जो अनघड पाषाण खड को पूजनीय बना देते हैं। गुरु होते हैं कुभकार, जो मिट्टी के लौंदे को मगल कलश बना मानव मस्तक का मुकुट मणि बना देते हैं। ऐसे ही परम पूज्य जिन शासन मुकुटमणि गुरुदेव तुलसी थे, जो उस समय लाडनू मे विराजमान थे। माता-पिता के साथ दपति (फतह-लिछमा) गुरु चरणों में उपस्थित हुए। सयम रत्न प्रदान करने का सविनय निवेदन किया। गुरुदेव ने फरमाया- चुन्नीलालजी! अर्ज तो करते हो पर बच्चा छोटा है, तुम हो वृद्ध, सोच लेना। गुरुदेव के इस वचन पर आँखों से अश्रुधारा बह चली। चुन्नीलालजी ने कहा- भगवन! आप सर्वज्ञ सम हैं। बच्चा छोटा है। यह तो आपके ध्यान मे ही है। जैसा उचित हो वैसा करवाएँ। गुरुदेव ने फरमाया- अभी नहीं, फिर देखेंगे। अतराय कर्म ने रोक लगा दी। दपति का मन खिन्न तो हुआ, पर क्या किया जाए।

जीवन का एक-एक क्षण रत्नो से बढ़कर कीमती होता है। वह यदि इच्छित वस्तु की प्राप्ति के बिना बीतता है तो बहुत अखरता है। विरक्तात्माओं को एक क्षण भी रामायण के सत्पात्र भरत के शब्दो में वृथा जाता प्रतीत होता है। कमल सम राज्य सत्ता के दलदल से अलिप्त भरत ने कहा था- 'खिण गई रे, मेरी खिण गई। लाखिणी मेरी खिण गई' - इसी स्वर लहरी मे गुनगुनाते हुए दपति पुन गुरु चरणो में पहुँचे। दपति की उत्कट भावना को अधिमान देते हुए गुरुदेव ने मेहरबान हो धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने का आदेश प्रदान कर दिया। उन दिनो पारमार्थिक शिक्षण सस्था की शुरूआत हुई ही थी। अब तो वह बहुत सशक्त बन गई है। सवत् 2005 फाल्गुन शुक्ला 2 को सरदार शहर में पारमार्थिक शिक्षण सस्था की स्थापना हुई। सस्था में 6 महीने तक साधना एव शिक्षा

का अभ्यास किया। सस्था के मुमुक्षु भाई-बहनों की दीक्षा श्रेणी में मुनि फतहचदजी और साध्वी लिछमा जी का प्रथम पक्ति में नाम है। इस प्रकार फतह और लक्ष्मी के नाम का सहज शुभ सयोग मिलना, सस्था के लिए शुभ भविष्य का द्योतक है।

फतह नाम मुनि में प्रथम, विजय पताका केतु।
लक्ष्मी सतियो में प्रथम, ज्ञान-सपदा हेतु॥

(शासन समुद्र भाग-22 से साभार)

वि स 2006 जयपुर चातुर्मास में साधु प्रतिक्रमण सीखने का तथा स्वल्प समय बाद दीक्षा का आदेश मिल गया। इष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए दृढ़ सकल्प करने वाले व्यक्ति को कौन रोक सकता है? और कौन परास्त कर सकता है? कवि कालिदास की यह उक्ति सार्थक हो गई। लिछमा जी ने स्वय लिखा है- उस समय के आनद को शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता है। आनदाभिव्यक्ति में शब्द बौने पडते हैं। सच में आत्मानद अवाच्य ही होता है।

दुरगी दुनिया में सज्जनता- दुर्जनता के दोनों रग पाए जाते हैं। कुछ लोग अच्छे काम या ससार के सर्व सुखों का त्याग स्वय तो कर नहीं सकते, पर करने वालों की आलोचना अवश्य कर लेते हैं। अपने अमूल्य समय और सपत्ति को खर्च कर अकारण पाप बधन के साथ दुर्जनता का परिचय अवश्य दे देते हैं। जयपुर मे भी वही हुआ। पत्र-पत्रिकाओं, सभाओं-भाषणों द्वारा बाल दीक्षा के नाम पर घोर विरोध हुआ पर बिना पाये का मकान कैसे टिक सकता है? गुरुदेव के पुण्य प्रताप से विरोध सारे निस्तेज हो गए। बडे धूमधाम से बिना किसी बाधा के 24 वर्ष की सुहागन वय में 26 वर्षीय पति मुनि फतहचदजी (630) के साथ पारीक इटर कॉलेज में लगभग 20-25 हजार की उपस्थिति में सवत् 2006 कार्तिक कृष्णा अष्टमी को दपति की, अन्य छह मुमुक्षु आत्माओं समेत कुल आठ दीक्षाएँ सानद सपन्न हो गईं। सयोग की बात है। नवदीक्षित युवा मुनि फतहचदजी के लघु भ्राता मुनिश्री मगनमलजी प्रमोद (566) की दीक्षा चुरू में ठीक सात वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्णा अष्टमी को ही हुई थी।

सयम लेना, शिखर आरोहण हेतु साधना के सोपान पर पॉव रखना है। साधना का उतार-चढ़ाव भरा मार्ग पहाड की टेढ़ी-मेढ़ी घुमावदार कष्ट भरी पगडडियों की तरह होता है। प्रतिकूलताओं को- परीषहों को झेलते हुए शिखर सिद्धि के मार्ग को तय करना पडता है। जिसके वैराग्य के पॉव मजबूत होते हैं, स्वाध्याय-जप (तप) की हाथ में सहायक लाठी होती है। सुखद सहवास की शीतल समीर होती है। सिद्धि के ध्येय की

सम्मुख सुदर तस्वीर होती है। वह अपनी मस्ती मे मजिल को पा लेता है। साध्वी लिछमा जी का वैराग्य हलदिया नहीं, मजीठी रग का था, स्वाध्याय- जप (तप) उनके श्वासोच्छ्वास थे। अग्रगण्या साध्वी श्री इन्द्रूजी (1045) सत्रह वर्ष की वय में पति मुनिश्री चपालालजी लाडनू (538) के साथ वि.स 1996 वैशाख शुक्ला 7 के दिन लाडनू मे दीक्षित तथा सहयोगिनी साध्वियॉ- रायकँवरजी, पूनाजी आदि का शात सहवास था। (पूरे 52 वर्षों का सयमी सहजीवन मॉ-बेटी-बहन सम बीता) अत शिखर आरोहण याने कर्म मुक्ति का ध्येय लेकर कला-साधना, तपाराधना, जन प्रतिबोधन, अनेक प्रातों की विहार यात्रा आदि के सारे उपक्रम उनके जीवन में सफलता के साथ चले। यही कारण था कि हजारों-हजारों लोगों को व्यसन मुक्त, अणुव्रती, सुलभ बोधी, मार्गानुसारी, सम्यक्त्वी बना जैन शासन व भैक्षवगण की गरिमा-महिमा को शिखरों चढ़ा सकी। सिघाडे की साध्वियों का सात्विक शात सहवास, समझाने-गाने की प्रभावक शैली, वैराग्य रस भरे प्रवचनों की पटुता, तप-जप-स्वाध्याय का सोने में सुगध का योग, जन-गण-मन पर ऐसी छाप छोडता कि दीर्घकाल तक वह छाप जस की तस बनी रहती, लोग याद ही करते रहते।

शिक्षा .- साध्वी श्री लिछमाजी ने दशवैकालिक सूत्र, 20 थोकडे। जैन सिद्धात दीपिका, भक्तामर, शात सुधारस, पचतीर्थी, देवगुरु स्तोत्र, भिक्षु अष्टक, तुलसी अष्टक, आराधना, चौबीसी, शील की नौ बाड, आचार बोध, विचार बोध, सस्कार बोध, व्यवहार बोध, तेरापथ प्रबोध, श्रावक-सबोध तथा अग्नि परीक्षा आदि कई व्याख्यान कठस्थ किये।

साधना .- प्रतिदिन प्राय 500 गाथाओ के स्वाध्याय का क्रम चलता रहा।

(शासन समुद्र भाग 22 से साभार)

साध्वी श्री लिछमा जी के तप और जप तो श्वासोच्छ्वास थे। ज्ञात तथ्यानुसार तप में उपवास से सोलह तक की लडी उन्होंने की। हर साल कोई न कोई बडी तपस्या जरूर करती। अनेक बार तेले की तपस्या में इष्ट मत्रों का लाखो की सख्या में जप किया करती। नैरन्तरिक जप भी स्वय ने और अनेकों बहनों द्वारा उन्होंने लाखों का और किया-कराया। उस काल में कई बार चमत्कारिक घटनाएँ भी घटित हुईं। नाम, यश, ख्याति निरपेक्ष साध्वीजी ने उन्हें प्रकट नहीं होने दिया। यहॉ तक कि साथ-वाली साध्वियों तक को भी भनक नहीं पडने दी। परतु कई घटनाएँ इतनी उजागर हो गईं कि रोके रुक न सकी। उनमें से एक अति विश्रुत घटना प्रसग प्रस्तुत है-

अपनी अग्रगण्या साध्वी श्री इन्द्रूजी (लाडनू) के सान्निध्य में अनेक प्रांतों का पदव्रजन करते हुए साध्वी श्री लिछमा जी का वि स 2025 का चातुर्मास कोटा (राजस्थान) में हुआ। वहाँ सवत्सरी (29 अगस्त 1968) की रात को प्रात तीन बजे साध्वी श्री लिछमा जी धर्म जागरण कर रही थीं कि अचानक तीव्र सुगध से सारा कमरा भर गया और भयकर सर्प साध्वी श्री के फैले हुए पॉव पर लिपट गया। अपूर्व साहस का परिचय देते हुए साध्वी श्री ने सागारी अनशन (उपसर्ग रहे, तब तक अन्न-जल का परिहार) स्वीकार कर 'भिक्षु जाप' तथा आगमीय गाथा- 'नमिऊण असुर सुर' आदि का पाठ प्रारभ कर दिया। प्राय 20 मिनट के बाद नागदेव उतर गए व अदृश्य हो गए। उस अवधि में कुछ सुरसुराहट व जाप ध्वनि से क्रमश अन्य साध्वियाँ, पौषध वाली बहनें तथा नीचे की मजिल में पौषध करने वाले भाई जाग गए। सबने प्राय डेढ़ घटा जाप किया। जाप-ध्वनि से सारी जैन धर्मशाला गूँज उठी। बाहर बरामदे मे सोई हुई एक बहन ने उस दरम्यान बिजली जलाकर देखा तो नाग का कहीं अता-पता नहीं मिला। पक्की धर्मशाला के ऊपरी मजिल मे ऐसी कोई नाली खिडकी आदि न होने पर भी सर्प का आना और अतर्धान हो जाना अपने आप में अद्भुत घटना थी।

साध्वीजी के वस्त्रों पर लाल-लाल बूँदे (धब्बे) थे। दर्शकों व साध्वियों द्वारा कल्पना की गई कि शायद ये सर्प दश से निकले खून के धब्बे होंगे। परतु गहराई से देखने पर पता चला कि वे धब्बे रक्त के नहीं, केसर की बडी-बडी बूँदें हैं। साध्वी श्री के सभी वस्त्र (जिन्हें वे पहने हुई थी) केसर की मोटी-मोटी बूँदों से भरे हुए थे। सुरक्षित रखे गए वस्त्र खंडों से आज भी सुगध आती है। शरीर के अगों पर विशेषत सर्प जहाँ लिपटा था, केसर चर्चित हो रही थी, पार्श्ववर्ती दीवारों व फर्श पर भी बडी-बडी बूँदें दिखाई दीं। छिडकी हुई जैसी केसर को देखकर ऐसा लगने लगा, मानों किसी ने केसर की वर्षा बरसाई हो। केसर की महक से सारा कमरा महक उठा। वह महक कई घटों तक उसी प्रकार आती रही। सैकडों भाई-बहनों ने अपनी इन खुली आँखों से इस घटना को प्रत्यक्ष देखा।

सपूर्ण कोटा शहर में इस अद्भुत घटना की भारी चर्चा हुई। केसर वाली साध्वी कहाँ है? दर्शन करना है। पूछते हुए हजारों लोग आते-जाते और दीवारों को खुरच-खुरच कर केसर युक्त खुरचन ले जाते। 'जैन साध्वी का चमत्कार' शीर्षक से समाचार, कोटा के समाचार पत्र में प्रकाशित भी हुआ। दर्शक लोग दाँतों तले उगली दबाते हुए आचार्यश्री तुलसी, साध्वीश्री, धर्मसघ तथा जैन शासन की मुक्त कठ से प्रशसा करने लगे। ठीक माह बाद कार्तिक शुक्ला पचमी की रात को पुन नागदेव प्रकट हुए और कात

तक सोपान मार्ग रोके रहे। फिर दर्शन करते हुए अतर्धान हो गए। साध्वी श्री का अपूर्व साहस, आत्मविश्वास, सुदृढ गुरु भक्ति, आगमीय पद्य व भिक्षु नाम जप के अमिट प्रभाव से भावित साधनामय जीवन एव अमृतमय उपदेश, चिरकाल तक जनता को अध्यात्म का प्रशस्त पथ प्रदान करते रहेंगे।

प्रेरक महाप्रयाण :- अग्रगण्या साध्वी श्री इन्द्रूजी अपनी अवस्था व चलने की असुविधा के कारण लगभग सवत् 2050 से समाधि केद्र बीदासर में स्थिर वास कर रही हैं। साध्वी श्री लिछमा जी उनकी सेवा में रही। साध्वी श्री इन्द्रूजी की स्वाध्याय प्रियता, साध्वी श्री लिछमाजी की जप प्रेरणा और व्यवहार मधुरता के कारण उनका कमरा बहनों से भरा रहता। गुरुदेव की कृपा से वि स 2057 के छापर सेवा केंद्र के प्रवास में चार बार दो-दो दिन के लिए बीदासर में रहने एव सेवा करने-कराने का मुझे अवसर मिला। यह उनसे अतिम मिलन था। पूरे जीवन और इस प्रवास में जो भी साध्वी श्री का प्रेरक सान्निध्य मिला, वह अब स्मृति प्रकोष्ठ में स्थिर हो गया है। माँ का सा असीम वात्सल्य व अपार सम्मान दान मधुर स्मृति का विषय बन गया है।

21-22 फरवरी 2001 के बीदासर प्रवास में लग नहीं रहा था कि यह पवित्रात्मा इतनी जल्दी हमसे विदा ले लेगी। पर भावी बलवान होती है। अघटित घट जाता है। हमारी विदाई के बाद थोडी उगलियाँ सुन्न सी रहने लगीं, पर कोई और अस्वस्थता नहीं थी। क्रमश जून-जुलाई में हाथ की सुन्नता बढ़ने लगी। हाथ से खाना, कपडा पहनना कठिन हो गया। सेवा भावी साध्वियाँ पूर्ण सजगता से सेवा मे सलग्न थीं। तेरापथ की सेवा सुविख्यात है पर लिछमा जी, जो जीवन भर सेवा देती रही, उन्हें सेवा लेना रुच नहीं रहा था। यही कारण था कि आहार का क्रम घटता गया। सौभाग्य से आचार्य प्रवर महाप्रज्ञजी का ससघ बीदासर पावस प्रवास शुरू हो गया। लगता है- इस स्वर्णिम अवसर को लिछमा जी हाथ से जाने देना नहीं चाहती थी। अत 16 जुलाई से तपस्या शुरू कर दी। सुनने के अनुसार साध्वियों ने उपवास का पारणा करने को कहा तो बोलीं- अब पारणा आगे ही होगा। स्वय की अत प्रेरणा से तिविहार तथा चौविहार सथारा भी स्वीकार कर लिया। आखिर उनकी प्रबल भावना देखकर 22 जुलाई को युवाचार्य प्रवर ने अनशन करवा दिया। जुलाई मास की भीषण गर्मी में पानी पीने का त्याग बहुत कठिन होता है। इतना ही नहीं, गीले कपडे को भी अडने तक नहीं दिया। गर्मी से आँखें लाल-लाल हो गई पर गजब की समता रही। जैसा आदर्श सयमी जीवन था, वैसा ही पवित्र भावना भरा अनशन रहा। सौभाग्यशालिनी थी वे, जिन्हें दो बार

गुरुदेव ने पधारकर दर्शन दिये। युवाचार्य प्रवर तथा साध्वी प्रमुखा जी की कृपा का तो आर-पार नहीं रहा। अतिम सॉस महाश्रमणी जी के पावन सान्निध्य में ली। 3 अगस्त को सूर्योदय का समय, घडी ने 6 बजाई। सूर्योदय का शब्द हुआ कि साध्वी श्री लिछमा जी ने महाप्रयाण कर दिया।

मगल भावना - साध्वी श्री लिछमा जी की पवित्रात्मा अतिशीघ्र अपने अतिम लक्ष्य-वीतरागता और मजिल निर्वाण को प्राप्त करे। अतरात्मा की कामना है। मैं मेरे बधुद्वय, मुनिमगन, मुनि फतह, भतीज मुनि मुनिव्रत, भतीजियॉ साध्वी चद्रावती, साध्वी शाताकुमारी, ममेरे भाई मुनि राजकरणजी, मुनि पूर्णानदजी आदि उन्हीं की तरह अनशन पूर्वक समाधिपूर्ण सयम यात्रा सपन्न कर लक्ष्य वीतरागता और मजिल निर्वाण को प्राप्त करें। सुगुरुशरणम्, अरिहते, सिद्धे, साहू, केवलिपण्णत धम्म शरण, शरण शरण ॐ अर्हम् ॐ अर्हम्।

छूटा देहाध्यास

मिला सहज सौभाग्य से, अनुपम भैक्षव सघ।
खिलता रहता है जहॉ, सयम का शुभ रग।।1।।

साध्वी इन्दु- लाडनूॅ, बीदासर स्थिरवास।
लिछमाजी सहयोगिनी, है वर्षों से खास।।2।।

पॉच दशक की साधना, जागृति आठो याम।
छठे दशक मे खुल गया, एक नया आयाम।।3।।

हुआ असाता योग से, हल्का पक्षाघात।
चली चिकित्सा कुछ समय, बनी न कोई बात।।4।।

मन ही मन सोचा करूॅ, आध्यात्मिक उपचार।
सन्निधि है गुरुदेव की, अवसर है श्री कार।।5।।

अनासक्ति जागी सहज, छूटा देहाध्यास।
संथारा स्वीकार कर, रचा नया इतिहास।।6।।

कर करुणा आए यहॉ, कई बार गणनाथ।
दर्शन दे सम्बल दिया, युवाचार्य वर साथ।।7।।

तन चेतन की भिन्नता, अनुभव करो प्रकाम।
वीतराग बनकर वरो, सहज सिद्धि का धाम।।8।।

अनशन सुषमा से खिला, कैसा थान सुथान।
गूॅज रहे हैं रात-दिन, आध्यात्मिक सगान।।9।।

*साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

मुनि मगन की मंगल भावना

साध्वी श्री लिछमाजी! आपने अनशन व्रत को स्वीकार कर बहुत ही शूरवीरता का परिचय दिया है। जब देखा कि यह शरीर काम नहीं कर रहा है, यह मुझे धोखा दे, इससे तो बेहतर यही होगा कि मैं इसे छोड दूँ। जब तक यह साधना में सहयोगी वना इसकी देखरेख की, अब यह साधना में बाधक बन रहा है फिर इससे मोह कैसा? ऐसा चितन कर तपस्या प्रारभ की। छ दिनों की तिविहार तपस्या के पश्चात आज छ दिनों से चौविहार अनशन हो रहा है। ऐसा चितन कोई विरल अतर्मुखी, आत्मार्थी व्यक्ति ही कर सकता है वरना तो अतिम समय आ जाने पर तथा डॉक्टर-वैद्यों के साफ उत्तर दे देने पर भी भावना यही रहती है कि मैं किसी प्रकार जीवित रह जाऊँ।

आपने जिस साहस और वैराग्य भावना से भर यौवन में सात वर्ष के प्रिय पुत्र को छोड, पति-पत्नी के अत्यत प्रेम होने पर भी दम्पति ने दीक्षा ग्रहण की थी, उसी शूरवीरता का परिचय देकर अतिम समय में यह सथारा स्वीकार किया है। इससे जैन धर्म, भैक्षव शासन- तेरापथ धर्म सघ व अपने खानदान का गौरव शिखरो चढ़ा है। आप जैसी वीरागना पर हमें नाज है। अब हम सबकी एक ही मनोकामना है कि आपने जिस सिह वृत्ति से अनशन व्रत स्वीकार किया है। 'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है' की भावना को हमेशा ध्यान में रखते हुए उसी सिह वृत्ति से इसे सपन्न करना है। यह कष्ट इस नाशवान शरीर को है, आत्मा तो उज्ज्वलतम बनती जा रही है। शारीरिक कष्ट भी अब वहुत थोडे समय का है, आगे तो आनद ही आनद है। जैसा आदर्श सथारा पूर्ण सजगता में श्रावक रत्न श्री चुन्नीलालजी छाजेड को आया था, वैसा ही आदर्श आपने प्रस्तुत करके महा रूप में सुयोग्य पुत्र-वधु कहलाने का अधिकार प्राप्त किया है।

आप कितनी सौभाग्यशालिनी हैं कि करुणा के अवतार, युग पुरुष, युग प्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति भावी शासनाधिपति युवाचार्यश्री महाश्रमणजी, मातृ हृदया महाश्रमणी, साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी तथा चतुर्विध धर्म सघ का योग आपको प्राप्त हुआ है। आचार्य प्रवर, युवाचार्यश्री ने भी महान कृपा कर आपको कई वार दर्शन दिये हैं, ऐसा हमें ज्ञात हुआ है और साध्वी प्रमुखाजी के तो वहुत

ही निकटता से पुन पुनर्दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। ऐसे महापुरुषो द्वारा सम्बल प्राप्त हो रहा है, साध्वी श्री इन्द्रूजी आदि साध्वियों का तो मातृवत् स्नेह आपको सदा से ही प्राप्त है। वास्तव मे ही ऐसा योग तो किसी विरल भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है।

दीक्षा लेकर 52 वर्षों तक साध्वी श्री इन्द्रूजी के सिघाडे में एक ही स्थान पर अत्यत सौहार्दता के साथ क्षीरनीरवत् रहकर तथा दूर-दूर प्रातो मे विचरकर एव बडी-बडी तपस्याएँ करके आपने अपने जीवन को सफल व धन्य बनाया है। जहॉ-जहॉ भी विचरना हुआ है, वहॉ-वहॉ के लोग आप सभी साध्वियों के प्रति बेहद श्रद्धा का भाव रखते हैं। ऐसा हमने प्रत्यक्ष उन-उन क्षेत्रों में अनुभव किया है।

आप अपने मन में परम समाधि रखते हुए यह जो थोडी सी झाझली है, उसे पार कर आज तक जैसा आदर्श दिखाया है। उसको शतगुणित कर शासन के गौरव को शिखरों चढ़ाएगी, ऐसा हमें पूर्ण भरोसा है। आप शीघ्रातिशीघ्र कर्ममुक्त हों- शाश्वत सुखों को प्राप्त करें, यह मुनि फतहचदजी 'पकज', साथ ही साथ मुनि मगनमल 'प्रमोद', मुनि मुनिव्रत एव मुनि मेतार्यजी की अतर भावना है। इसी मगल भावना के साथ, जिन्हें आपका आज तक मातृवत् स्नेह प्राप्त होता रहा है।

※मुनि मगनमल 'प्रमोद'

तेरापथ भवन, उदासर
(दिनाक 27.7.2001)

मंगल भावना (1)

आपने अपने समग्र जीवन काल में धर्म सघ की सेवा, प्रभावना की है। जहाँ गए वहाँ के लोग आज भी याद करते हैं। इससे बढ़कर आपने स्वाध्याय, जाप-कला साधना से अपने जीवन को भावित किया है।

जिस शूरवीर वृत्ति से सयम लिया है, उसी शूरवीर वृत्ति से पालन किया। अब सथारा करके जीवन पर कलश चढ़ाने जा रही हैं। इस बात की परम प्रसन्नता है। चढ़ते परिणाम श्रेणी से अनशन लिया है। उससे उत्तरोत्तर परिणाम विशुद्धतर होते रहें, अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त हों, यही मगल भावना है।

सौभाग्य से इस बार गुरुदेव, युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्रीजी का विशेष सान्निध्य प्राप्त है। मातृ-स्वरूपा साध्वी श्री इन्द्रूजी तथा पूनाजी का सहयोग तो सदा से है ही, साध्वी श्री इन्द्रूजी व पूनाजी को परम समाधि रखना है, क्योंकि समाधिमरण हमारे लिए उत्सव स्वरूप होता है। जाना तो एक दिन सबको है ही, समाधिपूर्वक जाना हमारे लिए काम्य है। मगल भावना के साथ हम भी आराधक होकर समाधिपूर्वक जीवन सपन्न करें, यह भावना है।

*मुनि धर्मचद 'पीयुष'

श्री गगानगर
जैन भवन
(दिनांक 25 7 2001)

मंगल भावना (2)

समय बडा मूल्यवान है। आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है- का चितन आत्म रमण मे सहायक बनता है। इस समय चित्त समाधि की परम आवश्यकता है। यह अपने जीवन पर और श्रावक श्री चुन्नीलालजी छाजेड (श्वसुर) के वश पर कलश चढाने का पावन अवसर है। परम पूज्य गुरुदेव, युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखा श्री, साध्वी श्री इद्रूजी आदि वृहद धर्म सघ की शुभकामना भरा सहयोग आपके साथ है। हम सबकी भी मगल कामना है। आप अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करे, हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत बने। साध्वी श्री इद्रूजी, पूनाजी, परम समाधिस्थ व आत्मस्थ रहें। यह परीक्षा की घडी है। इसमें आदर्श स्थापित कर खरा उतरना है।

*मुनि धर्मचंद 'पीयुष'

श्री गगानगर
जैन भवन
(दिनाक 31.7.2001)

संथारे की संपन्नता पर उद्गार

परम आराध्य गुरुदेव! हम धन्य हैं, हमारी मॉजी लिछमाजी धन्य हैं, जिन्हें अतिम अवस्था में गुरुदेव के मुख से चौविहार सथारा पचखने का मौका मिला। यह चौमासा उनके जीवन के लिए एक सबल बन गया। मृत्यु तो सबको आती है, पर गुरुदेव के चरणों में, साध्वी प्रमुखा श्री के सान्निध्य में, अतिम समय तक स्वाध्याय, जप करते-करते चौविहार अनशन में पूर्ण समाधि पूर्वक शरीर का त्याग करना, ऐसा अवसर किसी विरल भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है। यह हमारे छाजेड परिवार के लिए गौरव की बात है। आपकी कृपा के प्रति हम सभी परिवार वाले अनत-अनत कृतज्ञता प्रकट करते हैं। हमारे सारे परिवार पर आपकी इस प्रकार की कृपा सदा बनी रहे, इसी आशा के साथ।

*झँवरलाल छाजेड

सवत् 2058 श्रावण पूर्णिमा
दिनाक 4 8 2001 (बीदासर प्रवचन में)

आत्मशुद्धि की प्रतिमूर्ति

परम पूज्य आचार्य प्रवर, युवाचार्य श्री, महाश्रमणजी! साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी एव समस्त चरित्र आत्मा-साधु-साध्वियों के चरणों मे कोटि-कोटि वदन।

उपस्थित धर्मप्रेमी माताओ, भाइयों तथा बहनों! जैसा कि आप सब जानते हैं कि जैन धर्म के गौरवशाली इतिहास में और एक नाम साध्वीश्री लिछमाजी का जुड गया है, जिन्होंने 18 दिनो का सथारा, जिसमें 6 दिनों की तपस्या तिविहार तथा 12 दिनों तक चौविहार अनशन कर अपने नश्वर शरीर से मुक्ति पा ली। जैन परपरा में तपस्या को आत्म शुद्धि के लिए काफी महत्वपूर्ण माना गया है और सथारे का तो सभी तपस्याओ में ऊँचा स्थान है। जिसमे भी चौविहार सथारे की तो अपरपार महिमा है। मनुष्य को इस दुनिया से एक न एक दिन जाना तो अवश्य ही पडता है। परतु ऐसे हँसते-हँसते स्वय मृत्यु को गले लगा लेना बहुत बडी बात है। साध्वी श्री लिछमाजी ने वह बडी बात साक्षात कर दिखाई, अत उन्हें बार-बार नमन है, प्रणमन है।

हमारा परिवार अत्यत सौभाग्यशाली है कि हमे श्री चुन्नीलालजी छाजेड जैसे धर्मनिष्ठ, दृढ श्रद्धालु श्रावक रत्न सरलता, सादगी के साकार रूप परदादाजी मिले। उनके सस्कार पूरे परिवार में सक्रात हैं। धापूदेवी जैसी परदादीजी हमें मिली जिनके तीन पुत्र, एक पुत्रवधु, एक पौत्र, दो पौत्रियाँ तेरापथ धर्मसघ में आज भी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी तथा युवाचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में धर्मसघ की प्रभावना कर रहे हैं। साध्वी श्री लिछमाजी अत्यत सौभाग्यशालिनी

थीं कि यह परम पावन शुभ अवसर उन्हें प्राप्त हुआ। साध्वी श्री लिछमाजी शायद इसी मौके की इतजार में थी। गुरुदेव और महाश्रमणी जी के पावन सान्निध्य में वे अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ीं और सफलता प्राप्त की। हम मगल कामना करते हैं कि वे शीघ्रातिशीघ्र कर्ममुक्त हों, शाश्वत सुखों को प्राप्त करें।

मैं विजयकुमार छाजेड, सासारिक दृष्टि से साध्वीजी का पोता आज अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। मैं ही नहीं, हमारा पूरा छाजेड परिवार अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा है ऐसी महान आत्मा को प्राप्त कर। साध्वी श्री लिछमा जी ने अपने मन पर नियत्रण कर अपने जीवन को धन्य बना लिया है। क्यों न हम भी उनके इस पवित्र जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनाएँ। चाहें हम बडी-बडी तपस्या उन जैसी न कर सकें तो भी छोटे-छोटे अणुव्रतों के सकल्प तो अवश्य ही ग्रहण कर सकते हैं। इन्हीं छोटे-मोटे सकल्पों से हम अपने जीवन को पवित्र, उज्ज्वल एव आदर्श बनाएँ। इस सकल्प के साथ- जय भिक्षु, जय तुलसी, जय महाप्रज्ञ।

※विजयकुमार छाजेड
(पौत्र)

धन्य किया अवतार

(लय : तुमको लाखों प्रणाम)

सतिवर लिछमा ने, धन्य किया अवतार, सतिवर
उतरी भव जल पार, सतिवर .

भर यौवन में मन को मारा, प्रिय पति के सह सयम धारा
छोड पुत्र परिवार ॥1॥

जिन शासन की आब बढाई, सयम सुषमा शिखर चढ़ाई
कर-कर पाद विहार . ॥2॥

इद्धुजी के साथ प्रेम से, पय-मिश्री सम रही क्षेम से
मॉ-पुत्री सा प्यार ॥3॥

कला-कुशल, व्यवहार, कुशलता, वाणी में थी बहुत मधुरता
पाया जन-सत्कार . ॥4॥

तप में अग्रगण्य पद पाया, लाखों का जप करा-कराया
खूब निकाला सार .. ॥5॥

सयम जीवन पर अनशन धर, कलश चढ़ा छाजेड वश पर
मुनि जीवन शृगार... ॥6॥

मुनि 'पीयूष' अमर पद पाओ, सुखे-सुखे शिवपुर मे जाओ
ये मगल उद्गार... ॥7॥

(31 7.2001)

❊ मुनि धर्मचंद 'पीयूष'

दो कुल श्रृंगार

(लय श्रद्धा स्वीकारो ..)

साध्वी लिछमा ने, उच्चादर्श गजब (जबर) दिखलायो
उत्तम भावा स्यू जीवन उन्नत, सफल बनायो।
थारे साहस री महिमा अपरपार हो, वीर सुता साकार हो।
मोह ने दियो पछाड हो, बण्या दो-कुल श्रृंगार हो। उच्चादर्श

भर यौवन में सभी सुखाने, ठुकराकर सयम धार्‌यो,
मेर सम मन ने अडोल कर, मोह दैत्य ने थे मार्‌यो।
हो सतिवर! सुत की ममता भी, बॉध सकी न लिगार हो ॥1॥

पति ने भी समझा दीक्षा हित, साथ-साथ तैयार कर्‌या,
दु ख-मुक्तिरे पथ पर लाकर, जग में भारी सुयश वर्‌या।
हो सतिवर! इन्द्रिय सुख, दु ख मूल, जाण्या नि सार हो ॥2॥

पितामह (दादा) हा, ताराचदजी, भेरूदानजी पिता प्रवर,
भ्राता एक, तीन बाया ही, लघु वय में हा घणा चतुर।
हो सतिवर! धार्मिक सपन्न मिला, पीहर-परिवार हो ॥3॥

पन्नालालजी श्रावक, श्रावक रत्न पुत्र सह परणाई,
थारे पुत्री एक, पाच सुत- में तृतीय सुतने व्याही।
हो सतिवर! पाया पति फतह- हुई, खुशियाँ साकार हो ॥4॥

झँवरलाल छाजेड एक सुत, होते ही वैरागी बन,
सात बरसरे सुत ने दादा, पास छोड तज स्नेह बधन।
हो सतिवर! तुलसी गुरु शरण ग्रही, हद हिम्मत धार हो .॥5॥

इद्रूजीरे साथ दिया, दीक्षा लेता ही गुरुवर ने,
एक स्थान बाबन वरसातक, रही एक कर तन-मन ने।
हो सतिवर! देख्यो म्हे, मा-बेटी सो निर्मल प्यार हो ॥6॥

दीक्षा लेता ही निज मन ने, ज्ञान-ध्यान में लगा लियो,
त्याग-तपस्या करके सचित, कर्म-कर्ज ने क्षीण कियो।
हो सतिवर! की तपस्या बडी-बडी, थे तो केई बार हो. ॥7॥

इद्रू जीरे साथ दूर प्राता में खूब विहार कर्‌यो,
कर प्रभावना शासन री, जन-जन में भारी सुयश वर्‌यो।
हो सतिवर! अब भी बे-याद करे, सगला नर-नार हो .॥8॥

घटना घटी सापरी कोटा में प्रभावना हुई घणी,
केसररी बरसात हुई, विस्मित जन-नूतन बात बणी।
हो सतिवर! पावनता री बगिया मे, आई बहार हो . ॥9॥

पूर्व वेदनी कर्म उदय में, आया तन में कष्ट हुयो,
भिन्न समझ चेतन-तन, सही वेदना मन सतुष्ट रह्यो।
हो सतिवर, भागी हा पायो गुरु- सान्निध्य उदार हो ॥10॥

आपा सौभागी हा, जैन धर्म, भैक्षव शासन पायो,
गणाधिप्रति तुलसी गुरु, महाप्रज्ञ रो सिर पर है सायो।
हो सतिवर! निश्चित ही होसी, अपणो बेडो पार हो ॥11॥

मुनि 'प्रमोद' री हृदय भावना, कर्म मुक्त अति शीघ्र बणो,
पावन तम जीवन जीयो थे, सुख ही सुख है आगे तो।
हो सतिवर! शाश्वत सुख, निश्चित पास्यो आखिरकार हो ॥12॥

देवर मुनिया ने धार्मिक, सहयोग सदा देता रहिज्यो,
जिसो आपरो हो वात्सल्य, सवायो आगे राखीज्यो।
हो सतिवर! आसी बो याद, सदा माता सो प्यार हो ॥13॥

आध्यात्मिक सहयोग समय पर, कर सचेत म्हाने करणो,
जिण सू सलेखणा-सथारो, कर समाधिमय हो मरणो।
हो सतिवर! देती रही अब तक तो भौतिक उपहार हो
हो सतिवर! होसी धार्मिक सहयोग, सही उपहार हो ॥14॥

पति ने भी दीक्षा हित ज्यू सहयोग कर्‌यो आगे करणो,
जिणस्यू वेभी समाधिस्थ हो,रहे सदा ओ ही कहणो।
हो सतिवर! अपणो कर्तव्य निभाज्यो, फर्ज विचार हो ॥15॥

साध्वी इद्रूजी-पूनाजी ने आघात लग्यो भारी,
फिर भी समझदार है वे, खुद समझ रह्या है स्थिति सारी।
हो सतिवर! दुखमय सयोग- वियोग भरा ससार हो ॥16॥

(1 8 2001)

❋मुनि मगनमलजी 'प्रमोद'

पा लिया भवसागर का पार

(लय : बना मन मंदिर आलीशान...)

धन्य लिछमा जी (भाभीजो) का अवतार, निकाला नश्वर तन से सार।
अनशन चौविहार स्वीकार, पा लिया भव सागर का पार, धन्य लिछमा जी .।

बन वीरागना, सयम धारा, चढ़ते यौवन में मन मारा।
बहुत था पति-पत्नी का प्यार, निकाला. ।।1।।

सयम निर्मलता से पाला, लगा दिया दुर्गति के ताला।
खुल गया मोक्ष नगर का द्वार, निकाला. ।।2।।

बावन वर्षों एक स्थान पर, रही एक बन यथा क्षीर-जल।
हुई गण की गरिमा साकार, निकाला.. ।।3।।

माता सम वात्सल्य मिला जो, सब सतियों का हर क्षण हमको।
याद आती स्मृतियाँ हर बार, निकाला.. ।।4।।

चुन्नीलालजी का सथारा, अजब-गजब का याद नजारा।
उसी पथ को कर अगीकार, निकाला. .।।5।।

इच्छाओं पर काबू पाना, सरल न तन-आसक्ति हटाना।
बडे योद्धा भी जाते हार, निकाला ..।।6।।

इसमें जो विजयी बन जाते, भव सागर से वे तर जाते।
सफल पर कम होते नर-नार, निकाला ।।7।।

विजय आपने निज पर पाई, देते लाखों आज बधाई।
कुल की गौरव! लो उपहार, निकाला .।।8।।

कर्म-शत्रु पर विजय करो तुम, शाश्वत सुख अतिशीघ्र वरो तुम।
यही हम सबके हृदयोद्गार, निकाला ॥9॥

भाग्य शालिनी भाभीजी हो, गुरु सान्निध्य मिला तुमको तो।
मगन मुनि होगा जय-जयकार, निकाला ॥10॥

मिले सभी को ऐसा अवसर, हो सहयोग वक्त पर सतिवर!
यही होगा सच्चा उपहार, निकाला ॥11॥

जैन धर्म भैक्षवगण पाया, तुलसी-महाप्रज्ञ का साया।
आत्म प्रेक्षा कर, हों निर्भार, निकाला ॥12॥

शशि सम महाश्रमण शीतल है, महाश्रमणी गंगा का जल है।
बने ॐ अर्हं जप गलहार, निकाला ॥13॥

साध्वी इंदुजी-पूनाजी, बेला समाधिस्थ रहने की।
'मगन' जुड़ जाए निज से तार, निकाला ॥14॥

(3 8 2001)

मन को मोड़ लिया

लय-मालकोश

ओ सतिवर! भारी हिम्मत धार, बन वीरागना।
मोह दैत्य को, रण में दिया पछाड, ओ सतिवर!

सोई आत्म शक्ति जागृत कर, किया पार तुमने दु ख सागर।
मानव, दानव, देव विषय सम्मुख, खा जाते हार॥

ओ सतिवर ॥1॥

विषयों से निज मन को मोडा, सयम पथ से नाता जोडा।
प्रेम पाश को तोड सके, ऐसे बिरले नर-नार॥

ओ सतिवर ॥2॥

था गहरा सबध परस्पर, और जबर थी ममता सुत पर।
तोडा तृणवत् मानो बनकर, वीतराग साकार॥

ओ सतिवर ॥3॥

छोड देह की आसक्ति को, निज में रमना आत्मलीन हो।
मुश्किल, सरल बनाया, अनशन चौविहार स्वीकार॥

ओ सतिवर. .॥4॥

अर्धांगिनी तुम जैसी पाकर, भाग्य सराहता पकज मुनिवर।
तेरे वचन तीर से मैंने, किया दुखोदधि पार॥

ओ सतिवर ॥5॥

सतत बावन वर्ष एक स्थल, सफल किया जीवन का पल-पल।
सबके दिल में स्थान बनाकर, पाया सबका प्यार॥

ओ सतिवर ॥6॥

जीवन पर यह कलश चढ़ाया, दोनों कुल का सुयश बढ़ाया।
दृढ़ मन-बल से अंत समय, बन पाई कुल-शृंगार॥

ओ सतिवर ॥7॥

भाग्य शालिनी थी तुम भारी, गुरु सान्निध्य मिला सुखकारी।
च्यार-तीर्थ का ठाट लगा, भागिन के आखिरकार॥

ओ सतिवर ॥8॥

कर्म मुक्त हो शिव सुख पावो, "पंकज" आवागमन मिटावो।
मगन, धर्म, पंकज तीनों के, हैं हार्दिक उद्गार॥

ओ सतिवर ॥9॥

हम सब हित सहयोगी बनना, करना सजग समय पर तुम आ।
अब तक के उपहारों से यह, होगा श्रेष्ठ उपहार॥

ओ सतिवर ॥10॥

जैन धर्म, भैक्षव गण पाया, हम सबका है भाग्य सवाया।
महाप्रज्ञ, महाश्रमण कृपा से, होगा जयजयकार॥

ओ सतिवर ॥11॥

(1 8 2001)

*मुनि फतहचंदजी 'पंकज'

हीरां रो ताज

(लय : म्हांने चाकर राखोजी...)

थे सथारो ठायो जी, थे सथारो ठायो जी
माटी रे तन पर हीरा रो, ताज सजायो जी
माटी रे तन पर रत्ना रो, ताज सजायो जी

तुलसी गुरु रे कर कमला स्यू, सयम सुरमणि पायो।
महाप्रज्ञ गुरुवर चरणा थे, जबरो साज सजायो ॥1॥

फतहचद मुनि री जोडायत, साध्वी लिछमा नाम।
युवाचार्य वरस्यू पचरव्यो, सथारो दृढ परिणाम ॥2॥

इद्रुजी री अनुगामी बन, विचर्‌या ग्रामोग्राम।
बीदासर, गुरुवर चरणा में, कर्‌यो जोर को काम ॥3॥

मानव भव, सयम जीवन रो, पूरो लावो लिन्हो।
सुण-सुण कर सतिवर री महिमा, फूले म्हारो सीनो ॥4॥

महाश्रमणीजी समय-समय पर, पूरो साझ दिरावे।
चार तीरथ रो जोग "कमल मुनि", बड भागी नर पावे ॥5॥

दोहे

सतत्तर वय में कर्‌यो, सथारो सोत्साह।
युवाचार्य-आचार्य वर, पूर्ण कराई चाह ॥1॥

धन्य-धन्य लिछमा सती, सफल कियो अवतार।
बीदासर गुरु चरण में, स्वप्न कियो साकार ॥2॥

*मुनि कमलकुमारजी

सुयश कमायो

(तर्ज स्वामी भीखण जी रो नाम.)

सर्व सुहागण भागण, सुगुरु चरण में सुजश कमायो।
दृढ परिणामा चांदासर में, जबरो अनशन ठायो

भैरूदान डागा घर जाई, चुन्नीलाल-सुत सह परणाई।
संयम लेवण जोडे स्यु फिर देखो, मन उम्हायो ।।1 ।।

पुत्र जवर ने लाडे पाल्यो, पति-पत्नी संयम संभाल्यो।
होया फतहचन्द मुनि- लिछमा जी रे, मनरो चायो ।।2 ।।

तुलसी गुरु कर संयम पायो, अपने मन रो कोड पुरायो।
लियो जिस्यो ही शूर वृत्ति स्यू, खेवो पार लगायो ।।3 ।।

मगन, धर्म, फतह, मुनिव्रत स्वामी, शासन में है चारु नामी।
चुन्नीलालजी छाजेड़, नव इतिहास बणायो ।।4 ।।

चन्दा, शांता सतियां प्यारी, जिणरी कावी श्री सुखकारी।
सात दीक्षा एक घर की, सुण कर मन हर्षायो ।।5 ।।

स्मृति में अनुगामी बण, सफल बणायो अपणो क्षण-क्षण।
अन्तिम श्वास तक, विश्वास अपणो खूब जमायो ।।6 ।।

कलश चढ़ायो

(लय : नखरालो देवरियो...)

साध्वी श्री लिछमा जी! दीपै थारो सथारो।
अब जीतो थे बाजी, पावो भवस्यू छुटकारो।।

श्री तुलसी गुरुवर चरणा मे, सयम सुरमणि पायो।
जोडे स्यू दीक्षित होकर थे, जीवन सफल बनायो।।1।।

दीक्षित होकर साध्वी इन्द्रूजी रा बण सहगामी।
देश-प्रदेशा विचर-विचर, जन-जन री मेटी खामी।।2।।

माटी रे मदिर पर थे तो, तप रो कलश चढ़ायो।
सथारे स्यू धर्मसघ रो, गौरव घणो बढ़ायो।।3।।

महाप्रज्ञ-महाश्रमण पूज्यवर, चरणा रो शुभ शरणो।
महाश्रमणी रो साझ मिल्यो, अब भवस्यू पार उतरणो।।4।।

जिण ऊचे परिणामा स्यू थे, सथारो स्वीकार्‌यो।
उण जागृत चैतन्य भाव स्यू, इण ने पार उतारो।।5।।

(1 8 2001)

*मुनि चैतन्यकुमारजी

बाजी जीत ली

(तर्ज स्वामी भीखण जी रो नाम...)

सतिवर लिछमा जी री बारबार बलिहारी।
साहस रो परिचय दे, कर अनशन निज नैया तारी।
जीवन री थे जीती बाजी।
अनशन चौविहार कर तन, आसक्ति मेटी सारी

बणग्या यौवन में वैरागी
दम्पति ने मोह-ममता त्यागी (परिकर री ममता ने त्यागी)
बावन वर्षों तक संयम पालन कर आत्म उजारी।।1।।

तुलसी गुरु कर संयम धार्यो
निर्मल वृत्ति स्यूं पार उतार्यो
आखिर गुरु-चरणा में खिलोग्यो भाग्य फूलवाडी।।2।।

था आपा सगला सौभागी
पायो भैक्षव गण किस्मत जागी
महाप्रज्ञ गुरुवर पथ दर्शक, ज्यारो महिमा भारी।।3।।

थे वारांगना अनशन धार्यो
चढ़ते भावा पार उतार्यो
इंगित हृदय भावना, बणो शीघ्र तुम शिव अधिकारी।।4।।

※मुनि मुनिव्रतजी

रजपूती रंग रचायो

(लय : दीपां जी रा जाया...)

सतिवर लिछमा जी रै अनशन री, आ छटा सुहाणी
अनशन री सौरभ स्यू बीदासर नगरी महकाणी...

केन्द्र समाधि बीदासर, ओ सौभागी बडभागी
किता-किता री इण धरती पर, नाव किनारे लागी
गुरु किरपा सू आ धरती है, गुण रत्ना री खानी ।।1 ।।

दो मातावा इण धरती पर, तेज तप्यो हो भारी
साध्वी प्रमुखा लाडा रो, ओ बीदाणो आभारी
बलिदानी साधु-सतिया री, इण स्यू जुडी कहानी
बलिदानी श्रावक समाज की, इण स्यू जुडी कहानी ।।2 ।।

सार निकाल्यो इण देहीरो, सतिवर थे लिछमा जी।
अणसण री छवि छाजी अब तो, परिणामा पर बाजी
बढते-चढ़ते भावा स्यू पाओ मजिल कल्याणी ।।3 ।।

तन अशक्त, मन मजबूती, रजपूती रग रचायो
कर्म कटक स्यू लोहो लेवण, हद साहस दिखलायो
अतुल मनोबल आगै जाणक, मौत हुई शरमाणी ।।4 ।।

धन्य-धन्य सतिवर लिछमा जी! लाख-लाख शाबासी
पूर्ण समाधि में जोडी हो, आत्मा स्यू इकलासी
गुरु चरणा मे जागी है, थारी जबरी पुनवानी ।।5 ।।

(3.7.2001)

*साध्वी जिनप्रभाजी

तप री तेज हथोड़ी

(तर्ज   संयममय जीवन हो .)

जीवन धागा मोला
कलेवर-आसन पर आत्मा म्यू एकतारो जोड़ी

गुरु जाण्यो साध्वी लिछमा जी, यू अणनण आदर्शो
गुरुवर रै चौमासै रो यू, लाभ सवायो वरसां
गर्भ वटिया काटण भागा, तप री तेज हथोड़ी ॥1॥

एक लाख न धीमत गो- संयम मय जीवन जीणो
सवा लाख वण गिरे, पति मरण सुधा रस पीणो
निरखणो [illegible] साध्वी [illegible] ॥2॥

साध्वी प्रमुखा जब-जब दरसण, दे करुणा बरसावे
उण छिविया चेहरै री आभा, अद्भुत ही खिल जावे
[illegible] आत्मा म्यू पालारी, अनुपम ली [illegible] ॥3॥

[illegible] करना सनि [illegible]-रो संरक्षण पायो
तप, [illegible], साध्वी प्रमुखा- रो उपकार [illegible]
[illegible] करो कर जोड़ी ॥4॥

सात वर्ष रो पुत्र झँवर हो, उण रो भी मोह त्याग्यो
सयम रे मारग चालण रो, दोन्यू कीन्यो सागो
गुरुवर श्री तुलसी-चरणा मे, दीक्षा हुई सजोडी ॥7॥

ससुरालय परिकर रा अगणित, सुमन खिल्या शासण में
दो देवर, जेठूतो, दो जेठूत्या दीपै गण में
भावी पीढी रै खातिर थे, सडक बणाई चौडी ॥8॥

पुत्र-पुत्रवधू हाजिर थारे, पोता पॉच सुहाया
राजू, बीजू अनशन री आ, छटा निहारण आया
अतिम बाजी जीतो घणी गई, अब रहगी थोडी ॥9॥

(31.7.2001)

*साध्वी जिनप्रभाजी

जाग्यो आत्माराम

(लय तोता उड़ जाना.)

जाग्यो आतम राम, साध्वी निर्मला जी
पाया है वांछित धाम, साध्वी

[illegible] हिम्मत धारी मन में-
मोड़ा मार्ग [illegible] जीवन में
आशा फली [illegible], साध्वी ॥1॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] पार उतार्यो
[illegible] [illegible] प्रणाम, साध्वी ॥2॥

धिन धिन लिछमां जी

(लय : चिरमी...)

धिन-धिन लिछमा जी
थे कीन्हो जबरो काम, जाग्यो है आत्माराम, धिन.

घणा बरस स्यू इन्द्रूजी की, साझी सेवा भारी
अबे आप खुद सेवा लेवण री कर ली तैयारी
काई उतावल लगी जावण नै सुरगा धाम . ||1||

सौभागण भागण हो पायो, ओ दुर्लभतम मौको
गुरुवर, महाश्रमणी को सायो, आयो स्वर्णिम झोंको
नैया पार लगावसी, सारे है वाछित काम ||2||

चढ़ते परिणामा श्री मुख से, थे अनशन स्वीकार्‌यो
सिह वृत्ति स्यू पार उतारो, जो निज मन में धार्‌यो
भावा री बाजी अबै, जीतिज्यो ओ सग्राम . ||3||

आत्मा भिन्न- शरीर भिन्न है, पल-पल स्मृति में राखो
देव-गुरु री शरण सातरी, केवल भीतर झाको
आको आया कर्म रो, पहुचोला मुगतिधाम, धिन.. ||4||

(2.8.2001) ❊साध्वी चंदनबालाजी

केसर छींटे बरसाए

(लय · चैत्य पुरुष जग जाए...)

गुरुवर की पा महर नजर, जीवन आदर्श बनायें।
गण का गौरव गायें
मजिल पर बढ़ने का प्रतिपल, हम सकल्प सजायें

भरी जवानी में शुभ भावों से सयम अपनाया
अतिम अनशन कर तुमने निज कुल पर कलश चढ़ाया
भौतिकता से मुखडा मोडा, गाएँ गुण गाथायें ॥1॥

बदले सभी रसायन तुमने, भारी दृढ़ता धारी
तप-जप में तल्लीन बनी, जागी पुण्याई सारी
उजले भावों से देखो, श्रमणी गण आज बधाएँ ॥2॥

दिये साँप ने आटे पग में, नहीं तनिक घबराई
ध्यान-जाप में मस्त बनी तुम, मैत्री धार बहाई
चमत्कार, देवों ने तब, केसर छींटे बरसाए ॥3॥

मुनि फतह की तुम जोडायत, फतह करी है भारी
सहज भाव से अनशन कर, मृत्यु की कला निखारी
हिम्मत की पतवार हाथ ले, गण की आब बढ़ाए ॥4॥

आया स्वर्णिम अवसर, पाया गुरुवर का सुखसाया
महाश्रमणी के चरणों में अनशन का रग लगाया
साध्वी लिछमा जी की हम सब, बली बलिहारी जाएँ ॥5॥

(4 8 2001)

*साध्वी सुषमाकुमारीजी

शासन नंदनवन

(लय : वाह वाह वीर प्रभु...)

वाह वाह लिछमा जी, काढा जीवन का सार, जोडा प्रभु से तार॥

नश्वर तन के मोह को छोडा, बाह्य आकर्षण से मन मोडा।
थारे बरसी अमृत धार॥1॥

बावन वर्षासयम पाला, सथारे से करा उजाला।
अतिम मे जय-जयकार॥2॥

गगाशहर धरा चमकाई, चाचीजी को खूब बधाई।
बीदासर लगी बहार॥3॥

प्रभु चरणा में नैया तारी, प्रमुखा श्रीजी है उपकारी।
भवजल से बेडा पार॥4॥

जोडे से दीक्षा स्वीकारी, जयपुर नगरी में सुखकारी।
(बेटा झवरी दिलदार) ओ छाजेड वश सिणगार॥5॥

सचमुच सारे हैं सौभागी, पाया शासन किस्मत जागी।
यह नदन बन गुलजार॥6॥

सात पुष्प श्री चरणो में आए, गौरव सुन जन विस्मय पाये।
किया आत्म उद्धार॥7॥

*साध्वी शांताकुमारीजी

वाह-वाह लिछमां जी

(लय धरती धोरा री...)

वाह वाह लिछमा जी (3)। वाह वाह भुवाजी।
सचमुच आप बडे सौभागी, भर यौवन में बने विरागी।
जोडे से सुख सुविधा त्यागी। वाह वाह लिछमा जी।

छ वर्षों के सुत को छोडा, कठिन स्नेह पाश को तोडा।
नश्वर जग से मुखडा मोडा, गुरु चरणों से नाता जोडा।।
वाह वाह ।।1।।

डागा कुल में जनमी सुखकारी, श्वसुराल छाजेड सस्कारी
जागी पुन्याई हद भारी।। वाह वाह ।।2।।

बावन वर्षों सयम पाला, इन्द्रूजी का योग निराला।
जीवन को है खूब उजाला।। वाह वाह ।।3।।

सलेखन में कर के अनशन, आत्मालीन बनी तुम क्षण-क्षण
टूटे जनम-जनम के बधन।। वाह वाह ।।4।।

तुमने जीवन नैया तारी, महाप्रज्ञ सन्निधि सुखकारी।
महाश्रमणी जी बने उपकारी, चार-तीर्थ का सगम भारी।।
वाह वाह ।।5।

※साध्वी संवेगप्रभाजी

शांताकुमारी

नव इतिहास बणायो

(लय : गुरुवर...)

हो जय-जय बोलो, लिछमा जी री गण चमकायो।
हो गगाणै री हीरकणी ने रग लगायो॥

दो हजार छवकी सवत् में, तुलसी सायो पायो।
हो सजोडो गुलाबी नगरी, नव इतिहास बणायो॥1॥

सिह वृत्ति स्यू बावन वर्षा-लग सयम पाल्यो।
हो आशक्ति पदार्था री तज, कुल पर कलश चढायो॥2॥

सदी बीसवीं जन्म्या, ब्याहा, फिर सयम अपनायो।
इक्कीसवीं गुरु चरण शरण मे आको आयो॥3॥

ममतामयी मॉ महाश्रमणी जी, अद्‌भुत साज दिरायो।
हो शिक्षामृत प्यालो पाकर, जीवन सरसायो॥4॥

आधि-व्याधि-उपाधियॉ तो, उग्र रूप दिखायो।
हो महाप्रज्ञ-महाश्रमण शक्ति, पुरुषत्व जगायो॥5॥

सम, दम की कर सफल साधना, वश छाजेड दिपायो।
हो! उत्तरोत्तर आत्मा विकास हो, जेठूत्या है गायो॥6॥

❀ साध्वी चंद्रावतीजी

आछो लाग्यो रंग

(लय · सासु लड मत...)

धन्य लिछमा जी- गुरु चरणा धार्‌यो अनशन।
सेवा मेवा सागे, टाल्यो जन्म जन्मातरो।।1।।

खूब ही सजग हुनर- चतुराई ही हाथ में।
अब तो अमृत समन्दर में थे गागरी भरो।।2।।

याद आवे चाकरी में दियो सहयोग जो।
अब काई हुई बीमारी, नहीं ठाह भी पड्यो।।3।।

कमस्यू कम चौमासा भर सेवा तो करावता।
गुरु चरणा अचानक जाता तो भी हो भला।।4।।

महाश्रमणी जी साथ जमघट सतियारो भी मोकलो।
खूब धूमधाम मोच्छ व होसी थारो सान्तरो।।5।।

साध्वी इन्द्रूजी, साध्वी पूना मोह निवारज्यो।
साध्वी श्री लिछमा जी रो, आपरे हो भारी आसरो।।6।।

धन्य-धन्य धार्‌यो, चौविहार भी सथारो थे।
आछो लाग्यो रग, 'कमल श्री जी' विजय वरो।।7।।

चेहरो चम-चम चमके

धन्य धन्य लिछमा सती थे तो, जबरो जोश दिखायो।
मन री ममता मार, धार अनशन जीवन चमकायो॥

जैन धर्म भैक्षव गण पायो, महाप्रज्ञ रो सायो।
महाश्रमण, महाश्रमणी वर आशीर्वर थे पायो॥1॥

बढ़ता-चढ़ता भावा स्यू थे, सलेखना तप ठायो।
प्रतिदिन देख सजगता थारी, सबरो मन चकरायो॥2॥

महाश्रमणी रो पल-पल सबल- मिलतो रेवे सवायो।
रू रू हरसे कण-कण बिकसै, मन-उपवन सरसायो॥3॥

बिदाणे री पुण्य धरा पर, रग सुरगो छायो।
अनशन महिमा महक रही, चेहरो चम-चम चमकायो॥4॥

:: साध्वी चांद कंवरजी

बालोतरा तेरापंथ भवन में ...



साध्वी लिछमाजी अपना प्रभावी उद्बोधन देते हुए



साध्वी इंदुजी, साध्वी लिछमाजी व साध्वी सम्वेगप्रभाजी
मच पर अपने उद्गार प्रकट करते हुए

समाधि केन्द्र बीदासर में स्थिरवास के दौरान

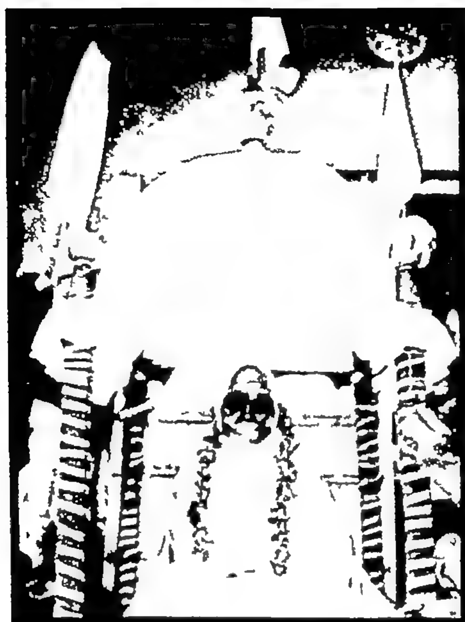


साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी, साध्वी लिछमाजी के सथारे की कुशलक्षेम पूछते हुए



साध्वी लिछमाजी के सथारे पर पास मे चाँदकँवरजी जिनकी चाकरी थी

समाधि केन्द्र बीदासर में स्थिरवास के दौरान



साध्वी लिछमाजी के संथारा सम्पन्न पर बैंकुटी मे



बैंकुटी के पास राजेन्द्रजी छाजेड, पूनमचंदजी छाजेड़, झँवरलालजी छाजेड़,
श्रीमती सूरजदेवी छाजेड़ व बहिन राजाबाई

जैन शासन, भैक्षवगण की
गरिमावर्धक अनशनकारी साध्वी
श्री लिछमां जी

संसारपक्षीय पति **मुनि फतहचंदजी 'पंकज'**

देवर **मुनि श्री मगनमलजी 'प्रमोद'**

मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष'

जेठूता **मुनि मुनिव्रतजी**

जेठूती **साध्वी चंद्रावतीजी**

जेठूती **साध्वी शांताकुमारीजी**

भतीजी **साध्वी संवेगप्रभाजी**

आदि संबंधित

पवित्र आत्माओं के

परिचय प्रदायक

दूसरा प्रकरण

अनुक्रम : द्वितीय प्रकरण

वि. सं. 2058, उदासर तेरापंथ भवन में ...



आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से वार्तालाप करते हुए मुनिश्री मगनमलजी "प्रमोद"



युवाचार्यश्री महाश्रमणजी के साथ प्रमोद भावभरी मुद्रा मे
मुनिद्वय मुनिश्री मगनमलजी "प्रमोद" व मुनिश्री फतहचदजी "पकज"

630/9/119 मुनि फतहचंदजी का परिचय

(दीक्षा सवत् 2006 वर्तमान)

गंगाशहर

मुनि फतहचदजी का जन्म गगाशहर (राजस्थान प्रात, बीकानेर सभाग) के छाजेड (ओसवाल) गोत्र में सवत् 1980 ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को आधी रात में हुआ। पिता का नाम चुन्नीलालजी, माता का नाम धापूदेवी था। परिवार-माता-पिता के सिवाय (बहनोई श्री जेसराजजी सुराणा, एक बडी बहन पानाबाई, दो बडे भाई सेरमलजी, सूरजमलजी, दो छोटे भाई मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद', मुनि श्री धर्मचदजी 'पीयूष', दो भाभियाँ, अनेक भतीजे-भतीजियाँ, पुत्र-पुत्रवधू, पोते-पोतियाँ तथा पडपोते-पडपोतियाँ। फतहचदजी का 13 वर्ष की अवस्था में ही विवाह वि स. 1993 फाल्गुन मास में स्थानीय भेरूदान जी डागा की पुत्री लिछमा जी के साथ कर दिया गया। वि स 1999 मिगसर पूनम 9 12.1942 को एक पुत्र हुआ, जिसका नाम झँवरलाल रखा गया। धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील एव सस्कारी माता-पिता के योग से फतहचदजी की बचपन से ही धर्म के प्रति रुचि बढ़ती गई। अनेक थोकडे कठस्थ कर लिए।

छोटे भाई मगनमलजी, धर्मचदजी के दीक्षित होने पर धार्मिक अनुराग अधिक बढ़ता गया। वि.स 2004 में फतहचदजी की पत्नी लिछमा जी के मन में दीक्षा लेने की भावना जागृत हुई। फिर उनकी प्रबल प्रेरणा से वे भी दीक्षित होने के लिए तैयार हो गए। पति-पत्नी दोनों ने सकल्पबद्ध होकर ब्रह्मचर्य व्रत की साधना की। पति-पत्नी में कैसे सवाद हुआ, पूरा विवरण साध्वीश्री लिछमा जी के जीवन प्रसग में देखें।

दीक्षा :- 26 वर्ष की भर यौवन अवस्था में पति-पत्नी दोनों की दीक्षा युगप्रधान अणुव्रत अनुशास्ता राष्ट्रसत आचार्य श्री तुलसी के पावन कर कमलों से जयपुर शहर में वि स 2006 कार्तिक कृष्णा अष्टमी को सानद सपन्न हुई। वृद्ध माता-पिता तथा 7 वर्ष के पुत्र के मोह को छोडकर अत्यत वैराग्य से सब प्रकार की अनुकूलताओं के बावजूद दीक्षा ली।

माता-पिता का महान त्याग - दो बडे पुत्र तो पहले से ही अलग थे। अपने साथ

वाले तीन पुत्रों में दो को एक-एक करके पहले दीक्षा की अनुमति देकर माता-पिता दीक्षा दिलाने मे सहयोगी बन चुके थे। यह भी उनका महान त्याग था। पर एकमात्र अपने साथ मे रहे हुए कमाऊ पुत्र तथा पूरा घर का काम सभाले हुए पुत्रवधु को 7 वर्ष के पोते का जजाल गले में रखकर 66 वर्ष की वृद्धावस्था में दीक्षा के लिए अनुमति दे देना कितना कठिन होता है। ऐसी कुर्वानी तो धर्म के साकार अवतार चुन्नीलालजी जैसे महान आत्मार्थी महामानव ही कर सकते हैं। महात्याग का सुपरिणाम भी सामने आया। पुत्र-पुत्रवधु की दीक्षा के बाद 20 वर्ष से अधिक उनकी छत्रछाया पौत्र झॅवर को मिली। झॅवर का पालन-पोषण, शादी, एक पडपोती, दो पडपोते उनके जीवन काल में हो गए। पौत्र झॅवर तथा पोताउ बहू श्रीमती सूरज ने दादे-दादी की खूब सेवा भी की। दादे-दादी के अत करण से सहज प्राप्त आशीर्वाद से पौत्र झॅवर के 5 पुत्र, पुत्रवधुओं, पौत्र-पौत्रियों का भरा-पूरा परिवार है तथा लामडिग (आसाम) में बहुत बडा कारोबार चल रहा है। उनके इस धार्मिक जीवन के अनुरूप ही अतिम समय में बडे-वडे सतों को भी नहीं आए, वैसा सथारा भी श्री चुन्नीलालजी को आया, यह अलग लेख का विषय है।

दीक्षित हो मुनिश्री फतहचदजी एक साल गुरुकुल वास मे रहे। फिर उन्होंने चार साल मुनि श्री पूनमचदजी (484) गगाशहर के साथ सौराष्ट्र की यात्रा की। वि.स. 2012 का चातुर्मास मुनिश्री राकेश कुमारजी (603) सुजानगढ के साथ जलगाँव में किया। तत्पश्चात आचार्य प्रवर ने मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद' का सिघाडा करवा दिया। तब मुनि फतहचदजी और दूसरे भाई धर्मचदजी को (तीनों भाइयों को) साथ रखा। मुनि फतहचदजी अपनी आकर्षक गायन कला तथा प्रभावक प्रवचनो के द्वारा धर्म प्रचार आदि कार्यों में उनके पूर्णत सहयोगी रहे। राजस्थान के अतिरिक्त दूर-दूर प्रांतों- गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, उडीसा, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब आदि की यात्राएँ की। सवत् 2039 के नाथद्वारा मर्यादा महोत्सव के समय गुरुदेव ने मुनि धर्मचदजी का सिघाडा करवा दिया। तब वे अलग विहार करने लगे। मुनि फतहचदजी मुनि मगनमलजी के साथ विहरण करते रहे। कुछ वर्षों से मुनि मगनमलजी शारीरिक अस्वस्थता के कारण गगाशहर चोखले में रहे। वि स 2052 से उदासर में स्थिरवास कर रहे हैं। मुनि फतहचदजी उनकी परिचर्या में सदैव तत्पर रहे और तत्पर हैं। 80 वर्ष की अवस्था, कमर में भारी दर्द तथा श्वास की भयकर तकलीफ होने पर भी अपने मनोबल के आधार पर अपने शरीर की किंचित मात्र भी परवाह न करते हुए चौबीस ही घटे छाया की तरह स्वय के कार्य के साथ मुनिश्री के हर कार्य में सहयोगी

566/9/55 मुनि मगनमलजी 'प्रमोद'

एक परिचय

दीक्षा · स. 1999 वर्तमान

जन्म : स 1984 भाद्रव पद कृष्णा चतुर्दशी, दिनाक 25 अगस्त 1927 गगाशहर में हुआ।

पिता : श्री चुन्नीलालजी छाजेड

माता : श्रीमती धापूदेवी छाजेड

वैराग्य : पूर्व जन्म के सस्कार एव परिवार में धार्मिक वातावरण होने से सहज वैराग्य भावना बनती गई। स 1999 मे मुनिश्री जसकरणजी (461) सुजानगढ़ का चातुर्मास गगाशहर था। उनके तथा उनके सहयोगी मुनिश्री मिलापचदजी (497) बीदासर के उपदेश से दीक्षित होने का दृढ़ निश्चय कर लिया। तत्वज्ञान में, पच्चीस बोल, चर्चा, तेरह द्वार, लघु दडक, बासठिया, गतागत तथा सजया आदि कई थोकडे कठस्थ किये। 15 वर्ष की किशोरावस्था में माता-पिता, भाई प्रमुख भरे-पूरे परिवार को छोडकर वि स 1999 कार्तिक कृष्णा अष्टमी को आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से अन्य तेरह मुमुक्षु भाइयो तथा 14 मुमुक्षु बहनो के साथ दीक्षित हो गए। तेरापथ धर्मसघ में 14 भाइयो की एक साथ दीक्षा होने का यह प्रथम अवसर था।

सहप्रवास : मुनि मगनमलजी ने दो चातुर्मास आचार्यश्री तुलसी की सेवा में किये। वि स 2001 का एक चातुर्मास मुनिश्री नथमलजी (वर्तमान में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी) के साथ सरदार शहर में किया। तत्पश्चात लगभग 10 साल मुनि धनराजजी (419) सिरसा के साथ रहकर विद्याध्ययन किया।

शिक्षा-कंठस्थ : दशवैकालिक, उत्तराध्ययन (कुछ अध्ययन), अभिधान चितामणि, नाममाला, कालू कौमुदी, अष्टाध्यायी, व्यवहार बोध, सस्कार बोध, चौबीसी, तेरापथ प्रबोध आदि कठस्थ किये।

वाचन : आगम बत्तीसी, भ्रम विध्वसन, अनुकपा की चौपाई आदि तथा वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, पुराण, कुरान आदि ग्रथ पढे।

प्रतिलिपि . नाममाला, कालु कौमुदी, अष्टाध्यायी तथा अनेक व्यख्यान आदि के

हजारों पद्य लिपिबद्ध किये। अब भी पढ़ने-लिखने का क्रम बराबर चालू है।

साहित्य श्रीपाल चरित्र, जिनदास सुगुणी, ललितांग कुमार चरित्र, राजा भर्तृ-पिंगला आदि छोटे-बड़े 200 आख्यानों की हिन्दी भाषा में रचना की। उन्हें संग्रहीत (एकत्र) कर कृति का नाम - 'प्रमोद रस कूपिका' रखा।

अवधान अवधान विद्या का अभ्यास कर वि स 2015 पचपदरा शहर में एक सौ तक अवधान किये।

संघनिष्ठा वि स 2012 में जब मुनि धनराजजी कुछ बातों को लेकर धर्मसंघ से अलग हो गए थे, उस समय मुनि मगनमलजी और मुनि धर्मचंदजी उनके साथ 10 वर्ष से सह प्रवास कर रहे थे। पारस्परिक सौहार्द भी बहुत अच्छा था। फिर भी दोनों मुनियों ने संघ और संघपति को सर्वोच्च महत्व देते हुए उनका साथ छोड़कर संघ में बने रहने का ही निश्चय किया। यह निश्चय उनकी दृढ़ संघ निष्ठा का परिचायक और गण-गरिमा को बढ़ाने वाला था।

अग्रगण्य गुरुदेव तुलसी ने आपको सुयोग्य समझकर सं 2012 में अत्यंत कृपा करके अग्रगण्य बना दिया। साथ में 1 साल बाद दीक्षित छोटे भाई मुनिश्री धर्मचंदजी 'पीयूष' तथा ज्येष्ठ बंधु 7 साल बाद सपत्नीक दीक्षित मुनि श्री फतहचंदजी 'पंकज' को दिया। तीनों भाई 27 साल तक धर्म प्रचार करते हुए साथ रहे। वि स 2013 के प्रथम चातुर्मास-राजलदेसर में स्थविर मुनि श्री किस्तूरचंदजी की सेवा में सात मास रहे। सेवा के साथ-साथ अपूर्व धर्म जागृति हुई। बहुत तपस्याएँ हुईं। राजलदेसर के पुराने लोग आज भी तीनों भाइयों के उस ऐतिहासिक चातुर्मास को याद करते हैं। वि स 2014 में सरदार शहर में मंत्री मुनि श्री मगनलालजी की सेवा में 11 मास रहने के बाद 8 साल की प्रलंब यात्रा हुई। उसमें सिवाणची-मालानी की पद यात्रा कर प्रथम चातुर्मास बाड़मेर में किया। बाड़मेर से 2500 कि मी की प्रलंब यात्रा कर दूसरा चौमासा उत्तर कर्नाटक के महानगर हुबली में किया, फिर 1800 तथा 1200 कि मी कर्नाटक में ही पदयात्रा कर क्रमश गदग व बल्लारी में चौमासे किये। पांचवां फूलों की नगरी बंगलोर, छठा मद्रास (चेन्नई), सातवां के जी.एफ , आठवां बड़नगर (म प्र.) में कर हरियाणा में गुरु दर्शन किये। एक चातुर्मास अजमेर करने के बाद चार साल रतलाम, इंदौर, आगर, कोटा चातुर्मास किये। तीसरी 6 साल की यात्रा में महिदपुर, रायपुर (म प्र), बगुमुंडा, राउरकेला, केसिंगा (उड़ीसा) व जबलपुर चौमासे हुए। दो चातुर्मास अहमदगढ़ मंडी व फिरोज़पुर पंजाब में कर तीन चातुर्मास खानदेश (महाराष्ट्र) में शहादा, नंदाणा तथा अमलनेर करने के बाद वि स 2030 में गंगाशहर में स्थविर मुनियों की सेवा में 11 मास प्रवास रहा। सेवा के

साथ-साथ क्षेत्र की उत्तम सार सभाल करने से पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी इतने प्रसन्न हुए कि नाथद्वारा मे दर्शन करते हीगुरुदेव ने मुनिश्री धर्मचदजी का सिघाडा करवा दिया तथा पहला ही चातुर्मास बबई महानगर में करवाया। तब तीसरे सत मुनि मेतार्यजी को दिया, जो सूरत मुबई (विक्रोली), बाव, अहमदाबाद, पचपदरा, बालोतरा के छ चातुर्मासों में साथ रहे। छापर मर्यादा महोत्सव पर गुरु दर्शन करने के बाद मेवाड की राजधानी उदयपुर, देवगढ़, नोरवा, नरवाणा (हरियाणा) देशनोक, भीनासर आदि में चातुर्मास हुए।

धर्म प्रचार : दीक्षा लेते ही 2-3 वर्षों के पश्चात स 2002 के सरदार शहर मर्यादा महोत्सव से ही लबी यात्राओं का क्रम चालू हो गया, जो उदासर स्थिर प्रवास (चलने की असमर्थता के कारण) तक चालू रहा। राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, उडीसा, विहार का कुछ भाग, मध्यप्रदेश, हरियाणा, पजाब, हिमाचल प्रदेश आदि की लबी-लबी यात्राएँ प्राय तीनो भाइयो की साथ हुई, बाद में भी अच्छी यात्राएँ हुई। यात्राओ का प्रभाव बहुत सुखद, धर्म प्रभावक तथा तेरापथ धर्म सघ की गौरव वृद्धिकारक रहा। हजारों-हजारो लोग व्यसन मुक्त हुए। सुलभ बोधि व सम्यक्त्व दीक्षा लेकर श्रावक बने। सैकडो लोगों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आया। यात्राएँ सैकडों-सैकडों लोगों के जीवन को बदलने वाली सिद्ध हुईं। हजारों विद्यालयों, कारागृहों, विविध बस्तियों, जैन-अजैनों के विशिष्ट धार्मिक स्थलों और अनेकों धर्म सस्थानों में (यहाँ तक कि अजुमन कमेटी तराना आदि द्वारा आयोजित आयोजनों में मस्जिदों तक में) प्रवचन हुए।

योग्यता : आप अच्छे विद्वान, मधुरभाषी, मिलनसार, व्यवहारकुशल, शात स्वभावी, धारा प्रवाह प्रवचनकार हैं। जहाँ-जहाँ पधारे, बडी जनमेदिनी प्रवचनों में उपस्थित होती रही है। सूरत, बबई, अहमदाबाद के प्रवास काल, विश्व हिन्दू परिषद के सम्मेलनों में लाख-लाख की उपस्थिति में तथा दिगबर मुनि विद्यानदजी आदि के साथ हजारों की उपस्थिति में प्रभावक प्रवचनों की शृखला अविस्मरणीय बनी हुई है। अनेकों राजनयिको, मत्रियों, मुख्यमत्रियों, राज्यपालों, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, धर्माचार्यों, सत-महतों, विद्वानों, साहित्यकारों, पत्रकारों मे मिलन, सभाषण और साथ प्रवचन हो चुके हैं।

व्यक्तिगत संस्मरण : वि स 2006-7 के दौरान सौराष्ट्र यात्रा में भीषण उपसर्ग साप्रदायिक विद्वेष के कारण सहे। यथा-दिन में तीन-तीन जगह बदलना, वि स 2006 के धागधा चातुर्मास में अनुकूल प्रवास स्थल के मालिक को विद्वेषियों द्वारा भडकाने के

कारण छोड़ना तथा सुदामा की झोपड़ी नाम से प्रख्यात कच्चे स्थल में साढे तीन मास बिताना, 4 संतों के आहार-पानी के लिए दो-दो घंटे फिरने के बावजूद आहार की अनुपलब्धि (गोचरी मुनि मगनमलजी करते थे), पत्थर की मार सहना, वि स 2007 का जामनगर चातुर्मास किसी की अर्ज के अभाव में रहने के स्थान एकमात्र गोदाम की उपलब्धि मात्र पर करना आदि।

(2) शिमला यात्रा के दौरान स्थान के अभाव में कष्ट सहन, पाकिस्तान के बॉर्डर पर वि स 2010-11 में अबोहर, फाजिलका से अमृतसर की यात्रा के समय पाकिस्तान के जासूस समझकर लोगों द्वारा त्रास देना, स्थान न देना आदि के उपसर्ग।

(3) जहाँ तेरापथ का एक भी घर नहीं, ऐसे स्थान- महिदपुर, आगर (मध्यप्रदेश), मदाणा (महाराष्ट्र) जैसों में सफल चातुर्मास, प्रत्येक जाति-धर्म के हजारों लोगों के अत्यत आग्रह पर करने की अनुकूल परिस्थिति निर्मित करने में तथा पार्श्ववर्ती पाटिल समाज के ग्रामों में धर्म प्रचार के दौरान अनेकों कड़वे-मीठे अनुभव।

(4) वि स. 2027 कोटा-गीता सत्सग भवन में चातुर्मास, गुरुदेव के रायपुर चातुर्मास में- अग्नि परीक्षा-पुस्तक को लेकर भारी विरोधी वातावरण में अनेकों पंडितों, आचार्यों आदि के आगमन के बावजूद सनातनियों के उस स्थल में सुख- शातिपूर्वक अनेकात सिद्धात की छाया में बिताना (जबकि वह स्थान प्रथम बार जैन संतों को मात्र 20 दिन के लिए उपलब्ध हुआ था, जो अपने आप में महत्वपूर्ण घटना रही) और समन्वयवादी अनेकात दृष्टि की परम विजय थी। भानपुरा पीठ के निवर्तमान शकराचार्य श्री सत्यमित्रानद गिरि के साथ प्रभावशाली प्रवचन का होना, विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित विराट् हाड़ौती सम्मेलन जैसे अविस्मरणीय प्रसग कोटा चातुर्मास के बने हुए हैं।

(5) रायपुर के भीषण विरोधी वातावरण के बीच स 2029 का धर्म प्रभावना कारक शात व सफल चातुर्मास (जबकि प्रतिपक्षी सज्जनों का स्पष्ट मतव्य तथा कहना था कि तेरापथी दस-बीस वर्ष रायपुर में पैर भी नहीं रख सकेंगे) चुरू के विरोधी भड़काने वाले अनगिन पर्चों व रायपुर में विरोध प्रदर्शन हेतु सपन्न मीटिंगों के बावजूद शातिपूर्वक करना। विरोधियों के प्रमुख वैष्णवदास महत का अनोलक भवन में अपनी चर्चा में बैठकर आना व वार्तालाप करना। दुकानों व घरों में आग लगाने में अगुवे दुर्गा महाविद्यालय के छात्रों में सफल अवधान प्रयोग व प्रवचन। रायपुर के चार प्रमुख दैनिक पत्र- नवभारत, महाकौशल देशबंधु व युगधर्म में मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद' के समर्थन का पीयूष मुनि द्वारा लिखित सार व लेख छपना (इन सबका 110 पृष्ठीय सकलन

स्मारिका' में प्रकाशित होना) कारागृह, पत्रकार, परिषद जैसे कार्य होना, अपने आप में अनुपम उपलब्धि है।

आचार्यश्री का संदेश :- 'रायपुर में इस बार मुनि मगनजी का चातुर्मास बहुत सफल रहा। सतो का प्रयत्न तथा कार्यकर्ताओं का योगदान दोनों के सयोग से एक नई जागृति पैदा हुई यह अच्छी घटना है। वहाँ एक क्षुद्र राजनीतिक तथा साप्रदायिक व्यामोह के कारण जो स्थिति पैदा हुई थी, उस पर प्राय पटाक्षेप हो गया और लोगों में सद्भावना पैदा हो रही है। इसका श्रेय खासकर हमारे साधुओं को ही है। अब समाज की भावी पीढ़ी पर विशेष लक्ष्य देकर उनके सस्कार निर्माण की ओर तीव्र प्रयत्न होना चाहिए। इससे समाज के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना साकार होगी। चातुर्मास के बाद सतों का विहार हो जाने पर भी यह काम चालू रहे, ऐसा कार्यक्रम कार्यकर्ताओं को बनाना चाहिए।

(चुरू 1 नवंबर 1972 आचार्य तुलसी)

स. 2039 में मुनि मगनमलजी का चातुर्मास गगाशहर सेवा केंद्र में था। उस वर्ष उन्होंने वृद्ध साधुओं (ससार पक्षीय मामा-मुनिश्री गगारामजी, मुनिश्री गुणचद्रजी एव मुनिश्री खेतसीजी) की सेवा के साथ क्षेत्र की भी अच्छी सार-सभाल की। उसकी आचार्य प्रवर ने सराहना की। पढ़िये निम्नाकित सदेश -

आचार्यश्री का संदेश :- मुनि मगनजी तीनों ही भाई गगाशहर मे वृद्ध व रुग्ण साधुओं की सेवा के साथ क्षेत्र मे अच्छा काम कर रहे हैं। भाई-बहनों में त्याग-तपस्या, व्याख्यान आदि से सघ की अच्छी प्रभावना कर रहे हैं, प्रसन्नता की बात है। हमारा शासन जयवता शासन है। हर एक साधु-साध्वी गुरु के इगित की आराधना करते हुए शासन की सेवा करते हैं। इसी से यह हरा-भरा है और हरा-भरा रहेगा। **(राणावास, 18 7 1982, आचार्य तुलसी)**

आप जहाँ-जहाँ भी पधारे, वहाँ-वहाँ वैर-विरोध का वातावरण समाप्त हो जाता। एकता और प्रेम का वातावरण बन जाता। दक्षिण भारत, मध्यप्रदेशादिक की यात्राओं में अनेक स्थानों पर प्रत्यक्ष देखा गया, जहाँ भयकर विरोध था, वहाँ सौहार्दपूर्ण वातावरण बन गया। जहाँ तेरापथ के विरोध में बडी-बडी कविताएँ जिन्होंने लिखी, उन्होंने भी मुनिश्री के सपर्क मे आकर उनकी वाणी से प्रभावित होकर भरी परिषद में आत्मालोचन किया। प्रायश्चित किया तथा तेरापथ के गुणकीर्तन में कविताएँ बनाकर बोलीं। जहाँ घोर विरोध था, वहाँ अन्य समाज के लोग एक भी तेरापथी घर न होते हुए भी आग्रह करके अपने-अपने क्षेत्रों में ले गए।

मुनिश्री जहाँ कहीं भी पधारे, वहाँ त्याग-तपस्या की तो बाढ सी आ जाती। बाव

जैसे छोटे से क्षेत्र में 9 एकातास के थोकडे तथा एक कुंवारी कन्या के 45 का थोकडा होना वस्तुतः आश्चर्य की बात है। 16-21 आदि के थोकडों की तो गिनती ही नहीं। हुबली-गदग, बल्लारी जैसे क्षेत्रों में उस समय जहाँ तेरापथियों की बहुत कम सामग्री थी, जिसमें तपस्या की, मतगिये, नवगिये आदि की बात सुनकर के तो आचार्यश्री को भी बडा ताज्जुब हुआ।

मुनिश्री ने हजारों व्यक्तियों को अणुव्रती, विशिष्ट अणुव्रती बनाया। हजारों-हजारों विद्यार्थियों को समझाकर वर्गीय नियम दिलाए। अनेको ने आंशिक तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। अनेकों ने अनेकों प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान किये। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, उडीसा आदि प्रांतो मे अनगिनत बडे-बडे व्यसनी व्यसन मुक्त बने और अपने घर के नारकीय वातावरण को स्वर्गीय बनाया। हजारों-हजारों लोग मद्य-मांस पीने-खाने वाले तीन-तीन चार-चार बंडल बीडिया पीने वाले तथा सभी प्रकार के व्यसनो में आकंठ डूबे हुए व्यक्ति व्यसन मुक्त हुए। जैन बने, श्रावक बने। आज भी आपके समझाए हुए पटेल, पाटिल, सिन्धी, क्षत्रिय आदि अनेक पक्के श्रावक हैं, जो कि सामायिक किये बिना खाना-पीना भी नहीं करते।

एक प्रसंग एक बानगी - मदाणा (महाराष्ट्र) का शिक्षक भीमराव पाटिल दूर से प्रवचन सुनता था पर पास नहीं आता था। पत्नी की प्रेरणा से एक दिन मुनिश्री के पास आया (पत्नी पहले से ही आने लग गई थी, उसने सोचा होगा, यदि ये मुनिश्री के संपर्क में आ जाए तो जीवन सुधर जाए)। नशे में ही बोलने लगा- सब व्यसन छोड दूंगा, आचार्य तुलसी को गुरु बना लूंगा। तेरापथ है, तेरह दिनों का उपवास करूंगा। जिस घर में चातुर्मास चल रहा था, उस घर के मालिक मदनभाई गुर्जर पटेल ने इशारा किया कि नशेडी है, नशे मे बक रहा है, निकालो इसे। मुनिश्री ने धैर्यपूर्वक बात सुनी। प्रोत्साहन दिया। संयोग कहे या शुभ का योग, सब व्यसन त्यागकर तपस्या शुरू कर दी। तेरह तो नहीं कर सका पर भीमराव ने पचोला तथा पत्नी सावित्री ने नव दिन की तपस्या की। [illegible] ये पक्के श्रावक हैं। व्यसन छूटने से आर्थिक स्थिति भी सुधर गई। दूसरा नया मकान और खेती की जमीन भी खरीद ली पर सामायिक किये बिना मुंह मे पानी भी नहीं डालते। सावित्रीबाई ने तो वर्षी तप, मास खमण आदि अनेकों तपस्याएं कर ली हैं। अनेकों बार मुनिश्री के दर्शन कर कह चुके कि - 'मैं तो सब व्यसनों का दास था पर इन महामुनियों की संगत में संत बन गया हूं। यह सब मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद' आदि तीनों भाइयों का प्रभाव है कि मेरा नारकीय जीवन स्वर्गीय जीवन बन गया है। मैं मुनिगण का उपकार जन्म-जन्मांतर तक भूल नहीं सकूंगा। इन्होंने दोनो भव सुधार दिये हैं।'

गुर्जर जैन गौ ललिता नरोत्तमभाई पटेल का चामत्कारिक अनशन - मदाना गाद-

ता. शहादा (खानदेश, महाराष्ट्र) में मुनि मगनमलजी प्रमोद (पीयूष-पकज) द्वारा बने कर्मणा जैन- तेरापथी परिवारो मे से एक है- नरोत्तम भाई पटेल का परिवार। नरोत्तम भाई की धर्मपत्नी ललिताबेन दृढ़ श्रद्धालु, सामायिक, त्याग-प्रत्याख्यान, तप-जप में लीन श्राविका थी। अतिम दिनों में अस्वस्थ रहने के बावजूद अनवरत स्वाध्याय-जप में लीन रहती थी। आचार्य भिक्षु पर अनन्य निष्ठा थी। अनशन करने के 5 दिन पूर्व घर के सदस्यो से कह दिया कि वह दो दिन बाद अनशन करेगी, अनशन बुधवार की रात को सपन्न होगा और उसके तुरत बाद वर्षा होगी।

तीन दिन का सलेखना तप तथा नवघटे के सथारे में आपके कहे अनुसार रात आठ-तीस बजे समाधिमरण हुआ। आकाश मडल में वर्षा का कोई आसार न होने पर भी ठीक उसी समय तेज हवा के साथ कुछ समय वर्षा हुई। यह एक चमत्कार था अटल धर्म श्रद्धा का। अनशन पूर्ण होने के बाद सपूर्ण रात नमस्कार महामत्र का जाप चला। ललिता बेन के इच्छानुसार दूसरे दिन सुबह जैन सस्कार विधि से अतिम यात्रा व अतिम सस्कार ते यु.प शहादा द्वारा सपन्न कराया गया। आसपास के गॉवों से पटेल-समाज के बहुत लोग सम्मिलित हुए। तेरापथ धर्म सघ की महिमा में चार चॉद लग गए। जैन धर्म की भारी प्रभावना हुई। आचार्य प्रवर ने अत्यत कृपा कर पारिवारिक जनों के लिए सदेश प्रदान करवाया।

(तेरापथ टाइम्स 6-12 जनवरी 2003 से साभार)

ऐसे अनेकों प्रसग घटित हुए है। इस प्रकार आपने निज कल्याण के साथ-साथ पर कल्याण के लिए अपने जीवन को न्यौछावर कर दिया है। आप जहॉ कहीं भी गए हैं, लोग आज भी तीनो भाइयो की जोडी को याद करते हैं।

संस्मरण :- साधु जीवन का प्रलब समय प्रलब यात्राओ मे बीता है, यात्रा स्वय एक सस्मरण है। इतनी प्रलब यात्राओ के दरम्यान सैकडो प्रतिकूल-अनुकूल सस्मरण हो सकते हैं। हुए भी हैं। उनमे से कुछ अनुकूल सस्मरण इस प्रकार है -

(1) सन् 2016 की कर्नाटक यात्रा के दौरान धारवाड से हुबली जाते समय बीच में एक किसान का दूर के खेत से देखने पर भागते-दौडते आना। सडक के बीच साष्टाग दडवत करना, फूल-फल व पैसे भेंट में रखना।

(2) चिकमगलूर के आसपास कहीं सतरे के बगीचे के मालिक द्वारा आग्रह कर बगीचे मे ले जाना, ताजे सतरे व केलो की टोकरियॉ लाकर भेट में रखना।

(3) इसी प्रकार फल-फूलो के साथ नोटों की माला भेट में लाना जैसे अनेको प्रसग दक्षिण यात्रा के दौरान बने। जैन मुनिचर्या समझाने पर विस्मय विमुग्ध लोगों का कहना कि ऐसे निर्लिप्त सतों का निर्मल जीवन प्रथम बार देखने को मिला है। सतों के न लेने

पर साथ वाले लोगों में बचे हुए मतरे आदि के टोकरों को बाँट देना।

(4) वि स 2015 या 16 के आसपास दक्षिण जाते बंबई (महाराष्ट्र) के राज्यपाल भवन में राज्यपाल श्री श्री प्रकाशजी से वार्तालाप में अणुव्रतों की जानकारी देने पर व्रतों के समर्थन में उनका अनुभव सुनाना कि मैं जब 14-15 वर्ष की उम्र में था, तब मेरे मित्र द्वारा एक संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर करवाना, जिसके परिणाम स्वरूप आज लगभग 55 वर्ष के बाद भी मैं सर्वथा व्यसन मुक्त हूँ। अखाद्य व अपेय पदार्थों से बचा रहा हूँ। इसलिए छात्रों के बीच आपका अणुव्रत आंदोलन चलाना बहुत उत्तम है, ऐसा मेरा मंतव्य है।

(5) मद्रास राज्यपाल भवन में राज्यपाल विष्णुराम मेधी से वि स 2020 में वार्तालाप। जैन मुनिचर्या, आचार्यश्री, अणुव्रत आदि की जानकारी के बाद उनका गोचरी का आग्रह, आग्रह ही नहीं टोपसा में मुनिश्री मगनमलजी को साग्रह लड्डू का दान देना, जिसका भावपूर्ण चित्र मद्रास में उस समय बहुत लोकप्रिय हुआ।

(6) वि स 2020 मद्रास में चक्रवर्ती राज गोपालाचारी, तत्कालीन मुख्यमंत्री भक्त वत्सलम्, अन्य अनेकों मंत्रियों का प्रवचनों में आगमन, वार्तालाप तथा अणुव्रतादि का समर्थन।

(7) वि स 2038 जय निर्वाण शताब्दी वर्ष में अमलनेर (महाराष्ट्र) में चातुर्मास था। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन स्वामी नारायण मंदिर में प्रवचन हुआ। प्रवचन के दरम्यान एक स्वतंत्र विचरण बंदर का प्रवचन में आना, पास बैठकर प्रवचन व मंगल पाठ सुनना, इसी प्रकार कार्तिक शुक्ल पक्ष में प्रवचन पंडाल में पुन बंदर का आना एक आश्चर्य था। जन विश्वास था कि हनुमान का आगमन इस रूप में हुआ है। मंगल पाठ सुनते हुए बंदर का लिया गया रंगीन चित्र इतना लोकप्रिय हुआ कि सैकड़ों की संख्या में लोगों ने चित्र मंगाये। यहाँ तक कि अन्य संप्रदाय के लोग भी पीछे नहीं रहे।

बहुत थोड़े और अति संक्षिप्त में दिये गये ये संस्मरण तीनों भावनाओं (ज्ञान, धर्म, संस्कार) 27 वर्षीय साधु विहार के समय घटित हुए। उनके बाद भी अनेकों संस्मरण घटित हुए हैं।

तपस्या संवत् 2050 कार्तिक पूर्णिमा तक

उपवास	बेला	तेला	चोला	पचोला	अठाई
1970	65	40	4	1	1

(वि स 2048-50 में लगभग सत्रह मास तक एकांतर तप किया। एक-दो साल से एकांतर प्रायः प्रतिवर्ष चलता है)

ता. शहादा (खानदेश, महाराष्ट्र) में मुनि मगनमलजी प्रमोद (पीयूष-पकज) द्वारा बने कर्मणा जैन- तेरापथी परिवारो मे से एक है- नरोत्तम भाई पटेल का परिवार। नरोत्तम भाई की धर्मपत्नी ललिताबेन दृढ़ श्रद्धालु, सामायिक, त्याग-प्रत्याख्यान, तप-जप में लीन श्राविका थी। अतिम दिनो में अस्वस्थ रहने के बावजूद अनवरत स्वाध्याय-जप में लीन रहती थी। आचार्य भिक्षु पर अनन्य निष्ठा थी। अनशन करने के 5 दिन पूर्व घर के सदस्यो से कह दिया कि वह दो दिन बाद अनशन करेगी, अनशन बुधवार की रात को सपन्न होगा और उसके तुरत बाद वर्षा होगी।

तीन दिन का सलेखना तप तथा नवघटे के सथारे मे आपके कहे अनुसार रात आठ-तीस बजे समाधिमरण हुआ। आकाश मडल में वर्षा का कोई आसार न होने पर भी ठीक उसी समय तेज हवा के साथ कुछ समय वर्षा हुई। यह एक चमत्कार था अटल धर्म श्रद्धा का। अनशन पूर्ण होने के बाद सपूर्ण रात नमस्कार महामत्र का जाप चला। ललिता बेन के इच्छानुसार दूसरे दिन सुबह जैन सस्कार विधि से अतिम यात्रा व अतिम सस्कार ते यु.प शहादा द्वारा सपन्न कराया गया। आसपास के गॉवों से पटेल-समाज के बहुत लोग सम्मिलित हुए। तेरापथ धर्म सघ की महिमा में चार चॉद लग गए। जैन धर्म की भारी प्रभावना हुई। आचार्य प्रवर ने अत्यत कृपा कर पारिवारिक जनों के लिए सदेश प्रदान करवाया।

(तेरापथ टाइम्स 6-12 जनवरी 2003 से साभार)

ऐसे अनेको प्रसग घटित हुए हैं। इस प्रकार आपने निज कल्याण के साथ-साथ पर कल्याण के लिए अपने जीवन को न्यौछावर कर दिया है। आप जहॉ कहीं भी गए हैं, लोग आज भी तीनों भाइयों की जोडी को याद करते हैं।

संस्मरण :- साधु जीवन का प्रलब समय प्रलब यात्राओ में बीता है, यात्रा स्वय एक सस्मरण है। इतनी प्रलब यात्राओ के दरम्यान सैकडो प्रतिकूल-अनुकूल सस्मरण हो सकते है। हुए भी हैं। उनमें से कुछ अनुकूल सस्मरण इस प्रकार हैं -

(1) सन् 2016 की कर्नाटक यात्रा के दौरान धारवाड से हुबली जाते समय बीच में एक किसान का दूर के खेत से देखने पर भागते-दौडते आना। सडक के बीच साष्टाग दडवत करना, फूल-फल व पैसे भेंट में रखना।

(2) चिकमगलूर के आसपास कहीं सतरे के बगीचे के मालिक द्वारा आग्रह कर बगीचे में ले जाना, ताजे सतरे व केलो की टोकरियॉ लाकर भेंट में रखना।

(3) इसी प्रकार फल-फूलों के साथ नोटों की माला भेंट में लाना जैसे अनेकों प्रसग दक्षिण यात्रा के दौरान बने। जैन मुनिचर्या समझाने पर विस्मय विमुग्ध लोगों का कहना कि ऐसे निर्लिप्त सतों का निर्मल जीवन प्रथम बार देखने को मिला है। सतों के न लेने

पर साथ वाले लोगों में भरे हुए सतरे आदि के टोकरों को बॉट देना।

(4) वि स 2015 या 16 के आसपास दक्षिण जाते बबई (महाराष्ट्र) के राज्यपाल भवन में राज्यपाल श्री श्री प्रकाशजी से वार्तालाप में अणुव्रतो की जानकारी देने पर व्रतों के समर्थन में उनका अनुभव सुनाना कि मैं जब 14-15 वर्ष की उम्र में था, तब मेरे मित्र द्वारा एक सकल्प पत्र पर हस्ताक्षर करवाना, जिसके परिणाम स्वरूप आज लगभग 55 वर्ष के बाद भी मैं सर्वथा व्यसन मुक्त हूँ। अखाद्य व अपेय पदार्थो से बचा रहा हूँ। इसलिए छात्रों के बीच आपका अणुव्रत आदोलन चलाना बहुत उत्तम है, ऐसा मेरा मतव्य है।

(5) मद्रास राज्यपाल भवन में राज्यपाल विष्णुराम मेधी से वि स 2020 में वार्तालाप। जैन मुनिचर्या, आचार्यश्री, अणुव्रत आदि की जानकारी के बाद उनका गोचरी का आग्रह, आग्रह ही नहीं टोपसी में मुनिश्री मगनमलजी को साग्रह लड्डू का दान देना, जिसका भावपूर्ण चित्र मद्रास में उस समय बहुत लोकप्रिय हुआ।

(6) वि स 2020 मद्रास में चक्रवर्ती राज गोपालाचारी, तत्कालीन मुख्यमत्री भक्त वत्सलम्, अन्य अनेकों मत्रियों का प्रवचनों में आगमन, वार्तालाप तथा अणुव्रतादि का समर्थन।

(7) वि स 2038 जय निर्वाण शताब्दी वर्ष में अमलनेर (महाराष्ट्र) में चातुर्मास था। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन स्वामी नारायण मदिर में प्रवचन हुआ। प्रवचन के दरम्यान एक स्वतत्र बिहारी बदर का प्रवचन में आना, पास बैठकर प्रवचन व मगल पाठ सुनना, इसी प्रकार कार्तिक शुक्ल पक्ष में प्रवचन पडाल में पुन बदर का आना एक आश्चर्य था। जन विश्वास था कि हनुमान का आगमन इस रूप में हुआ है। मगल पाठ सुनते हुए बदर का लिया गया विचित्र चित्र इतना लोकप्रिय हुआ कि सैकडों की सख्या में लोगों ने चित्र खरीदे। यहाँ तक कि अन्य सप्रदाय के लोग भी पीछे नहीं रहे।

बहुत थोडे और अति सक्षिप्त में दिये गये ये सस्मरण तीनों भ्राताओं (मगन, धर्म, फतह के) 27 वर्षीय सह विहार के समय घटित हुए। उसके बाद भी अनेकों सस्मरण प्रसग घटित हुए हैं।

तपस्या सवत् 2059 कार्तिक पूर्णिमा तक

उपवास	बेला	तेला	चोला	पॉच	आठ
1876	65	40	4	1	1

(विस 2058-59 में लगभग सत्रह मास तक एकातर तप किया। एक-दो मास का एकांतर प्राय , प्रतिवर्ष चलता है)

585/9/74 मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष' (गंगाशहर)

(दीक्षा सं. 2000 वर्तमान)

परिचय : मुनि धर्मचदजी का जन्म गगाशहर (राजस्थान प्रात, बीकानेर सभाग) के छाजेड (बीसा ओसवाल) परिवार में वि.स 1888 भादव शुकल 5 दिनाक 16.9 1931 (सात्सरिक पर्व) को हुआ। पिता का नाम चुन्नीलालजी और माता का नाम धापूदेवी था।

वैराग्य : अपने ससार पक्षीय बडे भाई मुनिश्री मगनमलजी की दीक्षा वि स. 1999 में हुई। तब धर्मचदजी के मन मे सहज विचार उत्पन्न हुआ। मैं भी साधु बन जाऊँ। सयोगवश स 2000 में आचार्य प्रवर का चातुर्मास गगाशहर में हो गया। गुरुदेव के साथ मुनि मगनमलजी भी थे। उनके उपदेश से तथा घर-परिवार में धार्मिक वातावरण होने से पिता-माता, बडी बहन-बहनोई, चार बडे भाइयो का भरपूर स्नेह और सपूर्ण अनुकूलता के बावजूद पूर्व सस्कारवश धीरे-धीरे सहज वैराग्य (विरक्ति के लिए कोई विशेष घटना न होने पर भी) बढ़ता गया।

दीक्षा : उन्होने 12 वर्ष, दो मास, पॉच दिन की अविवाहित वय (नाबालिग) में माता-पिता, भाई आदि परिवार को छोडकर स 2000 कार्तिक शुकल 9 को आचार्य श्री तुलसी द्वारा गगाशहर (चोरडिया के चोक) में दीक्षा स्वीकार की, उस दिन 15 दीक्षाएँ हुईं।

शिक्षा : मुनि धर्मचदजी ने स 2001 का चातुर्मास मुनिश्री नथमलजी (आचार्य महाप्रज्ञ) के साथ सरदार शहर में किया। स 2002 का चातुर्मास आचार्यश्री तुलसी की सेवा में श्री डूगरगढ मे किया। तत्पश्चात लगभग 10 साल मुनि धनराजजी (419) सिरसा के साथ रहे। स. 2012 में मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद' का सिघाडा हुआ, तब से 2039 तक उनके साथ अनन्य सहयोगी के रूप में दक्षिण भारत, महाराष्ट्र, उडीसा जैसे दूर-दूर प्रातों में विहार करते रहे। इस अवधि में उन्होने सस्कृत व्याकरण, काव्य कोश, प्राकृत, हिन्दी आदि का अच्छा अध्ययन किया। पजाबी, गुजराती, मराठी, कन्नड, तमिल, उडिया तथा अग्रेजी भाषा भी सीखी। दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि आगमों की चुनी हुई सैकडों गाथाएँ, नाममाला, कालुकौमुदी, भिक्षु शब्दानुशासन, षट्दर्शन, शांत सुधारस, सिन्दूर प्रकर, रत्नाकर पच विशिका, जैन सिद्धात दीपिका,

मनोनुशासन, देव-गुरु-धर्म द्वात्रिंशिका, भक्तामर, उवसग्गहर आदि स्तोत्र, सैकडों दोहे, शेर, भजन, गीतिकाएँ, मुहावरे आदि कठस्थ किये। प्राय 32 आगमों का, सप्त सधान, जैसे अनेक काव्यों, रामायण, महाभारत, कुरान, बाइबल आदि ग्रथों का वाचन किया। प्राकृतिक चिकित्सा साहित्य, आसन, प्राणायाम, मुद्राविज्ञान तथा ध्यान सबधी साहित्य का पारायण किया।

साहित्य भाग्य चमक उठा, केसर की बरसात, उद्‌बोध, शब्द की चोट (चारों कथा साहित्य) चितन की धवल धाराएँ (चितन), चिराग की रोशनी (विभिन्न विषयक सवाद), मूल्यों की खोज (जीवन मूल्यों के प्रतिपादक लेख), पीयूष प्रवाह, (142 गीत), प्रेरक गीत, गीत-गगा, सपना का ससार, जगन्नाथ का प्रसाद जैसे बडे-छोटे भजनों के सग्रह प्रकाशित तथा दो पुस्तकें निर्माणाधीन हैं।

सपादित पुस्तकें (1) सगीत सुरसुरी (तीनों सहोदर सत- प्रमोद, पीयूष, पकज की एक सौ अडतालीस गीतिकाएँ) (2) सुवास समारिका (सन् 1972 रायपुर (छत्तीसगढ़) चातुर्मास में वहाँ के ख्याति प्राप्त समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रवचन सार तथा लेखों का एक सौ दस पृष्ठीय सपादन) प्रकाशित। (3) पकज पराग (मुनि फतहचदजी पकज की भाव पूर्ण गीतिकाओं की पुस्तक प्रकाशित)।

अप्रकाशित रचनाएँ :- (1) पीयूष निर्झर पयस्विनी (125 व्याख्यान), रूप वसत, उत्तम कुमार, प्रद्युम्न कुमार, चिलमिल कुमार, सोनसती आदि पचासों बडे-छोटे व्याख्यान, सैकडों गीतिकाएँ, मुक्तक आदि। (2) राउरकेला प्रवचन आदि लेख।

शोध : वैदिक दर्शन पर विश्लेषणात्मक वृहद ग्रथ- वैदिक विचार-विमर्श के सकलन में सपूर्ण सहयोग, जैन दर्शन तथा सिद्धात विषयों पर लिखित सामायिक लेख- जैन भारती, प्रेक्षाध्यान, युवा दृष्टि, अणुव्रत चोथा प्रहरी, कर्ण प्रिय तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं और हो रहे हैं।

आशुकविता स 2009 के आसपास एक दिन में अजना सती के व्याख्यान पर दो सौ श्लोक बनाए, (अप्रकाशित)

अवधान सर्वप्रथम स 2014 शीत ऋतु में मत्री मुनि मगनलालजी के सान्निध्य में सरदार शहर में 25 अवधान किये। स 2015 पचपदरा में ज्येष्ठ मास में अभ्यास बढ़ाते-बढ़ाते 1001 सफल अवधान किये। तत्पश्चात दक्षिण की काशी पूना के तिलक स्मारक, पूना युनिवर्सिटी, इन्दौर का रविन्द्र नाट्य गृह, दिनाक 8 1 1978 को आत्मानद जैन हायर सेकडरी स्कूल लुधियाना का दरेसी मैदान (जिसमें तत्कालीन राज्यपाल जयसुखलाल हाथी, लाला जगतनारायण, हिमाचल के वित्तमत्री आदि अति विशिष्ट जन

समेत करीब 5000 लोग उपस्थित थे) विद्यालयो-महाविद्यालयों, पचासों नगरों-महानगरों जैसे रायपुर का दुर्गा महाविद्यालय, अहमदाबाद, मुबई, मद्रास, बेंगलौर, विजयवाडा, विशाखापट्टनम, विजयनगरम, जबलपुर, कटक, इन्दौर, उज्जैन, झाबुआ आदि में सफल अवधान प्रयोग किये।

कला : सुदर सुवाच्य हस्तलेखन में अच्छा स्थान, चित्र निर्माण, सिलाई-रगाई में साधारण दक्षता।

प्रतिलिपि : लिपि कला का विकास कर सूत्र कृताग दीपिका, पॉच व्यवहार, जैन सिद्धात दीपिका, वैदिक विचार-विमर्श जैसे बडे ग्रथों की दो-दो प्रतियों के लेखन के साथ हजारों पत्रों मे सैकडो-सैकडों व्याख्यानो, गीतिकाओं, श्लोकों, दोहों, शेरों, आगम-गाथाओं आदि की बरू की कलम से सुदर अक्षरो मे कलात्मक ढग से प्रतिलिपियॉ की। जिनका प्रमाण अनुमानित लाखो श्लोकों में है। लिखने का अनवरत क्रम चालू है।

तपस्या : स 2059 कार्तिक पूर्णिमा तक उपवास से नव तक की लडी का, कुल तप इस प्रकार किया।

उपवास	बेला	तीन	चार	पॉच	छ	सात	आठ	नौ
1615	65	41	7	3	1	1	1	1

इनके सिवा एकासन, आयबिल आदि भी किये। अनेकों बार 5 या 6 विगय का वर्जन किया। विशेषत महावीर निर्वाण वर्ष वि स 2031 मे 25-25 नवकारसी, पोरसी, वियासना, एकासन, एकलठाणा, नीवी, उपवास, 5 बेले, 5 तेले विशेष रूप से हुए। वि स 2041 से प्रतिवर्ष प्राय एक मास एकान्तर स 2032 केसिगा (उडीसा) में दस दिन का निसर्गोपचार (जिसमें दिन में तीन बार मात्रोवेत रस मात्र लिया) किया। स. 2041 चैत्र मास में 15 दिन का अगूर कल्प किया (जिसमें मात्रोवेत अगूर व मट्ठा लिया) दोनों कल्प प्रमुखत आत्म शुद्धि तथा गौणत शरीर शुद्धि के लिए किए।

साधना ध्यान, स्वाध्याय, मौन, जप तथा एकात वास (साधना की आतरिक अभिरुचि वश) साधना का क्रम प्राय चलता है। स 2016 से 18 के बीच कई बार कोप्पल (कर्नाटक) रहना हुआ तब तथा वि स 2041 में पर्वत कन्दरा में प्रात 11 बजे तक उक्त साधना क्रम चलता रहता (अब भी मन से अनेक बार जाना हो जाता है)। अन्य अनेकों नगरों के एकात स्थलों, शून्यागारों, नदी-तटों, उपवनों आदि में तप-मौन

के साथ पूरे-पूरे दिन जप, ध्यान, स्वाध्याय की साधना का क्रम चलता रहा है। निरतर लगभग 3 घटे जप-ध्यान में लगते हैं। पठन-पाठन तो दिन भर चलता ही है।

सेवा लगभग डेढ़ वर्ष का दीक्षा के बाद गुरुकुल वास रहा। स 2046 योगक्षेम वर्ष प्रज्ञापर्व लाडनू में 11 मास के गुरुकुल वास का तथा स 2054 गगाशहर में सात मास के गुरुकुल वास का सौभाग्य मिला। स 2013 में राजलदेसर स्थित स्थविर सत मुनिश्री कस्तूरचदजी आदि की सेवा में लगभग सात मास, स. 2014 सरदार शहर में मत्री मुनि की सेवा में 11 मास तथा स 2039 गगाशहर में मुनिश्री गुणचद लालजी, मुनिश्री खेतसीजी व मुनिश्री गगारामजी की सेवा में 11 मास रहना हुआ। अग्रगण्य होने के बाद 2056 में मुनि मगन की, 2057 में छापर सेवा केंद्र में एक साल, 59 में मुनिश्री मेतार्यजी की रुग्णावस्था व अनशन में 85 दिन सेवा की।

यात्रा दीक्षा ग्रहण के दो साल बाद स 2003 से लबी यात्राओं का क्रम चालू हुआ, जो अब तक बराबर चल रहा है। विगत 59 वर्षों में राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, उडीसा, बिहार का थोडा भाग, मध्यप्रदेश, हरियाणा, पजाब, हिमाचल प्रदेश की लबी-लबी पदयात्राएँ मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद' (ज्येष्ठ सहोदर) के साथ तथा स 2039 में आचार्यश्री तुलसी द्वारा अग्रगण्य बनाए जाने के बाद स्वय ने दो बार दक्षिण यात्रा केरल, कन्याकुमारी तक (कुल तीन बार दक्षिण यात्रा) के साथ आध्र, उडीसा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, पजाब, की प्रलब यात्राएँ की। इन सार्थक यात्राओं में हजारों विद्यालयों-महाविद्यालयों, विविध जातीय बस्तियों, कारागृहों, ग्रामीण जन सभाओं, मठों, मदिरों, उपाश्रयों आदि धर्मस्थानों-धर्मसभाओं, विश्व हिन्दू परिषद के लाख-लाख लोगों वाले सम्मेलनों, मस्जिदों, अजुमन कमेटी द्वारा आयोजित आयोजनों, मुबई के चौपाटी मैदान में अरब सागर के तट पर आयोजित महावीर जयती समारोह (जिसमें तत्कालीन प्रधानमत्री चद्रशेखरजी, मुख्यमत्री श्री शरद पवार जी, राज्यपाल श्री सुब्रह्मण्यमजी जैसे विशिष्टतम लोगों की विशाल उपस्थिति) आदि में निर्भीकता से प्रवचन किये। जगह-जगह पत्रकार परिषदें होती रही, केरल जैसे दक्षिणी प्रदेशों में मलयाली, तमिल, कन्नड, तेलुगु भाषा वाले पत्रों तक में पत्रकार परिषदों व विशिष्ट कार्यक्रमों के समाचार मय फोटो छपते रहे। रायपुर, इन्दौर, उज्जैन, बीकानेर से छपने वाले दैनिक पत्रों की कटिगों की तो कई फाइलें तैयार हो सकती हैं। उपरोक्त कार्यक्रमों के परिणाम बहुत ही सुखद और धर्म प्रभावक आए। हजारों-हजारों लोग व्यसन मुक्त सुलभ बोधि तथा सम्यक्त्व दीक्षा लेकर श्रावक बने। उनके जीवन में

युगातकारी परिवर्तन आए, आमूलचूल जीवन बदल गए। ऐसे बदले लोगों के विशिष्ट निवेदनो पर जहाँ एक भी तेरापथ का घर नहीं था, ऐसे स्थानो आगर, महिदपुर (मध्यप्रदेश) तथा मदाणा (महाराष्ट्र) में पॉच सौ से हजार-हजार तक की दैनिक उपस्थिति में सफलतम वर्षावास (चातुर्मास) किये। वैसे दो-पॉच घर वाले क्षेत्र बडनगर (म.प्र), हुबली, गदग, बल्लारी जैसों में अनेक सफल चातुर्मास सपन्न किये। जैन शासन, तेरापथ धर्म सघ की प्रभावना की।

कुल यात्रा : वि.स. 2000 मिगसर विद एकम से स 2958 आषाढ़ पूर्णिमा तक लगभग 61415 कि मी की कुल यात्रा हुई। धर्म प्रचारार्थ सुदूर प्रातों में परिव्रजन तथा यात्राओं के सुपरिणामो का यह एक छोटा सा निदर्शन है।

अग्रणी : स. 2039 के नाथद्वारा मर्यादा महोत्सव पर आचार्यश्री तुलसी ने मुनि धर्मचदजी का सिघाडा बनाया। दूरवर्ती क्षेत्रो में भेजा। उन्होने धर्म प्रचार करते हुए वि स 2040 से 2059 तक क्रमश निम्नोक्त स्थानों में चातुर्मास किये- मुबई (मेरीन ड्राइव), हुबली (कर्नाटक), फूलों की नगरी बेंगलोर, मद्रास (चेन्नई), जयसिगपुर (महाराष्ट्र), इदौर (म प्र), लाडनू (योगक्षेम वर्ष मे गुरु सेवा), सूरत (गुजरात), मैसूर, चिकमगलूर (कर्नाटक), गुडियातम (तमिलनाडु), कटक, सिन्धीकेला (उडीसा), इदौर (म प्र) गगाशहर आचार्यश्री महाप्रज्ञ की सेवा में, गोविन्दगढ (पजाब), उदासर (भ्राता मुनि मगन की सेवा मे), छापर (सेवा केंद्र में) श्री गगानगर तथा उदासर।

सस्मरण मुनि श्री मगनमलजी के परिचय में आए हैं। 39 वर्षीय सह जीवन के अधिकाश वे ही हैं। अग्रगण्य बनने के बाद के कुछ सस्मरण निम्न प्रकार हैं -

(1) उत्तर कर्नाटक के महानगर हुबली में सन् 1984 के विजयादशमी दशहरा के पावन प्रसग पर राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के लगभग एक हजार गणवेशधारी स्वयसेवकों में प्रवचन, वैसे गुरु दक्षिणा दिवस के अनेकों स्थलों के कार्यक्रमों मे सद्भाव वर्धक प्रवचन हुए हैं।

(2) दि 5 8 1984 के दिन हुबली महानगर में 'कर्नाटक मानव धर्म प्रचार सघ के छठवें वार्षिकोत्सव पर मूर साविर (तीन हजार) मठ के जगद्गुरु श्री निरजन गगाधर महास्वामी जी प्रमुख विशिष्ट धर्मगुरुओ तथा प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों के मध्य प्रवचन।

(3) दि 29 7.1984 के दिन हुबली के जिगलूर भवन में ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ब्रह्मकुमार व ब्रह्मकुमारियों में प्रवचन। नारायण गॉव प्रमुख अनेक स्थलों यहाँ तक कि माउट आबू स्थित ईश्वरीय विद्यालय तक में जाना, विचार-विनिमय और प्रवचन कार्यक्रम।

(4) दि 31 5 1987 की रात को हुबली (कर्नाटक) के अजुमन-ए-इस्लाम द्वारा नेहरू कॉलेज के प्रागण में आयोजित ईद मिलन समारोह में डी आय जी आबिद अली, जिलाधीश आर जी नाडदूर, महापौर पवार, एम एल ए इगस गिरि प्रमुख सैकडों हिन्दू-मुस्लिम बुद्धिजीवियों में प्रभावक प्रवचन तथा कार्यक्रम सपन्नता के पश्चात मुस्लिम प्रमुखों द्वारा रात्रि विश्राम स्थल श्री शातिनाथ हिन्दी हाईस्कूल में आकर शुक्रिया अदा करना।

(5) दि 12 9 1992 के दिन चिकमगलूर में ऑटो ड्राइवर एड ओनर्स एसोसिएशन की ओर से आयोजित पैगबर मोहम्मद के जन्मदिन ईद-ए-मिलाद पर प्रवचन, रोटरी क्लब व ट्रस्ट के सेक्रेटरी नसरुल्ला सरीफ द्वारा शुक्रिया अदा करना।

(6) दि 26 12 1987 विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित महाराष्ट्र प्रातीय सम्मेलन आलदी (पूना के पास) में पेजावर पीठ के स्वामी विश्वेषतीर्थ समेत बडे-बडे सत-महत, राजमाता विजयाराजे सिंधिया, सौ चद्रलेखा राजे भोंसले, महाराष्ट्र प्रातीय विहिप अध्यक्ष माधवराव जोशी, कार्याध्यक्ष अनतराव कुलकर्णी, सरदार जोगीन्दरसिंह सहित लगभग 50-60 हजार की जनमदिनी में विशेष अतिथि के रूप में सादर आमत्रण और प्रवचन।

(7) अग्रगण्यावस्था की दूसरी दक्षिण यात्रा के मध्य अरब सागर के तट पर चौपाटी पर भारत जैन महा मडल तथा अन्य 32 जैन सस्थाओं द्वारा सन् 1991 की महावीर जयती का विराट आयोजन। जिसमें तत्कालीन प्रधानमत्री श्री चद्रशेखर जी, महाराष्ट्र के मुख्यमत्री श्री शरद पवार, राज्यपाल श्री सी सुब्रह्मण्यम्, गच्छाधिपति श्री दर्शनसागरजी, आचार्यश्री यशोभद्रजी, आचार्यश्री विशालसेनजी, डॉ साध्वी श्री धर्मशीलाजी, डॉ साध्वीश्री अर्चनाजी, अनेकों पत्रकार, अनेकानेक प्रतिष्ठित सज्जनों समेत करीब 70-75 हजार की जनमेदिनी में प्रवचन।

नोट इस प्रकार की अनेकों सभाओं में अनेकों आचार्यों, सत-महतों, राजनयिकों में अनेकों स्थलों पर आपके प्रभावक प्रवचन हुए हैं।

(8) दि 15 सितबर 1991 के दिन महानगर मैसूर के जगमोहन पैलेस में भारतीय जैन मिलन की ओर से रखे गए रजत जयती समारोह में मैसूर के महापौर, कमिश्नर आदि विशिष्ट सज्जनों के मध्य प्रवचन।

(9) दि 30 1 1993 के दिन धरती के अतिम छोर तीन सागर (अरब सागर, हिन्द महासागर व बगाल की खाडी) के सगम स्थल कन्याकुमारी स्थित विवेकानदपुर में तीन प्रात (केरल, कर्नाटक व तमिलनाडु) के पद्रह क्षेत्रों के तीनों सप्रदायों के तीन सौ से

अधिक की उपस्थिति में मर्यादा महोत्सव का दो चरणो में आयोजन।

(10) स 2051 दि. 25 9 1994 के दिन कटक (उडीसा) में 800 सीटों वाले खचाखच भरे 'शहीद भवन' में उडीसा के सूचना प्रसारण मत्री श्री वैरागी जैना आदि अनेकों मत्रियों, कटक नगरपाल, पुलिस आयजी आदि विशिष्ट सज्जनों की उपस्थिति में अवधान का भव्य आयोजन था, दर्शको मे पुरी जगन्नाथजी के प्रमुख पुजारी परिवारों मे से एक परिवार के प्रमुख सज्जन श्री चितरजन सेन भी थे। वे बहुत प्रभावित हुए। सपर्क में आए। श्री सेन ने जैनागम तथा जयाचार्य के बारे में जानना चाहा। चूँकि श्री सेन के पास अति प्राचीन एक ताडपत्रीय ग्रथ है, जिसमें जैनागम, दर्शन तथा जयाचार्य का उल्लेख पढने-सुनने को मिला। श्री सेन ने अनेक बातें बताई। उस ग्रथ के माध्यम से 20 साल पहले बधु त्रिपुटी- प्रमोद, पीयूष, पकज के उत्कल में आगमन- प्रचार, शासन सबधी जानकारियाँ तथा अन्य कई तथ्य प्रकट किये। ग्रथ द्वारा उद्घाटित तथ्य लगभग सत्य निकले। अद्भुत, अनुपम, अलौकिक ग्रथ रत्न देखने को मिला। विविध जडी-बूटियों के साथ अनेक विध विशिष्टताओं के सयुक्त विविध शख देखने को मिले। खुशी की बात है कि आज भी भारत की अमूल्य निधि ऐसे ग्रथ विद्यमान हैं। श्री सेन को इससे और अधिक प्रसन्नता हुई कि उनकी धर्मपत्नी ने श्री शकराचार्य के कहने पर भी मासाहार नहीं छोडा। वह मुनिश्री के कहने पर त्याग दिया। इतना ही नहीं, कटक से प्रथम दिन के 10 कि.मी के विहार मे पैदल साथ चली।

नोट : उनसाठ वर्षीय साधु जीवन की प्रलब यात्राओं में विशिष्ट कार्यक्रमों, अवधान प्रयोगों, प्रेक्षाध्यानाभ्यास शिविरों तथा हजारो विद्यालयों, कारागृहों, विभिन्न बस्तियों व अन्य धर्मस्थानों के प्रवचनों की तालिका एक पुस्तक का विषय है, अग्रोक्त अति विशिष्ट प्रवचनों का स्वल्पाश है।

संस्मरण . यात्रा स्वय एक सस्मरण है। उसमें अनेक खट्टे-मीठे सस्मरण होते रहते हैं। कई सस्मरण स्मृति प्रकोष्ठ में स्थिर रह जाते हैं। उनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं। दक्षिण की यात्राओं में फलों-फूलों के साथ नोटों की माला भेंट में रखने के अनेकों प्रसग आए। तीसरी दक्षिण यात्रा के मध्य केरल में करीव 700 कि मी की लंबी यात्रा हुई। उसमें धनी उद्योगपतियों द्वारा गर्मी में पैदल चलते देखकर कारों में वैठने, नोट लेने का सविनय आग्रह करना, यहाँ तक कि ट्रक ड्राइवरों द्वारा माल ट्रक रोककर वैठने व नोट लेने के निवेदन जैसे प्रसग अनेकों वार उपस्थित हुए। जैन मुनिचर्या वताने पर वे विस्मित रह जाते।

(1) तमिलनाडु से उडीसा कटक जाते हुए 13 12 1993 के दिन जगत प्रसिद्ध आध्रप्रदेश स्थित तिरुपति बालाजी देवस्थान के (आईएएस जॉइंट एक्जीक्युटिव

ऑफिसर एव सेक्रेटरी धर्म प्रचार परिषद) श्री बी वेंकटरामैय्या का प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री माणकचदजी राका आदि की प्रेरणा से मुनिश्री के दर्शनार्थ स्थान पर आना, जैन मुनिचर्या, अणुव्रत, अवधान, हस्तकला आदि की जानकारी पाकर प्रभावित होना, दर्शनार्थियों की लबी कतार को रोककर ससम्मान मूर्ति तक ले जाना, एस वी एच स्कूल तिरुमला देवस्थान के 25 शिक्षक और पॉच सौ विद्यार्थियों में प्रवचन व अवधान प्रयोग करवाना सर्वथा नवीन व अद्‌भुत बात थी।

(2) दि 26 4 1991 से 30 4 1991 तक महाबलेश्वर (हिल स्टेशन) के पी सी मोदी हाईस्कूल के विशाल भवन में सौ से अधिक भाई-बहनों का पच दिवसीय प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर बपौडीपूना निवासी श्री मॉगीलालजी सेठिया द्वारा लगवाया जाना अद्‌भुत सस्मरण था। वैसे शिविर तो अनेकों शहरों में अनेकों बार हुए पर गर्मी के मौसम में हिल स्टेशन पर एक ही व्यक्ति द्वारा सारी व्यवस्था सपन्न करना उल्लेखनीय घटना रही। उसके तत्काल बाद उनके पुत्र का मारणातिक वेदना से उबर जाना एक चमत्कार प्रतीत हुआ।

(3) महाबलेश्वरम से 1 मई को विहार कर लगभग एक हजार किलोमीटर दूर मैसूर महानगर में चौमासा करने जाते समय जयसिगपुर, बेलगॉव के आगे सागर-सिमोगे का जगली मार्ग कुछ कम पडने के ध्यान से लिया गया। 28 5 1991 के दिन प्रात तेरह का तथा साय साढ़े ग्यारह कि मी का विहार था। मध्याह्न के विहार में करीब पॉच कि मी जाने के बाद भीषण तूफान के साथ मूसलाधार पानी पडने लगा। सघन वन में रुकने का कोई स्थान नहीं था। भारी तूफान के कारण वृक्ष भी टूट रहे थे। चलने के सिवाय कोई उपाय न होने से प्राय साढे तीन कि मी भीषण वर्षा में चलना पडा। सयोग से भागवती गॉव के डाक बगले का साताकारी स्थान तथा ब्राह्मी की गोली-लवग जैसे देशी प्रयोग ने सर्दी-जुकाम, बुखार से बचा लिया। पुस्तकें भी प्राय सुरक्षित रह गईं। विहार में रुकावट नहीं आई।

(4) दि 21 7 1996 के दिन इदौर (म प्र) में दिगबर अतिशय क्षेत्र गोम्मटगिरि में 500 श्रावक-श्राविकाओं में प्रभावक कार्यक्रम तथा आहार के बाद मधुमक्खियों का अचानक आक्रमण हो गया। लगभग सवा सौ डेढ़ सौ डक लगे होंगे। काफी डक निकाले गए। एक इजेक्शन व 2-3 दिन की सामान्य गोलियाँ ली गईं जिनसे कई उल्टियॉ-दस्त हुए। कुछ उनसे जहर निकला लेकिन ज्यादा लाभ हुआ प्रेक्षा-अनुप्रेक्षा के प्रयोग से। इसका एक पूरा आलेख लिखा हुआ है।

प्रेक्षा-अनुप्रेक्षा का साक्षात चमत्कार देखा कि दि 22 को 11 कि मी का विहार, दि 23 को इदौर प्रेस क्लब में पत्रकार वार्ता, चातुर्मास प्रवेश, तेले की तपस्या, व्याख्यान आदि सारे कार्यक्रम निर्विघ्न चलते रहे।

मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष' के 71वें वर्ष प्रवेश पर मंगल भावना

*भतीज झंवरलाल द्वारा

जैन जगत का परम पावन पर्व, हर्ष, उल्लास भरा सवत्सरी का दिन, चित्त में आह्लाद पैदा करता है। आज मुझे अतिरिक्त प्रसन्नता है। सयोग बना मातुश्री लिछमा जी के सथारे का, देश में आना हो गया। मुनिश्री धर्मचदजी 'पीयूष' के सात दशक पूर्ण कर आठवें दशक में प्रवेश के पावन प्रसग पर मुझे बधाई देने का अवसर मिल गया।

हमारे दादाजी परम ऋजुमना, सतोषी और शुद्ध श्रावक धर्म को पालने वाले पवित्र आत्मा थे। उनके घर में अनेक पवित्र आत्माओं का आगमन हुआ। जैसे मेरे पिताश्री मुनिश्री फतहचदजी, मातुश्री साध्वी लिछमा जी, काका सा महाराज मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद', मुनिश्री धर्मचदजी 'पीयूष', भाई महाराज मुनिव्रतजी, बहन महाराज चद्रावतीजी एव शाताकुमारीजी। दो नदियो का मिलन स्थल सनातन परपरानुसार तीर्थ स्थल बन जाता है। इतनी पवित्र आत्माओं के समागम से हमारा घर परम पावन धाम हो गया। तीनों भाई सतो ने विविध प्रातो की 27 वर्ष तक एक साथ रहकर लबी-लबी यात्राएँ की। हजारों-हजारों लोगों को व्यसन मुक्त और श्रावक बनाया, अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व से हजारों लोगों को प्रभावित कर ऐसे-ऐसे क्षेत्रों में चातुर्मास किये जहाँ तेरापथ का कोई भी घर नहीं था। महाराष्ट्र का एक गाँव मदाणा तो पूरा ही पाटिल समाज का गाँव था। फिर भी आपने चातुर्मास कर जो धर्म की प्रभावना की, वह अविस्मरणीय प्रसग बन गया।

आचार्यश्री तुलसी ने नाथद्वारा में वि.स. 2039 मे आपको अग्रगण्य बनाया। आपकी क्षमता एव प्रभावकता गुरुदेव की नजर मे कैसी थी, इसका साक्षात प्रमाण है- अग्रगण्य बनने के बाद पहला चातुर्मास भारत के महानगर बबई में, दूसरा उत्तर कर्नाटक का महानगर हुबली, तीसरा फूलों की नगरी बगलौर, चौथा मद्रास (चेन्नई), पाँचवाँ जैसिगपुर (महाराष्ट्र), छठा मध्यप्रदेश का महानगर इदौर करवाया गया। इस छ वर्षीय यात्रा के बाद योगक्षेम वर्ष में गुरुदेव ने अपने साथ रखकर विशेष प्रशिक्षण दिलवाया।

योगक्षेम वर्ष के बाद दूसरी दक्षिण यात्रा प्रारभ हुई, जिसमें क्रमश सूरत, मैसूर, चिकमगलूर (कर्नाटक), गुडियात्तम (तमिलनाडु), उडीसा के कटक व सिधिकेला तथा इदौर चातुर्मास हुए। इस प्रलब यात्रा में केरल की करीब 700 कि मी की यात्रा हुई जो हमारे धर्मसघ में केरल की इतनी लबी प्रथम यात्रा कही जा सकती है। फिर धरती के अतिम छोर कन्याकुमारी तक पदार्पण हुआ। विश्व के धनी देवता तिरुपति की यात्रा तो एक विलक्षण यात्रा थी।

आध्रप्रदेश के विजयवाडा, राजमदरी, विशाखापट्टनम, विजयनगरम की यात्रा के बाद उडीसा के जगत प्रसिद्ध तीर्थ जगन्नाथपुरी, कोणार्क का सूर्य मदिर, उडीसा की राजधानी भुवनेश्वर आदि की यात्रा करते हुए उडीसा के सास्कृतिक नगर कटक में प्रभावक चातुर्मास हुआ। इस प्रकार सात वर्ष की यात्रा सपन्न कर गुरुदेव के महाप्रयाण के सुदुर्लभ अवसर पर गगाशहर में प्रवास रहा, फिर पजाब की एशिया प्रसिद्ध लोहा मडी गोविन्दगढ़ में चातुर्मास हुआ। मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद' के प्राणातिक महावेदना के कारण आपका पुन हरियाणा से बीकानेर सेवार्थ पधारना हुआ। वह प्रवास मुनिश्री प्रमोद को नया जीवन देने वाला सिद्ध हुआ। हमारे धर्मसघ के सतों का एकमात्र सेवा केंद्र छापर की वार्षिक सेवा कर, अब यहाँ पर इस हरित क्राति की भूमि श्री गगानगर में प्रवास चल रहा है। गगाशहर में सात दशक पूर्व जन्म हुआ, अब आठवें दशक का प्रवेश श्री गगानगर में होने जा रहा है। नियति ने गगा-गगा का गजब का योग मिलाया। अब मेरी मगल कामना काका सा महाराज के प्रति है कि आठवाँ दशक अध्यात्म की गगा बहाते हुए जैन शासन व भैक्षवगण की गरिमा बढ़ाने वाला सिद्ध हो और मेरे जीवन के कल्याण पथ का प्रदर्शक बने।

ओम अर्हम्

मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष' के 71वें वर्ष प्रवेश पर मंगल भावना

*झँवरलाल की धर्मपत्नी

(23.8.2001)

(लय : बढज्यो रे चेजारा थांरी वेल

बढ़ज्यो हो काका सा। थारो तेज, काको सा थारो तेज
जिन शासन ने दीपावज्यो जी, काको सा।
मिलज्यों म्हा सगला ने थारो हेज, सगला ने थारो हेज
प्रवचन पीयूष पिलावज्यो जी, काकोसा।
वीतराग सी थारी बणे इमेज, काई थारी बणे इमेज
जन-जन उपवन महकावज्यों जी, काको सा।
नान्हीं वय में बणग्या थे महाराज, घर तज बणग्या महाराज
मा-तात-भ्रातरी प्रीत ने जी, काकोसा।
देख साधना नेत्र ठरे है आज, काई नेत्र ठरे है आज
पायो यश मन ने जीतने ओ, काको सा। . ॥1॥
वीतराग मारग पर चाल्या आप, मारग पर चाल्या आप
अब मजिल दीखे सामने जी, काको सा।
जन-जन रा थे हरो पाप सताप, काई हरो पाप सताप
पावो सुख सू शिव धाम ने जी, काको सा। ॥2॥
दादो सा, मा सारो है आदर्श, काई सम्मुख है आदर्श
गौरव स्यू सीनो फूलज्या जी, काको सा।
खूब दीपायो शासन ने घर हर्ष, काई शासन ने धर हर्ष
मन खुशियॉ झूले झूलज्या जी, काको सा। ॥3॥
देश-विदेशा कर्‌यो घणो उपकार, थे कर्‌यो घणो उपकार
जन-जन सुमरे है नाम ने जी, काको सा।
क्यू ना समरे सारा सुधर्‌या काम, काई बारा सुधर्‌या काम
यश फैल्यो दिशि तमाम में जी, काको सा। . ॥4॥
सूरज सम तपज्यो, सूरज-अरमान, तपज्यो सूरज-अरमान
वहु मूरज री आ, भावना जी, काको सा।
रहो निरामय, भव्यजनारा प्राण, थे भव्यजनारा प्राण
अतर मनरी आ कामना जी, काको सा! .॥5॥

676/9/165 मुनि मुनिव्रतजी का परिचय

(दीक्षा सवत् 2020, वर्तमान)

परिचय मुनिश्री मुनिव्रतजी (मूल नाम माणक) का जन्म गगाशहर के छाजेड (ओसवाल) गोत्र में स 1997 माघ कृष्णा 10 को हुआ। उनके पिता का नाम शेरमलजी और माता का मूलीदेवी था।

वैराग्य दादा-दादी, माता-पिता व परिवार के धार्मिक सस्कार, तीन चाचे (मुनि मगन, धर्म, फतह), चाची साध्वी श्री लिछमा जी आदि निकट पारिवारिक जनों की दीक्षा का मन पर प्रभाव व आत्म प्रेरणा साधना की ओर प्रेरित कर रही थी कि पिताश्री शेरमलजी के ससार पक्षीय मामा मुनिश्री गगारामजी (जिनके दो पुत्र मुनिश्री राजकरणजी व मुनिश्री पूर्णानदजी दीक्षित हैं) की सेवा में बैठते समय वे फरमाते कि इतने पोतों में एक तो दीक्षा के लिए तैयार हो जाओ। वि स 2010 में गुरुदेव तुलसी गगाशहर विराज रहे थे। गुरु दर्शन और मुनिश्री गगारामजी की प्रेरणा से वैराग्य भावना मन में अकुरित हुई। मुनिश्री ने माणक को दर्शन करवाए। माणक व मुनिश्री ने गुरुदेवके चरणों में भावना निवेदित की। गुरुदेव ने फरमाया कि अभी बालक हो, सीखना करो, भावना को परिपक्व बनाओ। तब से साधु बनने का पक्का निश्चय कर लिया।

माता-पिता के सामने अपनी भावना व्यक्त करने पर पिताजी ने कहा- अभी क्या उतावल है, देखेंगे। पिता ने चौपडा हाईस्कूल में सातवीं कक्षा में पढ रहे माणक की पढाई छुडाकर अपने व्यावसायिक क्षेत्र-खारू पेठिया घाट (आसाम) भेज, व्यापार कार्य में लगा दिया। एक साल बाद पूरा परिवार वहाँ आसाम में आ गया और वहीं रहने लग गया। दस साल माणक को वहाँ रखा गया जिसमें छ साल तक तो देश को देखने भी नहीं दिया गया। उस समय तक आसाम में किसी साधु-साध्वियों का आवागमन भी नहीं हुआ था। (उल्लेखनीय बात है कि आचार्य श्री तुलसी की कृपा से सन् 1972 में सर्वप्रथम साहित्य परामर्शक मुनिश्री बुद्धमलजी पधारे, तब इसी माणक को मुनि मुनिव्रत बन उनके साथ सतों में असम की प्रथम यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।) साधुओं के सपर्क भाव में भावों में उतार-चढाव आता रहा किंतु वैराग्य भाव का अकुर मुरझाया नहीं। बीच में स 2018 में माणक को देश में आने का अवसर मिला तो एक दिन के लिए बीदासर गया। आचार्यश्री तुलसी का

दर्शन अवश्य किया पर सकोचवश गुरु चरणों में वह अपनी भावना रख नहीं पाया। वि स 2019 मे उदयपुर चातुर्मास में गुरुदेव के दर्शन किये। साथ में बहन जेठी थी (जो बाद मे साध्वी चद्रावती बनी) उसकी भी वैराग्य भावना थी। वहाँ मुनिश्री पानमलजी की प्रेरणा से भावना ने बल पकडा और गुरुचरणो में अपनी भावना रख दी। गुरुदेव का शुभाशीर्वाद प्राप्त कर गगाशहर लोट आया। परिवार वाले सगपन करने की तैयारियाँ करने लगे। माणक ने पिताश्री के समक्ष साधु बनने का दृढ निश्चय व्यक्त करते हुए विवाह करने से साफ इकार कर दिया। पिताश्री सेरमलजी ने कहा- पहले तो इतना जोर देकर कभी नहीं कहा, हमने सगपन की बात भी कर ली है। अत शादी करने के बाद भी साधु बन सकता है। फिर दूसरी बात है, अभी कुछ समय से मुकाम मे तू अकेलाही था तो तेरे हाथ के काम सभालने-सलटने हेतु एक बार तो मुकाम चलना ही पडेगा। माणक ने साफ-साफ कह दिया कि यदि आवश्यक हो तो एक बार काम सलटाने साथ चल सकता हू पर वहाँ न मैं रुकूँगा न शादी करवाऊँगा। एक बार मुकाम जाना पडा किंतु काम सभलाकर माणक तो देश में आ गया। परपिताश्री के न आने से दीक्षा मे विलब होता गया। उस अवधि में गगाशहर मे विराजमान मुनिश्री चपालालजी मीठिया की प्रबल प्रेरणा से आचार्य प्रवर की अनुमति प्राप्त कर साधु प्रतिक्रमण कठस्थ कर लिया। इस कार्य में मुनिश्री, समाज भूषण श्री छोगमलजी चोपडा, केशरीचदजी, ताराचदजी बोथरा (बीकानेर) आदि का अविस्मरणीय सहयोग रहा।

काफी प्रयत्न करने पर शेरमलजी देश में आए। सासारिक प्रलोभन और साधु जीवन की कठिनाइयाँ बताने पर भी माणक का मन अविचल रहा। तब वि स 2020 मे लाडनू मे विराजमान आचार्य प्रवर से दीक्षा की अर्ज की। आचार्यश्री ने भाद्रव मास में साधु प्रतिक्रमण सीखने का आदेश दे दिया। वैरागी माणक ने तात्विक ज्ञान पच्चीस बोल, पाना की चर्चा, तेरह द्वार, लघु दण्डक, जैन तत्व प्रवेश (भाग 1, 2 भक्तामर, कर्तव्यषट्त्रिंशिका आदि सीखकर पूर्ण रूप से तैयारी कर ली थी।

दीक्षा : मुनिव्रतजी ने 23 वर्ष की अविवाहित वय मे स. 2020 कार्तिक शुक्ला को मध्याह्न मे आचार्यश्री तुलसी द्वारा लाडनू मे दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा जौह मल्टीपरपज हाईस्कूल के प्रागण में लगभग 8-10 हजार लोगो की उपस्थिति में हुई।

इनके ससार पक्षीय चाचा (मुनि मगन, धर्म, फतेहचदजी) तथा चाची लिछमा ने इनसे पहले एव दो बहनों चद्रावतीजी (1357), शाताकुमारीजी (1371) ने बाद दीक्षा ग्रहण की।

सहयोगी दीक्षित होने के पश्चात मुनिश्री मुनिव्रतजी ने 13 साल मुनिश्री वुद्रमलजी (शार्दुलपुर) के साथ रहकर सुदूर प्रातों (गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आध्रप्रदेश, उडीसा, बगाल, आसम, विहार, उत्तरप्रदेश, पजाब एव हरियाणा आदि) की यात्रा की, जिसमें प्रथम चातुर्मास, राजस्थान से ढाई हजार कि मी की यात्रा कर बगलोर में किया। फिर पॉच साल वे मुनि धनराजजी (सिरसा) के साथ, एक साल मुनि पूनमचदजी (गगाशहर) के साथ रहे। स 2040 से 2056 तक मुनिश्री रविन्द्रकुमारजी (गोगुन्दा) के साथ विहरण कर दूसरी बार दक्षिण प्रात की यात्रा की। धर्म प्रचार, सेवा आदि कार्य में सभी अग्रगण्य साधुओं के पूर्ण सहयोगी रहे।

शिक्षा दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नाममाला, कालुकौमुदी (पूर्वार्ध) जैन सिद्धात दीपिका, भक्तामर, सिन्दूर प्रकर, शात सुधारस, चौवीसी, कुछ व्याख्यान एव गीतिकाएँ आदि कठस्थ किये। प्राकृत, सस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, बगाली, पजाबी आदि भाषाओं का ज्ञान किया।

वाचन अनेक आगम तथा ग्रथों का वाचन किया।

रचना करीब एक सौ गीतिकाओं की, रचना की जो अप्रकाशित है।

सेवा वि स 2033 में साहित्य परामर्शक मुनिश्री बुधमलजी के साथ पद्रह मास तक छापर सेवा केंद्र में वृद्ध सतों की सेवा की। वि स 2040 में मुनिश्री रविन्द्रकुमारजी के साथ गगाशहर में पद्रह मास तक वृद्ध सतों की सेवा की।

तपस्या स 2055 भाद्रव शुक्ला 15 तक उनके तप की तालिका इस प्रकार है-

उपवास	दो	तीन	चार	पॉच	आठ	नौ	ग्यारह	पद्रह	इक्कीस	बाईस
378	38	4	1	3	1	4	1	1	1	1

यह 22 दिन का थोकडा स 2056 में किया जिसमें अधिकाश स्वाध्याय, मौन व जप का क्रम चला।

नोट वि स 56 से 59 कार्तिक पूनम तक तीन विगम वर्जन सहित एकासन 462 करीव, पद्रह मासीय एकातर सहित उपवास 305 करीव, वेले 3, तेला 1, नव 1, वे पारणा व विशेष कारण के अतिरिक्त वि स 2044 से 2057 तक प्राय वर्षों मे एकासन करते रहे हैं।

साधना उनके प्रतिदिन 4-5 घटे मौन, 1 घटा जप और यथाशक्य स्वाध्याय-ध्यान का क्रम चलता है।

आशीर्वाद मुनिश्री मुनिव्रतजी, मुनि धनराजजी (सिरसा) के सिंघाडे में थे। वे जब

धर्मसघ से अलग हुए, तब मुनिव्रतजी ने गहरी सघ निष्ठा का परिचय दिया और शासन मे अनुरक्त रहे। उस सदर्भ मे आचार्यश्री ने स 2038 के गगाशहर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर उन्हें जो प्रशस्ति पत्र प्रदान किया, वह इस प्रकार है-

संस्मरण : स 2029 के गुवाहाटी चातुर्मास की घटना है कि वहाँ मुनि मुनिव्रतजी ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बहिर्भूमि (पचमी) के लिए जाया करते थे। एक दिन वहाँ का स्थानीय असमी भाई द्वेष की भावना से उधर आ गया और जो साथ मे सेवा करने वाला राजस्थानी भाई था, उससे मारपीट की। उसका हल्ला सुनकर मुनिव्रतजी पास में आए तो उन्हे भी गाली-गलौज करने लगा। फिर गुस्से में आकर उनके हाथ से पात्री छीनकर टुकडे-टुकडे कर दिये और मुखवस्त्रिका पर झपट मारता हुआ जोर से धक्का देकर चलता बना। मुनिव्रतजी सभल गए और नदी मे गिरते-गिरते बच गए।

सयम जीवन मे जहाँ अत्यधिक भक्ति भावना व सम्मान देखने को मिलता है, वहाँ कभी-कभी अपमान व तिरस्कार भी सहन करना पडता है। हर स्थिति में समता रखना ही साधु जीवन की कसौटी है।

(परिचय पत्र)

आचार्यश्री का संदेश

अर्हम्

आशीर्वाद पत्र

मुनि मुनिव्रत!

तुमने सघ विमुखता के वर्तमान झझावात में रहकर भी जो सघ निष्ठा का परिचय दिया, उसके लिए मैं जयाचार्य निर्वाण शताब्दी की सपन्नता के अवसर पर तुम्हें साधुवाद देता हूँ और आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारी सघ निष्ठा उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती रहे।

स. 2038 माघ शुक्ला 7 — आचार्य तुलसी

गंगाशहर (राजस्थान)

1357/9/377 साध्वी चंद्रावतीजी का परिचय

दीक्षा सवत् 2023 वर्तमान

परिचय साध्वी श्री चद्रावतीजी का जन्म गगाशहर (राजस्थान प्रात, बीकानेर सभाग) के छाजेड (ओमवाल) गोत्र में स 2006 फाल्गुन कृष्णा 5 को हुआ। उनका मूल नाम जेठी कुमारी था। पिता का नाम सेरमलजी और माता का नाम मूलीदेवी था।

वैराग्य माता-पिता की धार्मिक अभिरुचि व सत्प्रेरणा से बालिका जेठी कुमारी के जीवन में सत्सस्कार जागृत हुए। एक बार बालिका ने बडी बहन का खतरनाक डिलेवरी केस देखा, जिससे मन ग्लानि से भर गया, ससार से विरक्ति हो गई। पर अब क्या करना चाहिए यह निर्णय नहीं कर सकी। स 2018 में बडे भाई मुनिव्रतजी अपनी दीक्षा की प्रार्थना के लिए गुरु दर्शनार्थ बीदासर गए। तब बहन जेठी भी साथ में गई। समझ पडने के बाद प्रथम बार गुरुदेव के दर्शन किये। आचार्यवर के आभामडल को देखकर भाई के साथ दीक्षित होने का जेठी ने दृढ़ निश्चय कर लिया। माता-पिता के समक्ष अपनी भावना रखी तो वे दो साल तक कठिन परीक्षा लेते रहे। स 2020 भाद्रव महीने में मुनिव्रतजी को दीक्षा का आदेश प्राप्त हुआ। तब बहिन जेठी की किस्मत खुली और घर वाले सहमत हुए। फिर तीन साल तक पारमार्थिक शिक्षण सस्था में रहकर शिक्षा एव साधनाभ्यास किया। सस्था में नाम चद्रकुमारी था।

दीक्षा मुमुक्षु चद्रा कुमारी ने 17 वर्ष की अविवाहित (नाबालिग) वय में स 2023 कार्तिक कृष्णा 7 को आचार्य श्री तुलसी द्वारा बीदासर में सात मुमुक्षु आत्माओं के साथ दीक्षा स्वीकार की। दीक्षित होने के बाद नाम चद्रावतीजी रखा।

सान्निध्य दीक्षित होने के बाद साध्वी चद्रावती 4 महीने गुरुकुल वास में रही। फिर आठ साल तक दीर्घ तपस्विनी साध्वी श्री अणचा जी (770) श्री डूगरगढ़ की सेवा में रहीं। फिर अन्य अग्रगण्या साध्वियों के साथ रहीं।

शिक्षा दशवैकालिक सूत्र, थोकडे, पच्चीस बोल, पाना की चर्चा, हित शिक्षा के पच्चीस बोल, लघु दडक, बावन बोल, इक्कीस द्वार, कर्म प्रकृति, जैन तत्व प्रवेश, भाग-1-2।

सस्कृत कालू कौमुदी, नाम माला (दो काड) जैन सिद्धात दीपिका, पच सूत्र,

शिक्षाषण्णवति, देव गुरु स्तोत्र, भक्तामर, कल्याण मदिर, राम चरित्र आदि छोटे-बडे 15 व्याख्यान कठस्थ किये। कई आगमो का वाचन किया।

कला : सिलाई (बारीक बखिया आदि निकालना) रगाई (पात्र आदि लाल-काले रगना), नारियल की टोपसिया आदि बनाने की कला। 200 पन्ने लिपिबद्ध किये।

साहित्य : कुछ व्याख्यान, गीतिका, कविता आदि बनाए।

तपस्या : स 2056 तक

उपवास	दो	तीन	चार	पॉच	छ	सात	आठ	नौ	पद्रह
1573	35	15	2	2	1	1	1	1	1

अढाई सौ प्रत्याख्यान दो बार, दस प्रत्याख्यान 25 बार, आयम्बिल के तेले 25, आयम्बिल के पचोले 5, 20 वर्ष श्रावण-भाद्रव मे एकातर किये। वर्तमान में एकातर चालू है। वर्षी तप करने का विचार है।

सेवा : (1) स. 2039 में साध्वी दाखाजी (982) तिलोडी की अढाई मासी तपस्या के समय तथा पारणे के दिन शरीर पर सूज्रन, बदबूमय उल्टियॉ व दस्त लगने पर तीन दिन विशेष सेवा की।

(2) स 2041 में साध्वी केशरजी (976) पडिहारा के बवासीर व नासूर का ऑपरेशन होने पर कुछ महीनों तक सेवा की।

निम्न साध्वियों को साधन द्वारा पहुॅचाने मे सहयोग रहा है। (1) स. 2052 में साध्वी जतनकुमारीजी, पानकुमारीजी (सरदार शहर) को ऊमरी से आमेट तक 50 कि.मी. तथा आमेट से लाडनू तक 250 कि मी । (2) स 2054 में साध्वीश्री मानकुमारीजी (सुजानगढ़) को लाडनू से बीदासर तक 40 कि.मी । (3) स 2059 साध्वी श्री भाग्यवतीजी (वाव) का टापरा से लाडनू तक 350 कि मी.।

1371/9/391 साध्वी शांताकुमारीजी का परिचय

दीक्षा सवत् 2025 वर्तमान

परिचय साध्वी श्री शाताकुमारीजी का जन्म गगाशहर छाजेड (ओसवाल) गोत्र में स 2009 मृगसर कृष्णा चतुर्थी को हुआ। पिता का नाम सेरमलजी और माता का नाम मूलीदेवी था।

वैराग्य शाता कुमारीजी के बडे भाई मुनिश्री मुनिव्रतजी स 2020 में दीक्षित हो गए थे। बडी बहन चद्रावती दीक्षा लेने के लिए तैयार होकर पारमार्थिक शिक्षण सस्था में प्रविष्ट हो चुकी थी। तब शाताकुमारी ने सोचा एक भाई दीक्षित हो गए, बहिन दीक्षा के लिए उद्यत हो रही है। अगर मैं शादी कराऊँगी तो अच्छी नहीं लगूगी। अत मुझे भी दीक्षा लेनी है। उस समय उसकी उम्र 11 वर्ष की थी। ज्ञान विशेष नहीं था। फिर साध्वियों का सपर्क कर कुछ तत्वज्ञान सीखा। पाँच द्रव्यों से अधिक खाने व घृत का त्याग कर दिया। माता-पिता के सामने अपने विचार रखे तो उन्होंने सहमति दे दी। स 2021 में आचार्यश्री तुलसी का चातुर्मास बीकानेर में हुआ। पिताजी ने शाताकुमारी को साथ लेकर गुरुदेवके दर्शन किये और दीक्षा के लिए निवेदन कर दिया। फिर आश्विन शुक्ला नवमी को पारमार्थिक शिक्षण सस्था में प्रवेश कर लगभग चार साल तक शिक्षा एव साधनाभ्यास किया।

दीक्षा मुमुक्षु शाताकुमारी ने 16 वर्ष की अविवाहित (नाबालिग) वय में स 2025 कार्तिक कृष्णा अष्टमी को आचार्यश्री तुलसी द्वारा मद्रास में दीक्षा ग्रहण की।

शिक्षा दशवैकालिक, उत्तराध्ययन (13 अध्ययन), आलम्बन सूत्र, थोकडे पच्चीस बोल, तत्व चर्चा, लघु दटक, कर्म प्रकृति, इक्कीस द्वार, जैन तत्व प्रवेश। सस्कृत-नाममाला, कालुकौमुदी, जैन सिद्धात दीपिका, मनोनुशासन, पच सूत्र, अर्हत वाणी, शात सुधारस, भक्तामर, देवगुरु स्तोत्र, अन्य चौबीसी, आचार बोध सस्कार बोध, व्यवहार बोध, श्रावक सबोध आदि कठस्थ किये। कुछ आगम आदि का वाचन किया। कालीन दिनों में दशवैकालिक सूत्र कठस्थ और एक दिन में 100 श्लोक कठस्थ करके सुनाए।

साहित्य : कई परिसवाद, एकागी व गीतिकाएँ बनाई।

कला : सिलाई (बारीक बखिया आदि निकालना), रगाई की कला में विशेष रुचि।

तपस्या : अढाई सौ प्रत्याख्यान 1 बार, दस प्रत्यख्यान पॉच बार किये।

उपवास	तीन	चार	आठ
लगभग 500	3	1	1

साधना : प्रतिदिन 2 घटे मौन, कुछ समय स्वाध्याय व जप का क्रम चलता है।

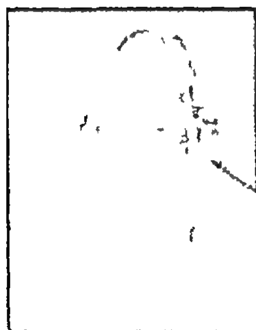
सेवा : स. 2031 मे साध्वी श्री केशरजी (पडिहारा) के बवासीर व नासूर का ऑपरेशन होने पर कुछ महीनो तक सेवा की। स 2052 में साध्वी श्री चपाजी (राजगढ़) को सरदार शहर से लाडनू तक तथा स. 2056 में साध्वी भाग्यवतीजी (वाव) को टापरा से लाडनू तक साधन द्वारा लाने मे सहयोग किया। इसके लिए आचार्यश्री ने साध्वीश्री को शीतकाल की दो बारी और दो महीने विगय की बख्शीश की।

सान्निध्य : साध्वी शाताकुमारीजी दीक्षित होने के बाद एक साल गुरुकुल वास में और पॉच साल तक दीर्घ तपस्विनी साध्वी श्री अणचाजी (660) श्री डूगरगढ़ की सेवा मे रही, स 2031 में उनके दिवगत होने के बाद अन्य अग्रगण्या साध्वियों के साथ विहरण करती रही। स. 2057 में भीनासर में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने उन्हें अग्रगण्य बनाया।

1381/9/401 साध्वी संवेगप्रभाजी लूणकरणसर का परिचय

(साध्वी श्री लिछमा जी की भतीजी)

दीक्षा सवत् 2027 वर्तमान



परिचय साध्वी श्री सवेगप्रभाजी का जन्म गगाशहर (राजस्थान प्रात, बीकानेर सभाग) के डागा (ओसवाल) गोत्र में स 2007 भाद्रव शुक्ला 10 (परिचय पत्र में कृष्णा है) को हुआ। उनका मूल नाम सुशीला कुमारी था। पिता का नाम रामलालजी और माता का नाम बालूदेवी था। माता-पिता ने छोटी उम्र में ही पुत्री सुशीला का विवाह लूणकरनसर के छाजेड परिवार में कर दिया। उनके पति का नाम भीखमचदजी (शोभाचद्रजी के पुत्र) था।

वैराग्य सयोग के पीछे वियोग का ऐसा चक्र चला कि शादी के छह महीने पश्चात ही टायफाइड के बिगडने पर उनके पति का देहावसान हो गया। उस विरह व्यथा को सहन करती हुई तीन साल तक वे गृहवास में रहीं। उनमें धार्मिक सस्कार पहले से ही थे। फिर उन सस्कारों में और अभिवृद्धि हुई। निरतर चार-पाँच सामायिक करना, अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथियों के दिन हरी सब्जी खाने का तथा रात्रि में भोजन-जल का त्याग कर दिया। भक्तामर, शील की नौ बाड तथा जैन तत्व प्रवेश आदि कुछ थोकडे कठस्थ कर लिये।

स 2024 मे उनके मन में वैराग्य की भावना जागी, जो मुनि फतहचदजी (ससार पक्षीय फूफाजी) द्वारा प्रेरणा मिलने से वर्धमान हो गई। उसके बाद अभिभावक जन की अनुमति लेकर पारमार्थिक शिक्षण सस्था में प्रवेश कर लिया। वहा साढे तीन साल तक क्रमानुसार अध्ययन व साधना का अभ्यास किया। परीक्षा में हमेशा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुई।

दीक्षा मुमुक्षु सुशीला ने साढे 20 वर्ष की विवाहित अवस्था में स 2027 चैत्र कृष्णा पचमी को आचार्य श्री तुलसी द्वारा लाडनू में पॉच मुमुक्षु बालाओं के साथ दीक्षा स्वीकार की।

साहित्य : कई परिसवाद, एकागी व गीतिकाएँ बनाई।

कला : सिलाई (बारीक बखिया आदि निकालना), रगाई की कला में विशेष रुचि।

तपस्या : अढाई सौ प्रत्याख्यान 1 बार, दस प्रत्यख्यान पॉच बार किये।

उपवास	तीन	चार	आठ
लगभग 500	3	1	1

साधना : प्रतिदिन 2 घटे मौन, कुछ समय स्वाध्याय व जप का क्रम चलता है।

सेवा : स 2031 मे साध्वी श्री केशरजी (पडिहारा) के बवासीर व नासूर का ऑपरेशन होने पर कुछ महीनो तक सेवा की। स. 2052 मे साध्वी श्री चपाजी (राजगढ़) को सरदार शहर से लाडनू तक तथा स 2056 मे साध्वी भाग्यवतीजी (वाव) को टापरा से लाडनू तक साधन द्वारा लाने मे सहयोग किया। इसके लिए आचार्यश्री ने साध्वीश्री को शीतकाल की दो बारी और दो महीने विगय की बख्शीश की।

सान्निध्य : साध्वी शाताकुमारीजी दीक्षित होने के बाद एक साल गुरुकुल वास में और पॉच साल तक दीर्घ तपस्विनी साध्वी श्री अणचाजी (660) श्री डूगरगढ़ की सेवा में रही, स. 2031 में उनके दिवगत होने के बाद अन्य अग्रगण्या साध्वियों के साथ विहरण करती रही। स 2057 में भीनासर में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने उन्हें अग्रगण्य बनाया।

1381/9/401 साध्वी संवेगप्रभाजी लूणकरणसर का परिचय

(साध्वी श्री लिछमां जी की भतीजी)

दीक्षा सवत् 2027 वर्तमान



परिचय साध्वी श्री सवेगप्रभाजी का जन्म गगाशहर (राजस्थान प्रात, बीकानेर सभाग) के डागा (ओसवाल) गोत्र में स 2007 भाद्रव शुक्ला 10 (परिचय पत्र में कृष्णा है) को हुआ। उनका मूल नाम सुशीला कुमारी था। पिता का नाम रामलालजी और माता का नाम बालूदेवी था। माता-पिता ने छोटी उम्र में ही पुत्री सुशीला का विवाह लूणकरनसर के छाजेड परिवार में कर दिया। उनके पति का नाम भीखमचदजी (शोभाचद्रजी के पुत्र) था।

वैराग्य सयोग के पीछे वियोग का ऐसा चक्र चला कि शादी के छह महीने पश्चात ही टायफाइड के बिगडने पर उनके पति का देहावसान हो गया। उस विरह व्यथा को सहन करती हुई तीन साल तक वे गृहवास में रहीं। उनमें धार्मिक सस्कार पहले से ही थे। फिर उन सस्कारों में और अभिवृद्धि हुई। निरतर चार-पॉच सामायिक करना, अष्टमी, चतुर्दशी आदि तिथियों के दिन हरी सब्जी खाने का तथा रात्रि में भोजन-जल का त्याग कर दिया। भक्तामर, शील की नौ बाड तथा जैन तत्व प्रवेश आदि कुछ थोकडे कठस्थ कर लिये।

स 2024 में उनके मन में वैराग्य की भावना जागी, जो मुनि फतहचदजी (ससार पक्षीय फूफाजी) द्वारा प्रेरणा मिलने से वर्धमान हो गई। उसके बाद अभिभावक जन की अनुमति लेकर पारमार्थिक शिक्षण सस्था में प्रवेश कर लिया। वहॉ साढ़े तीन साल तक क्रमानुसार अध्ययन व साधना का अभ्यास किया। परीक्षा में हमेशा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुई।

दीक्षा मुमुक्षु सुशीला ने साढ़े 20 वर्ष की विवाहित अवस्था में स 2027 चैत्र कृष्णा पचमी को आचार्य श्री तुलसी द्वारा लाडनू मे पॉच मुमुक्षु आत्माओं के साथ दीक्षा स्वीकार की।

सान्निध्य : साध्वी सवेगप्रभाजी ने साध्वी श्री मनोहराजी (871) सुजानगढ़ आदि अग्रगण्या साध्वियो के साथ विहरण कर अनेक प्रातों की यात्राएँ की।

शिक्षा : आगम-दशवैकालिक, उत्तराध्ययन (30 अध्ययन)

थोकडे : पच्चीस बोल, पाना की चर्चा, लघु दडक, इक्कीस द्वार, जैन तत्व प्रवेश, कालू तत्व शतक, सस्कृत नाममाला (दो काड) कालु कौमुदी, जैन सिद्धात दीपिका, पच सूत्र, कर्तव्य षट त्रिशिका, भक्तामर, कल्याण मदिर, शात सुधारस, भिक्षु अष्टक, अन्य चौबीसी, आराधना, आचार बोध, सस्कार बोध, व्यवहार बोध, तेरापथ प्रबोध व कई गीतिकाएँ आदि कठस्थ किये।

वाचन : कुछ आगम व सघीय साहित्य का वाचन किया।

साहित्य : हाडारानी आदि पॉच-सात व्याख्यान व अनेक गीतिकाएँ बनाई।

कला : सिलाई, रगाई, रजोहरण, मुखवस्त्रिका आदि बनाने की कुशलता प्राप्त की।

तपस्या : स. 2056 तक 12 महीनो में लगभग चार महीने छह विगय वर्जन

उपवास	दो	तीन	नौ
सैकडो	5	2	1

साधना : प्रतिदिन प्राय 300 गाथाओं का स्वाध्याय, आधा घटा ध्यान व जप का क्रम।

सेवा : रुग्णावस्था के समय साध्वी श्री सूरजकॅवरजी (1208) खाटू की 4 साल व साध्वी श्री झमकूजी (1175) सरदार शहर की सेवा की।

साध्वी श्री सूरजकॅवरजी का शोलापुर से हैदराबाद तक फिर हैदराबाद से रतनगढ़ साधन द्वारा लाने का काम पडा। साध्वी झमकूजी को काकरोली से चाडवास तक साधन द्वारा लाने का काम पडा। सेवादिक कार्य के लिए आचार्य प्रवर ने कई बार कल्याणक बख्शीश दिये।

(परिचय पत्र)

एक दिव्यात्मा का महात्यागमय महाप्रयाण

(साध्वी श्री लिछमाजी के ससार पक्षीय श्वसुर)

श्री गगाशहर (बीकानेर) निवासी सुश्रावक श्री चुन्नीलालजी छाजेड समता, सरलता, सहिष्णुता, लेन-देन की सफाई, सादगी-प्रधान धर्म के साकार रूप थे। त्याग, स्वाध्याय उनके श्वासोच्छ्वास थे। तप के विभिन्न प्रकार उनके प्राण थे। ज्ञान और आचरण का उनमें अपूर्व सगम था। सामायिक साधना में अप्रमत्तता तथा स्वीकृत व्रतोपव्रतों के पालन में उनकी सतत जागरूकता अनुकरणीय थी। पदार्थ-निरपेक्ष आत्मानद में अधिकाधिक रमण करने वाले वे श्रावक वेश में नैसर्गिक साधु के समकक्ष ही थे।

मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद', मुनिश्री धर्मचदजी 'पीयूष' एव मुनिश्री फतहचदजी 'पकज' के पिता, साध्वी श्री लिछमा जी के श्वसुर, मुनिश्री मुनिव्रतजी, साध्वी श्री चद्रावतीजी तथा साध्वी श्री शाताकुमारी जी के पितामह थे। अपने परिवार के प्राणाधिक इतने प्रिय सदस्यों को जग कल्याण के लिए समर्पित करने वाले इतिहास दुर्लभ पुरुषों में से वे एक थे। जैन शासन, भैक्षवगण व गणपति युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी में उनकी अटूट श्रद्धा थी। जब भी वे पुत्र-सतों की सेवा में जाते, तब आशीर्वचन देते हुए सहज भाषा में कहते- 'आप गुरारी, आज्ञा में सुखे-सुखे विचरो, घणो-घणो उपकार करो, समाचार सुण-सुण म्हारो जीव घणो राजी हुवे।' उनके वे सहज शब्द गुरुदेव के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा के प्रतीक थे। जहाँ तक मैंने सुना है, एक प्रसग पर स्वय गुरुदेव ने भी अपने मुखारविन्द से फरमाया था- 'चुन्नीलालजी क्षायक सम्यक्त्व का धनी दीखे है।' उनके लिए प्रयुक्त 'सतयुगी' भद्र प्रकृति के धनी आदि सम्माननीय विशेषण मैंने स्वय कइयों के मुँह से सुने हैं। लीजिये उनके त्याग तपोमय उज्ज्वल जीवन और पादोगमन सदृश अनशन की प्रेरक घटना यहाँ प्रस्तुत है-

जीवन झाँकी

वि स 1941 ज्येष्ठ शुक्ला नवमी के दिन बीकानेर जिले के ग्राम गेरसर में उनका जन्म हुआ था। पिता का नाम श्री हेमराजजी तथा माता का नाम किस्तूराजी था। उनके प्रेमाबाई नामक एक बडी बहन थी, जिनका विवाह रायसर निवासी जीवनमलजी बोथरा के साथ हुआ था। परतु बालपन में ही विधवा हो जाने से वे अपने भाई के ही पास जीवन

भर रही। वे अपने साहस व सच्चाई के लिए प्रख्यात थी। भाई के परदेस गमन के बाद देश मे घर-द्वार की सभाल के साथ छोटे-छोटे भतीजों के बाल-चपलता भरे क्रिया-कलापो पर कडी नजर रखते हुए वह उन्हें धर्मनिष्ठ बनाने का प्रयत्न करती थी। वि स 1954 में छाजेड जी द्रव्योपार्जन के लिए बगाल गए। रगपुर जिलातर्गत तारागज (बगाल) में 51 तथा 71 रुपयों की साल मे दो वर्ष तक रहे तथा स. 1957 से 59 तक तीन वर्ष के अपने निजी व्यापार मे 1800 रु कमाए। उस सस्ते जमाने में यह धनराशि बहुत बडी थी।

इस तरह पॉच वर्ष की पहली मुसाफिरी करके वे जब वापस देश आए तो देखा, पीछे से स. 1955 मे पिताजी का व 1959 मे माताजी का देहात हो चुका है। इसलिए तत्कालीन जन प्रथानुसार अपनी हाथ की कमाई से उन्होंने साढ़े सात मण हलुवा बनाकर (उस समय घी का भाव एक सेर, दस आना भर था) अपने माता-पिता का मृत्युभोज किया, जिसमे शायद सात या नौगॉवो के लोगों को जिमाया था। उसमें करीब 700-800 रुपयों का खर्च हुआ।

सरलता या दुर्दैव वश हुए अपने पिता के ऋण को चुकाकर उन्होंने वि स. 1964 में 23 वर्ष की उम्र मे रूणिया गॉव निवासी श्री खूमचदजी सावनसुखा की सुपुत्री धापूदेवी से विवाह किया। स. 1974 में गेरसर से गगाशहर में आ गए और स. 1975 में घर बनाकर बस गए।

सौभाग्यवती एक पुत्री और चिरजीवी पॉच पुत्र उनके क्रमश स 1968, 70, 77, 80, 84 और 88 में हुए जो सभी अपने-अपने क्षेत्र में सुखी व सपन्न रहे हैं। मध्यावधि में कुछ वर्ष साल मे रहकर वि.स 1982 से 1993 तक गाईबन्धा (वर्तमान बगलादेश) मे कपडे, गल्ले, सोने, चॉदी और बधक का सीर-साझे में कारोबार किया। तत्पश्चात चुन्नीलाल सेरमल नाम की फर्म से अपना स्वतत्र काम-धधा (व्यापार) किया जो 1996 तक चलता रहा। उसके बाद वे प्राय बगाल नहीं गए और स 1999 (जबसे पुत्र मुनि मगनमलजी 'प्रमोद' की दीक्षा हुई) से व्यापार का परित्याग ही कर दिया। उस समय से जीवन के अतिम क्षणों तक वे सतत जागरूकता व पूर्ण तत्परता से धर्म-ध्यान में लगे रहे। वे बडे ही सौभाग्यशाली उन विरल नररत्नों में से एक थे, जिन्होंने प्राय 86 वर्ष की दीर्घायु तक किसी भी प्रिय स्वजन का उल्लेखनीय कष्टकारक वियोग नहीं देखा। उनका भरापूरा परिवार उनके सामने रहा। वे भरे पूरे व सुखी परिवार को ही छोडकर गए।

त्याग : तपोमय जीवन का दिग्दर्शन

देव पूज्य, श्रमण श्रेष्ठ मुनिश्री पृथ्वीराजजी स्वामी के पास श्री चुन्नीलालजी ने समकित (गुरु धारणा) ग्रहण की। स 1966 में तेरापथ के सप्तमाचार्य श्री डालगणी के दर्शन किये, तबसे उनकी धर्म भावना उत्तरोत्तर बढती ही गई। उनकी ही स्मृति के आधार पर उन्होंने निम्न बडे त्याग किये

वि स 1991 में ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया और चौविहार प्रारभ किया। स 2000 से दो सामायिक नित्य करने लगे और चारों खद्य उठा दिये। अर्थात् कच्चा पानी, रात्रि भोजन, अब्रह्मचर्य तथा समस्त हरी सब्जी का त्याग कर दिया। स 1999 से बारह व्रत धारण कर एक पोरसी का उन्होंने व्रत लिया। स 2007 मे अणुव्रती बने और 2008 से दो पोरसी का नियम ले लिया। पर वे दिन में तीन-तीन पोरसी भी कर लेते थे। इस तरह लगभग दिन के 20-21 घटे वे त्याग में ही बिताते थे। 41 द्रव्यों से अधिक खाने का उनके जीवन पर्यत त्याग था। परतु वे 15-20 चीजों से अधिक द्रव्य प्राय काम में नहीं लेते थे। वर्षों पहले से अग्रेजी दवा का उन्होंने त्याग ले लिया था। वि स 1999 में चतुर्थ पुत्र मगनमलजी 2000 में सबसे छोटे पुत्र धर्मचदजी तथा 2006 में अपने साथ वाले तृतीय पुत्र फतहचदजी व उनकी धर्मपत्नी लिछमा जी का महानतम दान (सात वर्षीय पौत्र के पालन की पूर्ण जिम्मेदारी को 66 वर्ष की वृद्धावस्था में अपने पर लेते हुए)। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के पवित्र करकमलों में किया जो अपने आप में अन्यत्र दुर्लभ, विरल घटना है। धर्म सघ की सेवा के लिए इस प्रकार अपना कलेजा ही निकालकर रख देना, धर्म के प्रति दृढ़ता का एक प्राणवान प्रमाण है।

कम से कम सात और अधिक से अधिक 11 तक सामायिकें छाजेडजी सामान्यतया नित्य कर लिया करते थे। जहाँ तक मैंने देखा, वे इतनी बडी उम्र में भी टेका (दीवार का सहारा) तक नहीं लेते थे। ज्ञान-सागर थोकडों की पुस्तक को पढ़ते ही रहते थे। स्वाध्याय व जाप के अतिरिक्त अन्य बातें सामायिक में नहीं करते थे। थोकडों के आधार पर उनका तत्वज्ञान अगाध था। पच्चीस बोल, चर्चा, तेरह द्वार, लघु दण्डक, बावन बोल, बासठिया, अल्पाबहोत, गतागत, प्रतिक्रमण आदि अनेक थोकडे तथा गीतिकाएँ उनके कठाग्र थीं। तपस्या में आठ तक की लडी की हुई थी। उनकी ही स्मृति के आधार पर आठ 1, सात 3, छ 5, पाँच 22, चोला 20, तेला 33, बेला 55 हुए। स 1999 से 2026 तक वे साल में करीब 50-60 उपवास कर लिया करते थे। प्राय 35 वर्ष तक श्रावण-भाद्रव मास में एकातर करते रहे। इस तरह उनके त्याग और तपस्या की विशाल तालिका है।

व्रत-पालन में वज्रदृढता

स्वर्गारोहण के चौदह वर्ष पूर्व वि स 2012 मे उनके शरीर मे भयकर बीमारी हो गई थी। जिसकी भीषणता के कारण स्मृति विभ्रम की अवस्था तक उत्पन्न हो गई थी। वैसी स्थिति मे भी वे बराबर कहते रहते कि 'रात हो गई है, मुझे दवा मत दो, कहीं मेरे व्रत का भग न हो जाए।' उस वर्ष ऋजुमना साध्वी श्रेष्ठा मातुश्री वदनाजी का चातुर्मास गगाशहर मे ही था। जब वे दर्शन देने हेतु पधारती, तब वे कहते, मुझसे तपस्या (उपवास, बेला, तेलादि) तो नहीं होते परतु अनशन करवा दो। अतरात्मा की इस प्रबल ध्वनि का ही सुपरिणाम था कि वि स 2026 में असाध्य वेदना में भी चित्त की प्रसन्नता व पूर्ण जागरूकता के साथ उनकी वह भावना (अनशन की इच्छा) पूर्ण हुई।

मृत्यु के कुछ पहले ही अपनी मृत्यु का पूर्व ज्ञान हो गया था, ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि एक मास पहले से ही उन्होने अपने महाप्रयाण की तैयारी मोह त्याग के रूप में प्रारभ कर दी थी। घर का सारा हिसाब-किताब पोतेहु बहु (मेरी धर्मपत्नी) को समझा दिया अ्रैर आसाम मे मुझको लिख दिया था कि आज तक मैं घर की सार सभाल करता रहा, अब मैंने बहु को सब कुछ सभला दिया है। इस तरह क्रमश मोह-त्याग की प्रक्रिया, गृह भार तथा प्रपौत्रो के अनुराग मुक्ति से प्रारभ करके अतिम दिनों में वे सर्वथा मोह मुक्त बन गए थे।

पूज्य दादाजी के शरीर की निरतर क्षीयमान अवस्था को देखकर जब फूफाजी श्री जेसराजजी, बुआजी श्रीमती पानीबाई व अन्य पारिवारिक जन कहते कि मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद' आदि पुत्र-सतो को दर्शन देने हेतु पधारने का आदेश फरमाने का निवेदन प्रात स्मरणीय गुरुदेव से करवाएँ? इस प्रश्न के उत्तर मे वे सदा कहते- 'नहीं, मेरे दर्शन ही नहीं हो सकेगे क्योकि मुनिश्री अभी करीब 400 मील दूर बडनगर (म.प्र.) में हैं। आगे गर्मी का समय आ रहा है। सतो को लबे विहारो का व्यर्थ कष्ट होगा।' इस कथन से भी ज्ञात होता है कि उन्हे निश्चित ही स्वर्गगमन का पूर्वज्ञान हो गया था।

उनके महाप्रयाण का पूर्व ज्ञान इस बात से भी सिद्ध होता है कि उनकी सुपुत्री श्रीमती पानीबाई उनकी बढ़ती हुई वेदना और कमजोरी को देखकर जब उनसे पूछती कि भाई सूरजमल और भतीज झॅवरलाल को तार देकर बुलवा दें? तब वे कहते- नहीं, काम-काज के दिन हैं। अत अभी नहीं, नेडे नाके देखी जासी। पारिवारिक सदस्य साश्चर्य कहते- नेडे-नाके का पता पडता है क्या? विवाह थोडे ही है जो अमुक दिन या अमुक समय पर आ जाएँगे। परतु वे यो ही कहते हुए टालते रहते। लगता है, उन्हें पूर्ण विश्वास

था। आखिर फाल्गुन शुक्ला छठ को उन्होंने कहा- अब तार देकर बुला लो। तार दिया गया। सप्तमी को तार आसाम में पहुँच भी गया। तत्क्षण रवाना होकर मैं (पौत्र झँवरलाल) तथा पुत्र सूरजमलजी क्रमश दशमी की शाम और ग्यारस को प्रात पहुँच गए। अष्टमी और दशमी को उन्होंने उपवास किये। एकादशी को मेरे अति आग्रह पर थोडी सी उकाली लेकर कहने लगे- 'आने वाले सब आ गए, अब विलब क्यों? मुझे अनशन करवा दो।' तत्क्षण निवेदन करने पर मिष्टभाषी मुनिश्री चपालालजी, मुनिश्री डूगरमलजी आदि चार सत घर पर पधारे। सविधि वदना के अनतर व्रत निपजाकर अत्यत प्रसन्नतापूर्वक स 2026, फाल्गुन शुक्ला एकादशी तदनुसार 18 3 1970 बुधवार को 11 बजकर 5 मिनट पर उन्होंने तिविहार अनशन ग्रहण किया। पूरा दिन स्तवन सुनने और आने-जाने वाले लोगों से खमत खामणा करने में बीता। सध्या को पूर्ण सजगता से प्रतिक्रमण सुना।

उल्लेखनीय बात यह थी कि अनशन करने के बाद जैसे सुलाया गया था, प्राय वैसे ही वे सोये रहे। अगोपागों को (सिवा गौडे को छोडकर, जिसमें भारी दर्द था) हिलाने का भी काम नहीं था। ऐसा पादोपगमन सदृश अनशन अनेक मुनियों के लिए भी अति दुर्लभ होता है, जो छाजेडजी को सुलभ हो गया। उसी रात की अतिम घडियों में- पुद्गल क्षीण पडते देखकर ज्येष्ठ पुत्र सेरमलजी ने पूछा- चौविहार अनशन करवा दूँ? इस कथन पर महाप्रयाण के मात्र 15 मिनट पहले हाथ जोडकर उन्होंने चौविहार अनशन स्वीकार कर लिया। ओम् शाति के नैरतरिक जप की लय में पूर्ण समाधि, प्रसन्नता और सजगता में एकादशी की पिछली रात को 5 बजकर 50 मिनट पर वे महाप्रयाण कर गए। इतने कम समय (लगभग 18 घटे के अनशन में) जो परिणामों की वर्धमान श्रेणी रह सकती है, उसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। हाँ तो उनके परिणामों की श्रेणी बहुत ही चढ़ती हुई रही। इस तरह आगमो की वाणी में अति दुर्लभ 'पडित मरण' तथा श्रीमद् भगवद् गीता के श्लोक-

'ओ मित्येकाक्षर ब्रह्म, व्याहरन् मामनुस्मरन्' य प्रयातित्त्यजन्देह, स याति परमागतिम्॥' के अनुसार उन्होंने परम गति को प्राप्त किया।

द्वादशी के दिन साढ़े नौ बजे गाजे-बाजे के साथ बैकुठी निकाली गई, जिसे सारे शहर में घुमाया गया। लगभग 12 बजे श्मशान पहुँचकर देह सस्कार किया गया जो एक बजे समाप्त हुआ। प्राय 350-400 लोग अतिम यात्रा मे सम्मिलित थे। उनकी सारी श्रेष्ठ मनोकामनाएँ पूर्ण हुईं। सारे काम ऊँचे दर्जे के हुए।

मुझे रह-रह कर उस समय मेरे बचपन की एक घटना का स्मरण हो रहा था। मैं

छोटा था, तबकी बात है- एक दिन एक सत का स्वर्गवास हो गया था, इससे शहर में भारी चहल-पहल थी। बाजे बज रहे थे। रुपए-पैसे उछाले जा रहे थे। बैकुठी में सत का पार्थिव शरीर विराजमान था। लोग जय-जय कार कर रहे थे। मैं उस दृश्य को देखकर बहुत प्रभावित हुआ और घर आकर दादाजी से कहने लगा- 'दादाजी, मरने के बाद इस प्रकार गाजे-बाजे से जय-जयकार करते हुए ले जाना बहुत अच्छा लगता है।' वे सहज स्वर में बोले- 'बेटा! अच्छा तो लगता है परतु इस प्रकार का मरण तो महान पुण्यात्मा सतो को ही मिलता है।' सुनकर मैंने बाल सुलभ चपल स्वर मे कहा था- 'दादाजी! क्या आप महानात्मा नहीं हैं? आपने अपने घर के सात सदस्यो को सयम-साधना व धर्मसघ की सेवा करने हेतु दीक्षा की आज्ञा प्रदान की और आपका स्वय का त्याग-तपोमय जीवन भी किसी साधु से क्या कम है? मैं आपको भी गाजे-बाजे के साथ बैकुठी में बिठाकर ले जाऊँगा।'

उस समय प्रसन्न मुद्रा में दादाजी ने कहा था- 'बेटा! तेरी जबान फले।' उस दिन तो वह बात, बात मात्र होकर रह गई थी। किंतु स 2026 की फाल्गुन शुक्ला एकादशी को प्रसन्नता से बोलते हुए उनका अनशन स्वीकार तथा द्वादशी का दिव्य महाप्रयाण ठीक वैसा ही हुआ, जैसा उस दिन का था। अत्यल्प काल में बनी-बनाई बैकुठी सहज ही में मिल गई। बाजो के लिए कइयो ने मनाही की तो मैंने कहा- 'दादाजी मेरे हैं, आपके नहीं। मैंने वचन दे रखा है उनकी बैकुठी उठेगी तो बाजे होंगे, तभी उठेगी, अन्यथा नहीं।' मेरा निश्चय रग लाया और वही हुआ जिसका मेरे हृदय में पूर्व चित्र अकित था। बडे-बडे बुजुर्ग व गणमान्य लोग परस्पर में बतियाते हुए सुने गए। चुन्नीलालजी ने जन्म सफल कर लिया है। वह दिन धन्य होगा, जब हमको भी ऐसा ही अनशन आएगा और ऐसे ही गाजे-बाजे से (बाजते ढोले) उज्ज्वल धवल चादर मे लिपटे हुए हम परलोक गमन कर जाएँगे।

दादीजी का महाप्रस्थान

पितामह दादाजी के समान ही अधिसख्यक त्याग साम्यवाली दादीजी (दृढ़ धर्मिणी श्रीमती धापूदेवी) का त्याग-तपोमय जीवन भी विशेष उत्प्रेरक रहा है। उनके जीवन का उत्तरार्ध (मुनिश्री धर्मचदजी के जन्म के बाद का समय) सामायिक और त्याग में ही बीतता था। उनके प्रतिदिन 10-11 सामायिके तथा 20-21 घटो का खाद्य सयम सामान्यतया हो जाता था। तपस्या का अनवरत क्रम भी चलता रहता था। अति वृद्धावस्था के बावजूद भी एक माह में 6-7 उपवास साधारणत होते ही थे। विशेषत

वर्षों तक प्रतिवर्ष सावण भाद्रव में एकातर, बेले, तेले, चौले, पचोले करती रही। ऊपर में 17 की तपस्या उन्होंने की थी। पुत्र सतों की सेवा में जहाँ जाती, वहाँ के लोग उनके तपोमय जीवन से प्रभावित होकर उन्हें माता सम सम्मान प्रदान करते थे। बगोमुडा (उडीसा) चातुर्मास व्यवस्था समिति ने तो उनके विशिष्ट तपस्वी जीवन को देखकर अभिनदन पत्र द्वारा अभिनदन भी किया। उन्होने पालन-पोषण का जैसा स्नेह मुझे प्रदान किया, वैसा ही स्नेह ससार से विदा लेते समय भी दिया। मेरी व मेरी धर्मपत्नी की सेवा को सच्चे हृदय की सेवा का अलकरण प्रदान करती हुई चौविहार करना है, जल्दी करो, जल्दी करो- इस त्याग भावना की धुन में बोलती-बोलती ही मेरे कधे के सहारे बैठी-बैठी ही दादीजी महाप्रस्थान कर गई। वे धन्या व कृतपुण्या थी, जो सफल जीवन यात्रा को सपन्न कर भरे-पूरे सुखी परिवार को छोड चली। मुझे इस बात की अत्यत खुशी है कि मेरे पूज्य दादाजी व पूज्यनीया दादीजी मेरी तथा विशेषत मेरी धर्मपत्नी की सेवा से पूर्ण सतुष्ट थे।

श्री चुन्नीलालजी छाजेड़ के प्रति आचार्य प्रवर द्वारा फरमाए शब्द

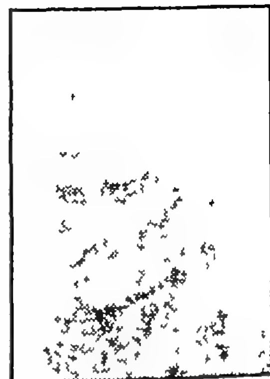
चुन्नीलालजी छाजेड, गगाशहर निवासी प्रकृति के भद्र तथा विनीत श्रावक थे। उनके रोम-रोम शासन के रग में रगे हुए थे। वे अवस्था में काफी वृद्ध थे। उन्होंने अपने तीन पुत्रों, एक पौत्र, दो पौत्रियों तथा एक पुत्र-वधू को धर्म-शासन में दीक्षित कर बहुत धर्म लाभ प्राप्त किया।

उनके ससार पक्षीय पुत्र मुनि मगन आदि आज भी शासन की सेवा कर रहे हैं।

अपनी श्रावक चर्या सम्पन्न कर वे दिवगत हो गए, उनकी सेवाएँ शासन में स्मरणीय रहेंगी।

-आचार्य तुलसी

आदर्श पुरुष : श्री जेसराजजी सुराणा



मीरा के पद्य 'ऊग्यो सो ही आथमे रे' के अनुरूप जो सूर्य ऊगता है वह अस्त भी होता है। जो फूल खिलता है वह कुम्हलाता भी है। सृष्टि के इस अविचल नियमानुसार जो जन्मता है, वह एक न एक दिन मरता ही है। परतु जो अपने जीवन मे कुछ श्रेष्ठ काम कर जाता है, वह मरकर भी अमर बन जाता है। मरण धर्मा शरीर के विनष्ट हो जाने पर भी, उसका यशोमय शरीर, जो उसके सद्व्यवहार, सत्य, न्याय, सतोष प्रधान प्रवृत्ति तथा सादगी से निर्मित होता है, मिटाए भी नहीं मिटता। ऐसे ही नरपुङ्गवों में से एक थे-गगाशहर (बीकानेर) निवासी दृढ़ प्रतिज्ञ सुश्रावक श्री जेसराज जी सुराणा।

हृदय की स्वच्छता, सरलता, उदारता, मिलनसारिता, गुणग्राहकता, सादगी, सतोष आदि कुछ ऐसे विरल विशिष्ट गुणों के वे धनी थे कि जिनके बल पर उनके निकट सपर्क में जो भी आया, वह उन्हें याद ही करता रहा। कह दें कि उनका ही बन गया।

वि स 2030 मे मुनि श्री मगनमलजी 'प्रमोद' का बगोमुडा (उडीसा) में चातुर्मास था। वहाँ उन्होंने करीब डेढ मास तक सेवा की थी। मैं भी कुछ दिन सेवा में साथ रहा था। उस अवधि में उनके उपरोक्त गुणों से प्रभावित होकर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री तेजुरामजी जैन ने समिति की ओर से विदा देते हुए उनके गुण कीर्तन से परिपूर्ण एक अभिनदन पत्र समर्पित किया था। श्री खजाचीलाल जी जैन (जिनके मकान मे ठहरे थे) की ओर से उनके परिवार की बहनो द्वारा आरती उतारकर उन्हें भावभीनी विदाई दी गई थी, जो ससार से अतिम विदाई से पूर्व शालीन विदाई थी। यह सच था कि उन्होंने अपने जीवन में जो भी किया, नि स्वार्थ भाव से किया। परतु गुणग्राहक मनस्वियों ने सदा उन्हे सम्मान दिया। जहाँ वे गए, वहाँ के सज्जनों ने उनके व्यवहार को सराहा, उनकी दयालुवृत्ति का उत्कीर्तन किया। प्रस्तुत है उनके त्याग प्रधान जीवन की एक झलक तथा कतिपय प्रेरक घटनाएँ -

श्री सुराणाजी का जन्म वि स 1961 कार्तिक शुक्ला पचमी (ज्ञान पचमी) के दिन

हुआ था। स 1971 को देववद्य महाश्रमण श्री पृथ्वीराजजी स्वामी के पास उन्होंने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण की। उनका विवाह श्री चुन्नीलालजी छाजेड की सुपुत्री पानीबाई के साथ सपन्न हुआ। स 1987 मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी को लूणकरणसर (राजस्थान) में परम पूज्य प्रात स्मरणीय तेरापथ के अष्टमाचार्य श्री कालू गणी के दर्शन करके निम्न नियम ग्रहण किये- प्रतिदिन नवकारसी, अष्टमी-चतुर्दशी को पोरसी, गगाशहर में तेरापथी साधु-साध्वियाँ विराजित हों तो दर्शन किये बिना भोजन न करने का, जुआ, रेस, घुडदौड में रुपया लगाने व खेलने का, ताश-चोपड, शतरज खेलने का, पॉच तिथि को हरी सब्जी व रात्रि भोजन का, होली पर पानी, रग या गदे पदार्थ डालने का, गाजा, भाग, मद्य, शराब (दवाई का आगार), तबाकू खाने-पीने-सूघने व दॉत पर घिसने का, तालाब, नदी-बावडी आदि में नहाने का, चवदह हरी सब्जी से अधिक खाने का, हाथ से बदूक, पिस्तौल, कटारी, कार, लॉरी, ट्रक, रेलगाडी, कुऑ चलाने का, पतग उडाने का, प्लेन पर चढ़ने का, कुसटे (पाट) सण में पानी मिलाकर गॉठ बॉधकर बेचने का, थियेटर, बाईस्कोप, सर्कस मास में एक दिन से अधिक देखने का, जमीकद (आलू, प्याज, गाजर आदि हाथ से लाकर देने तथा छेदन-भेदन का), घर मरम्मत में तीन सौ रुपयों से अधिक एक साल में लगाने का, 72 साल की उम्र हो जाने के पश्चात ग्यारह द्रव्यों से अधिक खाने का, परस्त्री, वैश्यागमन का, ऊपर से नमक लेने का, नित्य 30 सेर से अधिक पानी पीने व स्नान के काम में लेने आदि का यावज्जीवन त्याग किया। सवत् 2010 में नियम लिया कि जिस वर्ष मे दस हजार का नेट मुनाफा हो जाएगा, उसके बाद काम-धधा नहीं करूँगा। स 2018 से सपत्नीक पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी से स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त और भी अनेक विध नियम थे। सैकडों उपवासों से लेकर आठ-अठाई तक की तपस्याएँ तथा 70 अष्ट प्रहरी पौषध व सैकडों चार प्रहरी पौषध भी किये। उनकी कुछ जीवन-घटनाएँ प्रस्तुत हैं-

तैरना न आता तो डूब जाते - स 1977 भाद्रव शुक्ला द्वादशी की बात है। उन दिनों वे सोलगे में रहते थे। सोलगे से गोटिया-पूजा की हाट करने नौका में जा रहे थे। बहुत बडी नदी में अथाह पानी था। सयोग से नदी में नौका डूब गई। एक बगाली की मिठाई की दुकान का पूरा सामान, 10 पीपा मिठाई सहित इनकी कपडे की दो बडी ढोपें (गॉठें) डूब गईं, जो नदी की तेज धारा में बहकर करीब दो मील दूर चली गई। 125 रुपए की नकदी व रेजगारी की पोटली भी साथ में डूब गई। जेसराज जी व उक्त बगाली भाई तैरकर करीब दो फर्लांग की दूरी पर अवस्थित पाट के खेत में निकल गए और

सौभाग्य से कपडे की गॉठे भी मिल गई। देखिये, नदी मे तैरना भी यदि नहीं आता तो (डूबना) मरना पडता तो भवसागर से तैरना नहीं आने वालो की गति क्या हो सकती है? चितनीय विषय है।

हिम्मत व सूझबूझ ने प्राण बचाए .- स 1999 का माघ-फाल्गुन मास जब हिन्दुस्तान-पाकिस्तान होने में था। उस समय जेसराजजी घर को बेचकर सोलगे से किराये के घोडे पर बैठकर सिराजगज जा रहे थे। 5500 रुपए के नोट कमर में बॅधे हुए थे। हाटी कमली की नदी पार करके वे जगल मे खेतो के बीच से जा रहे थे, कोई गॉव नहीं था।

बाई तरफ पाचलिया गॉव मात्र था। घोडा चलाने वाला वहीं का होने से कहने लगा- खाना खाकर अभी आता हूँ। आप धीरे-धीरे घोडे को चलाइये। उसने जाकर अपने सबधियो से कहा- अकेला बनिया माल लेकर जा रहा है। यह सुनकर वे छीना-झपटी परस्त लोग पीछे से दौडते-भागते आए और कहने लगे- हम तो भूखे मर रहे हैं और तुम रुपए लेकर अपने देश जा रहे हो। ऐसा कदापि नहीं होगा। हम हरगिज नहीं जाने देंगे। रुपए दो, वरना लाठी से अभी मार देंगे। उस समय सुराणाजी ने देव-गुरु का ध्यान करके हिम्मत व सूझबूझ से काम लिया एव अपने आपको मरणातिक सकट से उबार लिया। हुआ यह कि जेब में चार-पॉच चॉदी के रुपए थे, उनको उन्होंने अलग-अलग दिशाओं मे दूर-दूर फेंक दिया। लुटेरे उन्हे लेने के लिए झपटे कि इधर सिराजगज से तीन सोनार साइकल पर आ गए। उन्हे देखते ही लुटेरे जगल में भाग गए। वे सोनार अपनी सज्जन प्रकृति के कारण एक कोस पर अवस्थित सिराजगज तक पहुॅचाने के लिए साथ आए। इस तरह वे निरापद गतव्य स्थल तक पहुॅच गए। इतने मे घोडे वाला भी आ गया। देव-गुरु के ध्यान व पूर्व सचित पुण्य से उत्पन्न सूझबूझ तथा उससे सप्राप्त सज्जन लोगों की सहयोग भावना समय पर आदमी को इसी तरह बचा लेती है। सच कहा है-

'छुपा दस्ते हिम्मत से (हाथ की हिम्मत) जोरे कजा है।
मशहूर मस्ल है हिम्मत के हामी खुदा है।।'

पिस्तौल वाला वावू कोय? :- देव-गुरु-धर्म की अगाध श्रद्धा भरी शरण कभी-कभी विचित्र घटनाओं को जन्म दे देती है। लीजिये, एक सच्ची घटना जो मेरे निकटतम सबधी फूसाजी के ही जीवन मे सबधित है। प्रस्तुत है- जैन धर्म ओर युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी के प्रति गगाशहर निवासी श्री जेमराजजी सुराणा की अगाध श्रद्धा थी। उनके नाम की शरण लेकर, उन्होंने अपने जीवन में एक अत्यत साहस भरा अद्भुत काम कर

दिखाया था। वि स 2006 आषाढ कृष्णा दूज की रात को 8 बजकर 30 मिनट की घटना है। उन दिनों में वे भरत बाबू (आसामी) सचियालालजी सुराणा तथा पूनमचद जी दूगड के साथ चार-चार आने की भागीदारी में गोहाटी (आसाम) में कपडे का व्यापार करते थे। लाखों रुपए का व्यापार होता था। उस दिन उन्होंने रायबहादुर महासिह-मेघराज की मार्फत करीमगज के चार व्यापारियों को लगभग 20-25 हजार रुपयों का कपडा बेचा। इधर वे कपडा लिखवा रहे थे। उधर उसी समय आधा घटे तक मूसलाधार पानी पडता रहा। जब कुछ पानी कम हुआ तब वे व्यापारी चले गए। वे प्रतिदिन दरवाजा बद करके रुपए गिनते थे परतु उस दिन सयोग से दुकान के दरवाजे खुले रह गए। उस दिन की बिक्री के आठ हजार रुपए गल्ले में थे। नित्य 8-10 हजार रुपयों की बिक्री आती थी। इधर तीन दिन से बैंक बद था। इसलिए आलमारी में चालीस हजार रुपयों के नोट पडे थे। गल्ले में बिखरे हुए नोटों के एक-एक हजार के कुछ बडल बनाए जा चुके थे। कुछ बनाए जा रहे थे, इतने में अचानक ढाका के चार बगाली डाकू आ गए। उनमें से दो तो बाहर रहे और दो भीतर आए। उनके मुँह पर कपडा बँधा हुआ था। अदर आने वाले डाकू जसोदालाल चौधरी के पास दस गोलियों की अमेरिकन पिस्तौल थी, जो कहीं से चुराकर लाई गई थी। तीन गोलियाँ चलाई जा चुकी थीं, अत उसमें अब शेष सात गोलियाँ रह गई थीं। उसने पिस्तौल दिखाते हुए कहा- देख लीजिये।

इधर उसका दूसरा साथी झपटकर दो हजार के दो बडल लेकर भाग खडा हुआ परतु दरवाजे पर बैठे हुए गिरधारीलाल रसोइये ने झपटकर एक बडल तो छीन लिया, तथापि वह दूसरे बडल को लेकर भागने में सफल हो गया। दुर्भाग्य से महासिह- मेघराज के गोले (दुकान) के आगे पहरेदार खडा था। उसकी दकाल पर वह उस बडल को भी वहीं डाल गया परतु सुराणाजी को वे नोट नहीं मिले।

पिस्तौल के सामने करते ही जेसराज जी 'तुलसी गणी रो शरणो है' कहकर उठे और पीठ की तरफ से डाकू के हाथ व अगूठे को मजबूती से पकडकर इस तरह ऊँचा कर दिया कि वह पिस्तौल के घोडे को किसी भी हालत में दबा न सका। उस समय न जाने इतना बल सुराणाजी के उस दुबले-पतले शरीर में कहाँ से आ गया। गाँधीजी ने उचित ही कहा था- बल तो निर्भयता में है, शरीर का मास बढ़ जाने में नहीं।

सुराणाजी को घसीटकर डाकू बाहर ले जाने लगा कि इधर गिरधारीलाल ने भी दौडकर डाकू की कमर को मजबूती से पकड लिया। उस समय दुकान में चार आदमी और भी थे। जिनमें से तीन तो रोने लगे। और एक जो सामायिक कर रहा था, कपडे की

ओट मे लबा सो गया। इधर ये डाकू को छोड नहीं रहे थे, उधर डाकू छूटकर भागने की कोशिश मे था। आखिर वह बहुत जोर से खींचते हुए इन्हें दुकान के बाहर तक ले गया। इस कशमकश में सडक के पास बहते हुए पानी के नाले में डाकू को पटककर सुराणाजी डाकू की छाती पर बैठ गए और जोर-जोर से आवाज देने लगे। उनकी आवाज पर आनन-फानन मे करीब तीन सौ लोग जमा हो गए और पुलिस के दो आदमी भी घटनास्थल पर पहुँच गए। वे कहने लगे- सेठजी, छोड दो, हाथ छोड दो। परतु वे छोड ही नहीं रहे थे। आखिर डोरी को काटकर और सुराणाजी के हाथ को छुडाकर पुलिस ने पिस्तौल को पकड लिया।

दूसरे पुलिस मेन ने डाकू को खींचकर बाहर निकाला और खूब मारा परतु कोकीन खाया हुआ होने से वह उस मार को सह गया। पुलिस जवान ने फोन किया तो तत्क्षण पान बाजार थाने से 25-30 पुलिस जवान तथा अफसर, डी.एस पी. तथा एस.पी , थानेदार आदि आ गए और उसी समय गाडी में बिठाकर डाकू को थाने ले गए। बिजली के चाबुक से भारी मार देने पर डाकू ने कहा, 'हम चार आदमी थे।' डाकू द्वारा प्रदत्त जानकारी के आधार पर पुलिस ने रात को तीन बजे जीप गाडी लेकर 6 मील दूरस्थ पलासबाडी को घेर लिया तथा बचे हुए तीन डाकुओं को भी हथकडी डालकर गिरफ्तार कर लिया व हवालात में दे दिया। उन पर मामला चलाया गया।

सुराणाजी को भी थाने मे ले गए। कुर्सी पर बिठाकर बा-अदब पूछने लगे- डाकू कैसे घुसे? तुम क्या करते थे? किस स्थिति में बैठे थे? आदि-आदि। थानेदार के प्रश्नों की छाया में सुराणाजी ने सारी सत्य घटना बता दी। जबान बदी लेते हुए रात की एक बज गई तब कहीं जाकर घर पहुँचाया गया। सुराणाजी का दाहिना हाथ इतना सूज गया था कि सात दिन तक मालिश करने पर भारी मुश्किल से वह ठीक हुआ। अदालत में जज के पूछने पर सुराणाजी ने सत्य-सत्य कह दिया कि इन चारों में से दो को मैं नहीं पहचानता हूँ क्योकि ये भीतर आए ही नहीं थे। शेष दो को मैं पहचानता हूँ। फलत दो डाकू बरी हो गए। और दो को छब्बीस-छब्बीस महीनों का कठोर कारावास और हजार-हजार रुपयों का जुर्माना हुआ।

सुराणाजी के घर पर तीन महीनों तक पुलिस थानेदार व अन्य लोग आते रहे और तरह-तरह की बातें पूछते रहे। उनको खिलाने, चाय-पान सिगरेट से स्वागत करने में करीब दो सौ रुपयों का और खर्च हुआ। दर्शकों की दिन भर भीड लगी रहती। लोग पूछते रहते कि पिस्तौल वाला बाबू कोय? देखिबो? (पिस्तौल वाला बाबू कौन है? देखना है।)

छ माह के बाद कचहरी में बुलाकर हाकिम ने अग्रेजी में निम्न प्रश्न पूछे, जिनके उत्तर दुभाषिये भरत बाबू के माध्यम से सुराणाजी ने इस प्रकार दिये।

हाकिम तुमको भय नहीं लगा? तुम तो बहुत दुबले-पतले आदमी हो।

सुराणाजी मरण स्वीकार कर डाकू को पकडा था फिर भय किसका? मृत्यु से बढ़कर क्या कोई ससार में भय है?

हाकिम . तुमने बहुत बहादुरी दिखाई है। इसलिए सरकार तुम पर बहुत खुश है।

सुराणाजी बहादुरी कुछ नहीं। यह सब सद्गुरुदेव की शरण का ही चमत्कार है।

हाकिम पिस्तौल चला सकते हो?

सुराणाजी चलाने का नियम है, क्योंकि मैं एक जैन श्रावक हूँ।

हाकिम शिलोंग से राज्यपाल का ऑर्डर आया है कि यह पिस्तौल तुम्हें इनाम में दे दी जाए। अत तुम्हें यह पिस्तौल सरकार की ओर से प्रदान की जाती है। इसे ऑल इडिया में जहाँ जाना हो, वहाँ अपने साथ रखना होगा।

सुराणाजी · मुझे पिस्तौल का क्या करना है? दस सेर वजन को व्यर्थ में ही कौन ढोता रहेगा। कहकर उन्होंने सहर्ष सादर उस पिस्तौल को पुन लौटा दिया। फलत वह पिस्तौल सरकार के पास ही रही। सुराणाजी के अदम्य साहस और अपूर्व त्याग भाव की भूरि-भूरि प्रशसा की गई।

आदर्श नियम पालक - गौहाटी में उनका बहुत बडा धधा चल रहा था। चल ही नहीं रहा था अपितु वह पूरे यौवन पर था। कितु अपनी पूर्व स्वीकृत किवा निर्धारित परिग्रह की सीमा का ध्यान रखकर आदर्श के धनी तरुण त्यागी श्री सुराणाजी ने अत्यत नि स्पृह भाव से उस तरुण धधे को ठोकर मार दी और परम सतोष धारण कर लिया। लोभ के सामने बडों-बडों को घुटने टेकते तथा गली निकालते देखा है। परतु प्रणवीर ने अपने मन को इतना मजबूत बना लिया कि कभी उसे मलिन होने नहीं दिया। कभी नाक पर मक्खी नहीं बैठने दी। इतना ही नहीं, उनके उत्कृष्ट त्याग व बेमिसाल ईमानदारी का एक चमकता हुआ सितारानुमा नमूना देखिये। दुकान उठा देने पर सरकार की ओर से बकाया टैक्स की रकम पटाने की न कोई माँग थी और न कोई नोटिस ही था। ऐसी स्थिति में अगर वे टैक्स न पटाकर देश आते तो जसकरण जैन (दुकान इसी नाम से थी) का आसाम सरकार कहाँ पता लगाती? परतु आदर्श के धनी को यह बिल्कुल भी मजूर नहीं था। इसलिए वे स्वय आगे होकर तीन बार शिलाग जाकर प्रेरणा करते रहे। परतु ध्यान देता तो कौन देता।

अत मे काफी पीछे पडकर जब उन्होंने आना-पाई ममेत टेक्स पटाया, तब ही जाकर उन्हें सतोष हुआ। इस प्रकार बिल्कुल हल्के फूल व निश्चित होकर ही वे अपने निवास स्थल गगाशहर (राजस्थान) आए। उन्होंने अपनी सीमित पूँजी का भी अपने पूर्वगृहीत नियमानुसार बारह आना से ज्यादा कभी ब्याज नहीं लिया जबकि जेवर गिरवी रखकर दो-दो रुपए सैकडे के हिसाब से ब्याज देकर रकम लेने वाले बहुत मिलते थे। सातवें आसमान को छूने वाली इस प्राणलेवा महँगाई के जमाने में भी उन्होंने अपने सकल्प को खडित नहीं होने दिया। साथ ही खर्चीला उदार स्वभाव होने से खर्च तथा जान-पहचान वालों के सत्कार-सम्मान मे कभी भी कमी नहीं आने दी। व्यापार छोडने के बाद जीवन के अतिम 20 वर्षों का समय उन्होने युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी, मुनिश्री मगनमलजी 'प्रमोद' (ससार पक्षीय साले) तथा अन्य चरित्रात्माओं की सेवा में ही बिताया और अणुव्रत नियमों का पालन करते हुए जीवन सफल बनाया।

पूजनीया बुआजी, श्रीमती पानीबाई सुराणा ने भी फूफाजी के पदचिह्नों पर चलते हुए जीवन को सफल बनाया। अतिम वर्षो में फूफाजी को दमा की शिकायत रहने लगी थी। पर मुनिश्री प्रमोदजी की सेवा मे आने के उत्साह से और आने पर उनका स्वास्थ्य प्राय ठीक रहता। हरणिया व आँख के ऑपरेशन होने के बावजूद वे पूर्णत स्वावलबी थे। किसी के भी किसी प्रकार से भी पराधीन नहीं थे। अत में अचानक पेशाब की तकलीफ होने से बीकानेर अस्पताल मे सफल ऑपरेशन हो जाने के बावजूद लगभग 70 वर्ष की उम्र में स 2031 आषाढ़ वदी चवदस बुधवार को इस नश्वर शरीर को त्याग कर वे परलोक गमन कर गए। बुधवार का दिन उनका प्राय णमोकार मत्र के ध्यान मे ही बीता। पारिवारिक जन दस-पाँच मिनट के त्याग प्रत्याख्यान भी कराते रहे। अब उनकी वह पार्थिव देह हमारे बीच नहीं है। परतु उनका वह यशोमय शरीर कभी आँखो से ओझल भी नहीं हो सकता। हसमनस्वी सुधी गुणीजन उनके इस पवित्र जीवन से सदा प्रेरणा लेते रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

*झँवरलाल छाजेड